हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

सितम्बर 2002 वर्ष 1 अंक 7

सम्पादक :

डा० हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक :

मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी

मु० हसन अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :

मासिक सच्चा राही!

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो० बॉ० नं० 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 787250

फैक्स : 787310

e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

एक प्रति	रु० 9/-
वार्षिक	रु० 100/-
विशेष वार्षिक	रु० 500/-
विदेशो में (वार्षिक)	25 US डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

अम्नो सलामती की जगह

अगर इन्सान को कहीं अम्नो सलामती की हवा मिल सकती है, अगर उसका ख़्वाब कहीं शरमिन्द–ए–तअ़बीर हो सकता है तो वह सिर्फ़ इस्लाम के दामने रहमत में, वरना तमाम मौहूम तरक़्क़ीयात के बावजूद "तुम लोग आग के दहाने पर खड़े थे" और आज भी खड़े हो "अल्लाह ने उस वक़्त–इस्लाम के ज़रीअ़े– उस आग से तुम को महफ़ूज़ रखा था और बचा लिया था "आज भी इस अज़ाबे दुन्या और अ़ज़ाबे आख़िरत से बचने का रास्ता सिर्फ़ यही है कि रहमते आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के दिखाए हुए रास्ते पर अर्थात रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के उसवे पर इन्सान वापस आ जाए।

(मौलाना अ़ब्दुल्ला अ़ब्बास नदवी)

☆ ☆ ☆

विषय एक नज़र में

❖	पहले कौन ?	– सम्पादकीय	3
❖	कुर्आन की शिक्षा	– *मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी*	5
❖	प्यारे नबी की प्यारी बातें	– *मौलाना अब्दुल ह़यी ह़सनी*	6
❖	इन्सानियत का सच्चा दर्द	– *मौलाना अ़ली मियां*	8
❖	काम्याब अध्यापक	– *मुहम्मद ह़सन अंसारी*	9
❖	सपने भरी दुन्या में	– *डा० सूरज मृदल*	9
❖	समय मूल्यवान है	– *मौलाना अ़ब्दुल माजिद*	10
❖	औ़रतों ने क्या खोया क्या पाया ?	– *डा० जस्टिस मुहम्मद तक़ी उस्मानी*	11
❖	इस्लामी इतिहास के आदर्श कारनामें	– *डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी*	17
❖	नवीन प्रकाशन	– *इदारा*	19
❖	वह नवजवान जो अन्तिम सन्देष्टा बना	– *ह़बीबुल्लाह आज़मी*	20
❖	स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका	– *प्रो० शान्तिमय राय*	22
❖	आप की समस्याएं और उनका हल	– *मौलाना सरवर फ़ारुक़ी नदवी*	25
❖	जिन क्या है ?	– *अबू मर्ग़ूब*	27
❖	पूरा पूरा इंसाफ़	– *शकील अहमद*	28
❖	डायबिटीज़ एवं हृदय रोग	– *वैद्य वी०एस० पाण्डेय*	31
❖	हज़रत अबू बक्र	– *अबू अ़ब्दुल्लाह*	33
❖	संविधान के दायरे में रहकर क़ौम व देश की तरक़्क़ी के लिए कार्य करें	– *मौलाना मुहम्मद राबे नदवी*	34
❖	मूसा अ़लैहिस्सलाम अपनी माँ की गोद में	– *स० अह़मद अली नदवी*	35
❖	क्यों बीमार है आप का कम्प्यूटर	– *शहजहां अख़्तर*	37
❖	वह हैं नबियों के सरदार	– *क़मर राम नगरी*	39
❖	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	– *मुईद अशरफ़ नदवी*	40

❑❑❑

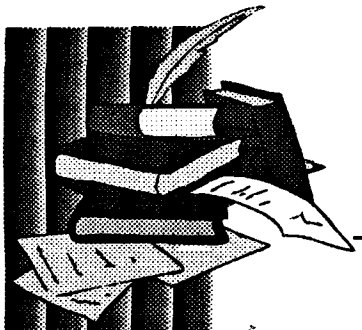

पहले कौन ?

डॉ० हारून रशीद सिद्दीकी

खूब याद है जब मैं कक्षा दो में पढ़ता था, यह प्रेप्रेट्री स्कूल (Preparatory School) कहलाता था। ब्रिटिशकाल में यह परिभाषा, कक्षा दो तक पढ़ाई वाले स्कूल के लिए थी, जिसमें इन्फेन्ट क्लास भी सम्मिलित होता था। आम तौर से प्रेप्रेट्री स्कूल में एक ही टीचर हुआ करता था और तीनों क्लासों पर भरपूर कन्ट्रोल रखता था, न विषयों की भरमार थी, न पुस्तकों का भार परन्तु कक्षा दो पास विद्यार्थी सरलता से चिट्ठी लिख लेता था और हज़ारों का हिसाब लगा लेता। सामान्यता ब्रह्मण टीचर, पण्डित जी, गैर ब्राह्मण हिन्दू टीचर मुंशी जी और मुसलमान टीचर मौलवी साहिब कहलाते थे।

एक दिन मैं काम छोड़कर गुमसुम बैठा हुआ था। पंडित जी की निगाह मुझ पर पड़ी, मुझे बुलाया और सुवाल किया क्या सोच रहे थे? मैंने तुरंत गंभीरतापूर्वक जवाब दिया, मैं सोच रहा था कि धरती के नीचे क्या है ? उसके नीचे क्या है? इस का अंत कहाँ है? आकाश के ऊपर क्या है ? उसके ऊपर क्या है? उसका अन्त कहां है ? पण्डित जी ने मेरे सिर पर हाथ रख दिया और कहने लगे, ना बच्चा! इस प्रकार ना सोचा करो नहीं पागल हो जाओगे। पंडित जी की बात में वास्तविकता थी, आज भी मैं जब कभी इस प्रकार से सोचने लगता हूँ तो मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है और तुरंत ध्यान किसी दूसरी ओर ले जाता हूं। मैं बराबर पढ़ता और बढ़ता रहा यहां तक कि मिडिल क्लास (Middle Class) में पहुंच गया उस समय मिडिल सातवीं कक्षा को कहते थे और मिडिल पास टीचर हो जाया करता था फिर अध्यापन काल ही में प्रशिक्षण का अवसर भी मिल जाता। एक दिन मैं क्लास में फिर गुमसुम बैठा हुआ था कि एक सहपाठी ने पीछे से चपत लगाते हुए पूछा "क्या प्लानिंग हो रही है ? मुझे नहीं बताते ? छोड़ो यार मैं बहुत बुरे फंसा हुआ हूं। मैंने उत्तर दिया। अरे फंसे हुए को निकालना मेरा काम है! उसने मज़ाक करते हुए कहा। मैने कहा तुम को तो हर समय मज़ाक ही की सूझती रहती है। मैं यह सोच रहा हूँ कि अण्डा तो मुर्गी से पैदा होता है, और फिर अन्डे से मुर्गी निकलती है, समझ में नहीं आता कि पहली मुर्गी या पहला अन्डा कैसे बना ! इसी प्रकार बहुत सी चीज़ों के बारे में सोचता हूं परन्तु इसको हल नहीं कर पाता हूँ बस इसी में फँसा हूँ। मज़ाक मत करो, निकालो मुझे इस जाल से अगर निकाल सकते हो। मेरा दोस्त गंभीर हो गया और थोड़ी देर मौन रहा, फिर हम दोनों हेड मास्टर के पास गये और अपने मन में आये हुये ख़यालात और अपनी समस्या उनके सामने रखी। वह एक धर्मी व्यक्ति और योग्य टीचर तथा कुशल हेड मास्टर थे। वह पहले मुस्कुराए, फिर गंभीर हो गये और फिर बोले– सुनो ! इस सृष्टि के रचियता ने हर वस्तु बहुत अच्छी भांति बनाई है, उसने हर जीव, हर पौधे को पहली बार कैसे बनाया यह वही जानता है। पवित्र कुर्आन में उसने हमको कुछ चीज़ों के पैदा करने के विषय में बताया है। कुर्आन और हदीस के अध्ययन से हमको पता मिलता है कि उसने हर वस्तु को अपने आदेश से पैदा किया, मनुष्य में सर्वप्रथम आदि मनुष्य पितामः आदम को मिट्टी से बनाया फिर अपने आदेश से उसमें जान पैदा कर दी, फिर आदम के शरीर से हव्वा को बनाकर उनकी पत्नी बना दिया, उसके पश्चात उन दोनों के मिलाप से उनकी संतान की पैदाइश का सिलसिला चला दिया। मेरे बेटों यह बात सोच कर भी आदमी गुमसुम हो जायेगा कि अगर अल्लाह इन्सानों को पहली ही विधि से पैदा करता रहता तो क्या होता। इसी प्रकार हर चीज़ की पैदाइश के बारे में सोच लो, पैदा करने वाले ने हमको यह नहीं बताया कि पहले उसने मुर्गी

बनाई कि अन्डा, बकरी बनाई कि बकरा, गाय बनाई कि बैल, बीज बनाया कि पौधा, नर–मादा एक साथ बनाये कि पहले एक, जो वस्तु जैसे भी बनाई अब हम उनकी संतान तथा नस्ल के बढ़ने की विधि अपनी आँखों देख रहे हैं। यह बात स्पष्ट है कि सृष्टि की पैदाइश की प्रथम विधि अब समाप्त हो चुकी है।

मेरे बेटो चाहे वह डारविन हो या कोई और किसी के दृष्टिकोणों से वास्तविकता नहीं बदल सकती, हज़ारों वर्ष का इतिहास साक्षी है कि जीवों के पैदा होने और बनने में डारविन या किसी भी नास्तिक का दृष्टकोण तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकता। एक नियम प्रचालित है।

एक टीचर साहिब प्राइमरी क्लास में समझा रहे थे; एक प्रकार के बन्दरों की मानसिक उन्नति हुई तो वह मानव बन गये, हम सब उन्हीं वानरों की संतान हैं।

एक बच्चे ने प्रश्न किया, सर क्या यह वर्तमानकाल के बन्दर भविष्य में इंसान बन जाएंगे ? दूसरा बोला, सर फिर! हमारी दुम क्या हुई ?

उत्तर मिला, एक लम्बे काल में जब दुम घिस गयी तो सन्तान भी बिन दुम की हो गयी, तीसरे ने कहा, सर! हमारे पापा ने एक बन्दर और बन्दरिया पाली, बन्दर की दुम काट दी, दो वर्ष पश्चात बन्दरिया ने बच्चा जना तो उसके दुम थी।

मास्टर जी बोले अच्छा इसको कल समझना। परन्तु मास्टर जी ने फिर इस विषय पर बात न की।

□□□

औरंगज़ेब के समय की दो घटनाएं

प्रो० बी०एन० पाण्डेय ने लिखा है कि– जब औरंगज़ेब बंगाल जाते हुए बनारस के पास से गुज़र रहा था, तो उसके क़ाफ़िले में शामिल हिन्दू राजाओं ने बादशाह से निवेदन किया कि वहां क़ाफ़िला एक दिन ठहर जाए तो उनकी रानियां बनारस जा कर गंगा नदी में स्नान कर लेंगी और विश्वनाथ जी के मन्दिर में श्रृद्धा–सुमन भी अर्पित कर आएँगी। औरंगज़ेब ने तुरंत ही यह निवेदन स्वीकार कर लिया और क़ाफ़िले के पड़ाव से बनारस तक पांच मील के रास्ते पर फ़ौजी पहरा बैठा दिया। रानियां पालकियों में सवार होकर गईं और स्नान एवं पूजा के बाद वापस आ गईं, परन्तु एक रानी (कच्छ की महारानी) वापस नहीं आई, तो उनकी बड़ी तलाश हुई लेकिन पता नहीं चल सका। जब औरंगज़ेब को मालूम हुआ तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने अपने फ़ौज के बड़े–बड़े अफ़सरों को तलाश के लिए भेजा। आख़िर में इन अफ़सरों ने देखा कि गणेश की पूर्ति जो दीवार पर जड़ी हुई है, हिलती है। उन्होंने मूर्ति हटवा कर देखा तो तहख़ाने की सीढ़ी मिली और गुमशुदा रानी उसी में पड़ी रो रही थी। उसकी इज़्ज़त भी लूटी गयी थी और उसके आभूषण भी छीन लिए गए थे। यह तहख़ाना विश्वनाथ जी की मूर्ति के ठीक नीचे था। राजाओं ने इस हरक़त पर अपनी नाराज़गी जताई और विरोध प्रकट किया। चूंकि यह बहुत घिनौना अपराध था, इसलिए उन्होंने कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की। उनकी मांग पर औरंगज़ेब ने आदेश दिया कि चूंकि पवित्र–स्थल को अपवित्र किया जा चुका है। अतः विश्वनाथ जी की मूर्ति को कहीं और ले जा कर स्थापित कर दिया जाए और मंदिर को गिरा कर ज़मीन को बराबर कर दिया जाय और महंत को गिरफ़्तार कर लिया जाय।

गोलकुण्डा के राजा जो तानाशाह के नाम से प्रसिद्ध थे, रियासत की मालगुज़ारी वसूले करने के बाद दिल्ली का हिस्सा नहीं भेजते थे। कुछ ही वर्षों में यह रक़म करोड़ों की हो गई। तानाशाह ने यह ख़ज़ाना एक जगह ज़मीन में गाड़ कर उस पर मस्जिद बनवा दी। औरंगज़ेब को जब इसका पता चला तो उसने आदेश दे दिया कि यह मस्जिद गिरा दी जाए। अतः गड़ा हुआ ख़ज़ाना निकाल कर उसे जन–कल्याण के कामों में खर्च किया गया। यह दोनों घटनाएं यह सिद्ध करने के लिए काफ़ी हैं कि औरंगज़ेब न्याय के मामले में मंदिर और मस्जिद में कोई फ़र्क़ नहीं करता था।

क़ुर्आन की शिक्षा

– मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी(रह०)

जिहादः

"व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्क़ जिहादिही" (हज्जः 78) (और मेहनत करो अल्लाह के बारे में पूरी मेहनत)

जिहाद मेहनत और कोशिश करने को कहते हैं। अल्लाह की राह में जो भी मेहनत और कोशिश की जाए वह जिहाद है। हर इंसान अपने बलानुसार अल्लाह की राह में जिहाद कर सकता है। मिसाल के तौर पर समझना चाहिए कि : –

1. हम अपने दिल पर जब्र करके अल्लाह के हुक्म पूरे करते है, नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं, अल्लाह का दीन जानने के लिए मेहनत करते हैं, सफ़र करते हैं, रातों को जागते हैं यह हमारे दीन का जिहाद हुआ।
2. हम अल्लाह की खुशी हासिल करने के लिए धन खर्च करते हैं। यतीमों (अनाथों), बेवाओं (विधवाओं) निर्धनों और पीड़ितों की सहायता करते हैं, क़ौमी तथा धार्मिक कार्यों में चन्दा देते हैं यह हमारे माल का जिहाद हुआ।
3. हम अल्लाह के हुक्मों (आदेशों) पर चलने के साथ दूसरों को भी अल्लाह के हुक्मों पर चलने का अनुरोध करते हैं, उपदेश देते हैं, नसीहत करते हैं, ज़बान तथा क़लम से अच्छाईयों का हुक्म करते हैं, बुराई से रोकते हैं यह हमारे इल्म का जिहाद हुआ।
4. यदि अवसर आ जाए तो अल्लाह के नाम पर अपने दीन की रक्षा में हम अपनी जान भी देते है। यह जान का जिहाद हुआ। इन ही चीज़ों का नाम जिहाद है, हर मुसलमान को अपने इम्कान (सम्भावना) भर अच्छे कार्यों में भाग लेना चाहिए। एक सहाबी यमन से चलकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत (सेवा) में इस उद्देश्य से उपस्थित हुए कि किसी लड़ाई के जिहाद में सम्मिलित हों। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि क्या तुम्हारे माँ–बाप हैं ? उन्होंने उत्तर दिया कि जी हाँ। फ़रमाया कि तुम उनकी सेवा करके जिहाद करो।

(मुस्लिम 6504)

इससे ज्ञात हुआ कि माँ–बाप की ख़िदमत (सेवा) भी जिहाद है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी अत्याचारी शक्ति के समक्ष न्याय की बात कहना बड़ा जिहाद है।

(बुख़ारी 4012)

फ़रमाया मुजाहिद (जिहाद करने वाला) वह है जो अपने नफ़्स अर्थात अपनी बुरी चाहतों से जिहाद करे।

लड़ाई का जिहाद :

कुछ लोग कुफ़्र, काफिर और जिहाद का ग़लत अर्थ लेकर स्वयं भ्रम में पड़े तथा दूसरों को भ्रम में डालकर इस्लाम को बदनाम करने की चेष्ठ की है, अतः हम पहले इन तीनों शब्दों का अर्थ बयान करेंगे फिर उक्त शीर्षक की क़ुर्आनिक व्याख्या लाएंगे। **(अनुवादक)**

यह बात सभी जानते हैं कि कुफ़्र, काफ़िर और जिहाद अरबी के शब्द हैं। अरबी शब्दकोष में इनके अर्थ इस प्रकार हैं–

कुफ़्र :

अ़रबी शब्दकोष में जिस संज्ञा को अर्थ बताने के लिए लिखते हैं, उससे पहले "अल" लगाते हैं।

अलकुफ़्र व अलकुफ़्रान :

ईमान का विलोम, अलकुफ़्रान : नाशुक्री (कृतधनता), अलकुफ़्र : फ़ारसियों का अपने बादशाह (राजा) का सम्मान करना।

अलकाफ़िर :

अल्लाह तआ़ला की निअ़मतों (पुरस्कारों) का इन्कार करने वाला। यह अर्थ कफ़र क्रिया से बनाये गये कर्ता के हुए। अलकाफिर के और भी बहुत से अर्थ लिखे हैं जिनके वर्णन की यहां आवश्यकता नहीं है।

अलजिहाद :

अल जिहाद का अर्थ ऊपर बयान हो चुका है रही बात लड़ाई के जिहाद की तो इसकी आवश्यक व्याख्या मौलाना उवैस साहिब के क़लम से आगे की जा रही है। अनुवादक तो इसको समझने के लिए पवित्र क़ुर्आन ही की एक आयत प्रस्तुत करता है : –

"लड़ाई की उन लोगों को आज्ञा दे दी गयी इस कारण कि उन पर अत्याचार हुआ है। **(22:39)**

अल्लाह तआला तुमको उन लोगों के साथ उपकार करने, सहानुभूति करने, मित्रता करने, (यह अर्थ शब्द "तबर्रुहुम" में मौजूद हैं) और न्याय का व्यवहार करने से नहीं रोकता जो न तुमसे दीन के विषय में लड़े ना ही तुमको तुम्हारे घरों से निकाला। अल्लाह तआ़ला तो न्यायी जनों को प्रिय रखता है। **(60:8)**

प्यारे नबी की प्यारी बातें

— मौलाना अ़ब्दुल हयी हसनी (रह०)

मौत पर आंसू :

हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि आप (सल्ल०) की एक साहबज़ादी ने आप (सल्ल०) को कहला भेजा कि मेरा बच्चा मरने के करीब है आप तशरीफ लाएँ आप (सल्ल०) ने उन्हें जवाब में सलाम कहलवाया और फ़रमाया अल्लाह ही का है उसने ले लिया और उसी का है जो कुछ उसने दिया उसके नज़दीक हर चीज़ के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है, सब्र करो और अल्लाह से सवाब की उम्मीद रखो। साहबज़ादी ने दोबारह क़सम दिलाकर कहलाया आप (सल्ल०) ज़रूर तशरीफ लाएं आप उठे और आप (सल्ल०) के साथ हज़रत सअ़द बिन उबादह और दीगर लोग भी चले बच्चा हुजूर (सल्ल०) के पास लाया गया आप (सल्ल०) ने बच्चे को गोद में बिठा लिया बच्चा मौत व ज़िन्दगी के दर्मियान था यह मन्ज़र देखकर आप (सल्ल०) की आँखें आँसुओं से भर गई आप (सल्ल०) की आँखें देखकर हज़रत सअ़द (रज़ि०) ने फ़रमाया यह क्या है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया यह रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रख दी है अल्लाह तआला अपने रहमदिल बन्दों पर रहम फ़रमाता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

परेशानियाँ गुनाहों का कफ़्फ़ारा है :

हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़ि०) और हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि मुसलमान को जो तकलीफ व बीमारी, रंज व अफ़सोस और परेशानी व ग़म पहुंचता है। यहाँ तक कि काँटा भी चुभता है तो अल्लाह तआ़ला उसको उसकी ग़लतियों का कफ़्फ़ारा बना देता है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

दुन्या में सज़ा, बन्दे के साथ भलाई :

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जब बन्दे के हक़ में ख़ैर चाहता है तो उसको दुन्या ही में (उसके गुनाह की) सज़ा दे देता है और जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे के साथ बुराई का फ़ैसला चाहता है तो उसके गुनाह पर उसको छोड़ देता है फिर क़ियामत के दिन पूरी–पूरी सज़ा देता है।

हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया कि जितनी बड़ी आज़माइश होती है उतना ही बड़ा अज्र मिलता है अल्लाह तआ़ला जिन लोगों से महब्बत फ़रमाता है उनको आज़माइश में डालता है जो इस आज़माइश में अल्लाह के फैसले पर राज़ी रहता है उससे अल्लाह तआ़ला राज़ी होते हैं और जो वावैला मचाता है और नाराज़गी ज़ाहिर करता है तो अल्लाह तआ़ला भी उससे नाराज़ होता है। **(तिर्मिज़ी)**

जान व माल के नुकसान पर सब्र :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया मोमिन मर्द व औरत बराबर जान व माल और औलाद की आज़माइश में फंसे रहते हैं यहां तक कि वह जब अल्लाह तआ़ला से मिलेंगे तो उन पर कोई गुनाह बाक़ी नहीं रहेगा। **(तिर्मिज़ी)**

शुक्रगुज़ार होना :

हज़रत मुगीरा बिन शोबा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने इतनी लम्बी (देर तक) नमाज़ पढ़ी कि पैर मुबारक में वरम आ गया आप (सल्ल०) से अर्ज़ किया गया आप क्यों इतनी तकलीफ़ उठाते हैं आपके तो अगले–पिछले गुनाह माफ कर दिए गए। आप (सल्ल०) ने फरमाया क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूं। **(तिर्मिज़ी)**

अल्लाह तआला की नाम की बड़ाई :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जो अल्लाह तआला की पनाह चाहे उसको अता करो और जो अल्लाह के नाम से अमान तलब करे उसको अमान दो जो तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करे तुम उसका बदला दो अगर बदले की ताकत न हो तो उसके हक़ में इतनी दुआ करो कि तुमको यह महसूस हो कि तुमने इसका बदला चुका दिया। **(अबूदाऊद)**

अच्छे व्यवहार का बदला तारीफ़ और शुक्र भी है :

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि मुहाज़िरीन हजरात ने हुजूर (सल्ल०) से अर्ज़ किया कि सारा अज्र तो अन्सार ले गये। हमने उनसे बेहतर किसी माल वाले को खर्च करने वाला नहीं देखा कम माल वालों में उनसे ज़ियादा दिलदारी और हमदर्दी करने वाला

नहीं देखा। उन्होंने हम सब के बोझ को पूरा–पूरा संभाल, लिया आप (सल्ल०) ने फरमाया क्या तुम लोग उनकी तारीफ़ नहीं करते हो और उनके लिए दुआ नहीं करते हो ? मुहाजिरीन हज़रात ने अ़र्ज़ किया क्यों नहीं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम्हारे इस अमल से उनके अच्छे व्यवहार का बदला हो गया।

बिना हिसाब व किताब के जन्नत :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार बिना हिसाब व किताब के जन्नत में जाएंगे उसमें अल्लाह के वह बन्दे होंगे जो झाड़–फूंक या मंत्र नहीं कराते और बदशुगूनी नहीं लेते और अपने रब पर भरोसा करते हैं। **(बुख़ारी)**

जन्नत व जहन्नम में ले जाने वाली चीज़ें:

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से पूछा गया कि कौन सी चीज़ लोगों को सबसे ज़ियादा जहन्नम में ले जाने वाली है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया मुंह और शर्मगाह। आप (सल्ल०) से पूछा गया कि कौन सी चीज़ लोगों को जन्नत में ले जाने वाली है ? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला का लिहाज़ और अच्छे व्यवहार। **(तिर्मिज़ी)**

नाबीना के सब्र का बदला :

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुज़ूर (सल्ल०) को फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया जब मैं अपने बन्दे को उसकी दोनों महबूब चीज़ों के ज़रिये आज़माता हूं और वह सब्र करता है तो उन दोनों के बदले में उसको जन्नत देता हूं। दोनों महबूब चीज़ों से मुराद दोनों आँखें हैं। **(बुख़ारी)**

एहसान का बदला :

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जिसको कोई तोहफ़ा दिया गया फिर वह मालदार हो गया तो चाहिए कि वह तोहफ़ा देने वाले को उसका बदला दे अगर वह ग़रीब ही रहा तो उस देने वाले की तारीफ़ करनी चाहिए (तो इस तरह) उसने उसका शुक्र अदा कर दिया और जिसने उसको छुपाया ख़ामोश रहा उसने नाशुक्री की। **(अबूदाऊद)**

जज़ाकल्लाह की अहमियत :

हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जिस व्यक्ति के साथ हुस्ने सुलूक किया गया और उसने उस हुस्ने सुलूक करने वाले से "जज़ाकल्लाह" कह दिया उसने तारीफ़ का हक़ अदा कर दिया। **(अबूदाऊद, तिर्मिज़ी)**

लोगों का शुक्र अदा करना चाहिए :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार नहीं हो सकता जो लोगों का शुक्र अदा न करता हो। **(अबूदाऊद व तिर्मिज़ी)**

ज़ियादा सवाब हासिल करने की शर्त :

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है फ़रमाते हैं एक शख़्स रसूलुल्लाहि (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ उसने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल कौन सा सदक़ा ज़ियादा सवाब का है आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम सदक़ा करो इस हाल में कि तुम तन्दुरुस्त व तवाना हो (माल का) लालच हो फ़क्र व फ़ाक़ा का डर हो मालदारी की चाहत हो और तुम (इस काम को) टाले न रहो कि जब तुमको मौत आने लगे तो तुम कहो कि फुलां के लिए इतना है और फुलां के लिए इतना वह तो (अब इस सूरत में) फुलां का हो ही गया। **(तिर्मिज़ी)**

इस्लाम की ख़ातिर सहाबा के बलिदान

हज़रते ख़ब्बाब (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग काफ़िरों के कष्टों से तंग आ चुके थे, एक रोज़ अल्लाह के रसूल अपनी चादर का तकिया बनाए काबे की छाँव में लेटे हुए थे मैं उपस्थित हुआ और अ़र्ज़ किया कि (हुज़ूर) आप हमारे लिये (अल्लाह से) मदद क्यों नहीं मांगते ? आप उठ बैठे, आप का मुख लाल हो गया फ़रमाया : तुम से पहले ईमान वालों को गड्ढे में खड़ा कर के आरे से चीर दिया गया, परन्तु वह ईमान पर जमे रहे, लोहे की कंघी से चमड़ा, मांस आदि हड्डी से अलग कर दिये गये परन्तु उन को दीन से रोका न जा सके। अल्लाह की क़सम अल्लाह इस दीन को पूरा कर के रहेगा यहां तक कि एक मुसलमान सवा सनआ़ से हज़रमौत तक सफ़र करेगा और उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर नहीं होगा, यहाँ तक कि उसे अपने रेवड़ सम्बन्ध में भेड़िये का भय भी नहीं होगा, परन्तु तुम लोग बहुत जल्दी मचा रहे हो। **(बुख़ारी)**

अनुवादक :

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी, नदवी

□□□

जो लोग ईमान लाए और भले काम किये उनके लिये ख़ुशहाली है और अच्छा स्थान है। अर्थात अल्लाह की रज़ा है और जन्नत का पुरस्कार है।

(पवित्र क़ुर्आन 13:29)

इंसानियत का सच्चा दर्द!

– मौलाना अली मियाँ (रह०)

आज किस चीज़ की मुहताजी है, क्या चीज़ दुनिया से खो गयी है, खुदा के लिए विचार कीजिये। क्या चीज़ इस वक़्त दुनिया के हाथ में नहीं है? नेक इरादा नहीं, इंसान की कदर नहीं, इन्सानियत की फ़िक्र नहीं, खतरे हमारे सर पर मंडला रहे हैं उनकी किसी को परवाह नहीं, अपनी–अपनी चिन्ता तो सब को है पर किसी को आम इंसानियत की चिंता नहीं। यदि तीसरा विश्व युद्ध छिड़ गया और यह हाइड्रोजन बम और ऐटम बम चला दिये गये तो दुनिया का क्या हश्र होगा। बातें तो इसकी बहुत की जा रही हैं, चर्चा तो इसकी हर तरफ़ है लेकिन किसी को इसका सच्चा दर्द नहीं है, और जो लोग कुछ कर सकते हैं और इन्सानियत को बचा सकते हैं वह सब से अधिक इन संसाधनों की तैयारी में लगे हैं। यह समझ लीजिए कि नई जंग के लिए सारे राष्ट्र और दुनिया की सारी ताकतें पर तौल रही हैं और सारी दुनिया में जो कुछ रेस है वह इसी की है। किसी को बुराई से नफ़रत नहीं। किसी को इंसान की तबाही का ग़म नहीं है। सच्चा दुख और सदमा होना चाहिए जैसे माँ–बाप को औलाद का सदमा होता है। भाई को भाई का सदमा होता है। वह सदमा किसी को नहीं सिर्फ़ ज़बानी बातें हैं। अमरीका से लेकर आप एशिया के आख़री सिरे तक चले जाइये आपको हर जहग बातें मिलेंगी लेकिन उसके अन्दर दर्द नहीं, कसक नहीं जो दर्द, कराह (वेदना) और कसक होती है वह किसी में आप नहीं पायेंगे। इसमें सारा हिस्सा अ़क़्ल (बुद्धि) का है, सारा हिस्सा प्रखर बुद्धि का है। दुनिया के खतरों की जानकारी और उसका विश्लेषण (Analysis) ऐसा करेंगे कि मालूम होगा कि जैसे किसी विश्लेषण (Analysis) में किसी वस्तु के अलग–अलग हिस्से किये जाते हैं, बिल्कुल हिन्दी की चिन्दी करके आपको बता देंगे कि क्या ख़तरा दरपेश (सामने) है। लेकिन उसके अन्दर जो इन्सानियत का दर्द है या दिल की कसक है वह नहीं होती जैसी आदमी अपने घर की कोई बात बयान करता है तो उसका लहजा (हाव–भाव) कुछ और होता है, आँसू उसकी आँखों में डबडबाये हुए होते हैं, आवाज़ रून्धी हुई होती है और मालूम होता है कि उसका दिल रो रहा है।

आज दुनिया के बड़े–बड़े दार्शनिक बड़े इतमीनान से दुनिया के ख़तरों को बयान करते है ऐसा मालूम होता है कि जैसे वह कोई बहुत अच्छी बात हो, कोई शुभ समाचार हो जिसको मज़ा ले–लेकर बयान किया जाये, इसलिए कि इन्सानियत से किसी को सच्चा लगाव नहीं है, सब ज़बानी बातें और माँसिक बिलासता है।

आज दुनिया की सारी कमी पूरी हो चुकी है। करने को सब कुछ हमारे पास है, मगर हम नेक बनना चाहें, अगर हम इन्सान की सेवा करना चाहें, अगर हम मानव को इन ख़तरों से निकालना चाहें, यदि एक व्यक्ति भी उत्तरी या दक्षिणी ध्रुव में है, हम उसकी मदद करना चाहें तो अल्लाह ने हम को साधन दिये हैं कि हम उसकी मदद को पहुंच सकते हैं लेकिन हमारे अन्दर सच्चा इरादा नहीं, हमारे अन्दर इसका शौक नहीं, ललक नहीं। एक व्यक्ति के पास सब कुछ है वह लाखों रुपयों से मदद कर सकता है लेकिन वह ख़सीस है, कंजूस है उसको पैसे की महब्बत है अथवा सुस्त और अकर्मण्य है वह बिल्कुल हाथ हिलाना नहीं चाहता तो बताइये उसकी दौलत क्या काम आयेगी। एक व्यक्ति हज को जा सकता है खुदा ने उसको ऐसे स्रोत दिये हैं लेकिन हज का इरादा नहीं है, हज का शौक नहीं तो बताइये फिर कौन उसको हज पर अमादा कर सकता है।

इसी तरह आज इन्सान के नेक बनने और इंसान की सेवा करने और इस दुनिया को अमन का गहवारा (पालना), इस दुनिया को जन्नत का नमूना बना देने जैसा सुनहरा मौक़ा जैसा आसान रास्ता इस समय है ऐसा कभी नहीं था। आज दुर्भाग्यवश इन्सान सब कुछ कर सकता है लेकिन वह करना नहीं चाहता। क्यों नहीं चाहता? करने का फ़ाइदा उसके सामने नहीं, फ़ाइदा क्यों सामने नहीं, उसको यकीन नहीं। सिवाय अपने आराम के, सिवाय पेट–पूजा के अपने शरीर के अनुभवों के, अपनी अनुभूतियों के वह अपने आप और अपनी औलाद के सिवा सब कुछ भूल गया है और अब मुझे खतरा है कि शायद वह समय भी दूर नहीं जब अपनी औलाद को भी भूल जायेंगे। स्वार्थ में और 'स्व' में, दिखावा और अपने अस्तित्व में सब कुछ सीमित कर देने के सिलसिले में जिस रफ़्तार से इंसान तरक़्क़ी कर रहा है अगर यह रफ़्तार जारी रही तो कुछ दिनों में हम

देख लेंगे कि माँ–बाप अपनी औलाद को भी भूल जायेंगे, सिर्फ़ अपना पेट भरने की कोशिश करेंगे। वह अगर भूखे हैं और बिलक रहे हैं तो उनको इसकी परवाह नहीं होगी। दुनिया में भौतिकवाद जहां फला–फूला है और नबियों की दिशा उनको रोकने के लिए वहां मौजूद नहीं थी, यहां तक कि हज़रत मसीह अ० की बिगड़ी हुई और बची–खुची शिक्षा, कलीसाई तालीमात और इन्जील की तालीम वह भी वहां से रुख़सत हो गयी है। वहां तो यह हाल है कि इन्सानों को अपने सिवा किसी का होश नहीं रहा, बल्कि बहुत से लोगों को अपना भी होश नहीं रहा है। आख़री इबरत का मंज़र यह है कि इन्सान को अपना भी होश बाक़ी न रहे अर्थात अपने पेट का तो होश रहे अपना होश न रहे।

सारांश यह है कि असल मामला है इन्सान का, और इंसान का जो कुछ भी मामला है वह उसके नेक इरादों का है। अगर यह चीज़ पैदा हो जाये अर्थात नेक इरादे पैदा होने लगें तो फिर कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। यह संसाधनों का तो सिर्फ़ नाम ही नाम है। संसाधन तो इंसानी इरादों के अधीन हैं जिनको खुदा की दी हुई ताक़त से इंसान स्वयं पैदा करता है।

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

अध्यापक दिवस पर विशेष भेंट

कामयाब अध्यापक

सह्रदय और सुयोग्य होता है।
सज्जन और सदाचारी होता है।
सहायक और सहयोगी होता है।
सृजनहार और सकारात्मक सोच वाला,
सहनशील, सुशील और सत्यवादी होता है।
संयम नियम वाला होता है।
साहसी, हौसिलामंद और साईं की सत्ता में विश्वास वाला,
सत्यनिष्ठ और समय पालक होता है।
सलीक़ा और सुव्यवस्था वाला,
संकल्प और सत्यकर्म में अडिग विश्वास,
सीखना और सिखाना उसका काम।
सजग और संतोषी होता है।
सतत प्रयास का पक्षधर होता है।
संघर्षरत रहता है।
सौम्य और सभ्य होता है।
'मालिक' की छत्र–छाया में माली की तरह अपने पौधरूपी
विद्यार्थी को परवान चढ़ाता है, उसे अपने से बेहतर
बनाने की कोशिश करता है।

□□□ *मोहम्मद हसन अंसारी*

सपनो-भरी दुन्या में

आज
इस अर्थभरी दुनिया में
लोग अपना ही–
इतिहास लिखने में मशगूल हैं!
लेकिन–
ज़िन्दगी और सपनों के बीच
मानव
इस मशीनी युग में
इनकी चेष्टाएँ
बिल्कुल मशीनों की तरह
बनकर रह जाती हैं !
और फिर–
इनके सपनों–भरी दुनिया में
यह सपना,
जब यथार्थ में बनकर टूटता है
तब इस मानव को
नाकामी के सिवा–
कुछ भी हाथ नहीं लगता है !
फिर भी–
वह आज अपना
इतिहास लिखने में मशगूल है!
शायद–
वह दिन में ही
सपनों के झरोखे से तो नहीं
गुज़र रहा है ?

डा० सूरज मृदुल

✦✦✦

"समय मूल्यवान है, इसे नष्ट न करें"

— मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी

आप अगर अमीर हैं तो अपनी अशरफ़ियों और अगर ग़रीब हैं तो अपने पैसों को कितना प्रिय रखते हैं। हर सिक्के को आप सिर्फ तभी ख़र्च करना चाहते हैं जब उसके बदले में आपको किसी ख़ास लज़्ज़त या नफ़ा की उम्मीद होती है, लेकिन ख़ुदा की देन इस बड़ी नेमत (वरदान) और प्रकृति की दी हुई इस बड़ी दौलत का भी कभी आपने हिसाब किताब रखा है जिसका नाम "वक़्त" है? आप को यह मालूम है कि आज जो कुछ भी आप कर रहे हैं "वक़्त" ही के अन्दर हो रहा है। अतएव इसका अर्थ यह है कि आप को समय के हर पल, हर साअत, हर मिनट, हर लम्हा का हिसाब देना होगा। क्या आप इसके लिए तैयार हैं ?

"कल" यह हिसाब कोई दूसरा लेगा, "आज" आप स्वयं अपनी जवाबदेही क्यों न करें ? साल के तीन सौ पैसठ दिन और हर दिन के चौबीस घंटे आख़िर आप किस व्यसन में खर्च करते हैं ? इनमें कितना हिस्सा अल्लाह की याद के लिए निकालते हैं ? कितना नमाज़ और अन्य इबादतों में ख़र्च करते हैं ? कितनी देर परहित में लगे रहते हैं ? कितना समय दर्दमन्दों की ग़मख़्वारी और बेकसों की दस्तगीरी (सहारा) में ख़र्च करते हैं ? क्या ऐसा कई बार नहीं हुआ है कि आपने सारा दिन दोस्तों के साथ हँसी–मज़ाक में और सारी रात जलसों और तमाशों में बसर कर दी है ? क्या ऐसा प्रतिदिन नहीं होता कि निरर्थक बातों के पीछे अत्यावश्यक और महत्वपूर्ण कार्य छोड़ते रहते हैं ? उम्र की जो घड़ियां ग़ीबत व नुक़्ताचीनी (आलोचना) ईर्ष्यान्द्वेष (रश्क व हसद), झूठ व पाखण्ड, घमण्ड व ग़ुरूर, खुशामद व चापलूसी, भोग–विलास में गुज़र रही है क्या इनकी बाबत कोई पूछगछ न होगी? ज़िन्दगी की जो सांसे ग़फ़लत और सरमस्ती के आलम में सीने से गुज़रती रहती हैं क्या उन पर कोई जवाब तलब न होगा ? फिर यह क्या है कि आप दुन्या के दूसरे मामलों में तो बड़े चतुर गुनी और होशियार समझे जाते है लेकिन वक़्त की दौलत लुटाने में आपकी दरियादिली की दास्तानें बयान की जाती है ?

अगर आप नवजवान हैं तो आपको अपने सुधार में अपेक्षाकृत बहुत आसानी है। ख़ुदा के लिए इसी समय से समय का मूल्य पहचानना शुरु कीजिये और इसको भली प्रकार मन में बिठा लीजिये कि आप और आप के राष्ट्र दोनों की भलाई इसी में है कि आप बेकार मश्ग़लों (व्यसन) को छोड़कर अपना मूल्यवान समय केवल लाभदायक तथा सार्थक कार्यों में लगायें और अगर आप बूढ़े हों चुके हैं तो आपको इस ओर ध्यान देने की और अधिक ज़रुरत है कि आपका अनुसरण आपके छोटे ही करेंगे और स्वयं आपका अन्तिम समय मालूम नहीं किस समय आ जाये। जो काम आप की सकत से बाहर है उनकी बाबत निश्चय ही आप पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेकिन जो बातें आप के बस व ताक़त के अन्दर हैं और जो आप के ध्यान देने से हो सकती हैं उन पर अगर आपने समय और पूरा समय न ख़र्च किया तो बेशक आपसे सुवाल होगा और इस सुवाल का जवाब आसान न होगा। मुसलमानों के कामों में व्यक्तिगत और सामूहिक दोनों हैसियतों से इस समय जो तीव्र कुव्यवस्था (शदीद अब्तरी) व्याप्त है उसका एक बड़ा कारण यही है कि हमारे जवानों और बूढ़ों, अमीरों और ग़रीबों, मर्दों और औरतों, आलिमों और जाहिलों, शहरियों और देहातियों ग़रज़ किसी तब्के में वक़्त की क़दर व कीमत का एहसास तक नहीं बाक़ी रहा है।

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

वक़्त वो है कि...

गाँव, कस्बा, कि शहर में कोई–
एक इन्साँ नज़र नहीं आता।
हाय, थम ज़रा हवा दम साधे–
क़हर जब तक गुज़र नहीं जाता।
कौन घर से गया, नहीं लौटा–
कोई उसकी ख़बर नहीं लाता।
लोग जिसको ज़मीर कहते हैं–
आज–कल वो इधर नहीं आता।
राजधानी–गली फ़िरिश्तों की–
एक अदना बशर नहीं जाता।
चाँद भी ख़ैर मनाए कैसे–
ज्वार जब तक उतर नहीं जाता।
वक़्त वो है कि सुब्ह का भूला–
शाम को लौटकर नहीं आता।

— डॉ० श्रीहरि, मुम्बई

औरतों की आज़ादी

औरतों ने क्या खोया क्या पाया ?

– डॉ० जस्टिस मुहम्मद तक़ी उस्मानी

औरतों के लिए हिजाब (पर्दा) क्यों ज़रूरी है और इसके शरई आदेश क्या हैं? यह बात उस समय तक ठीक–ठीक समझ में नहीं आ सकती जब तक यह मालूम न हो कि औरत के इस संसार में आने और उसको पैदा किये जाने का बुन्यादी उद्देश्य क्या है?

पैदाइश का उद्देश्य

आज पश्चिमी विचारधारा के हमले में यह प्रोपगंडा किया जा रहा है कि इस्लाम के अन्दर औरत को पर्दे में रखकर घूंट दिया गया है और उसको चारदीवारी के अन्दर क़ैद कर दिया गया है, लेकिन यह सारा प्रोपगंडा वास्तव में इस बात का नतीजा है कि औरत को पैदा करने का बुन्यादी उद्देश्य मालूम नहीं है। ज़ाहिर है यदि इस पर विश्वास है कि इस संसार को पैदा करने वाला अल्लाह तआला है, इंसान को पैदा करने वाला अल्लाह तआला है और अगर खुदा न करे इस पर विश्वास न हो तो बात आगे नहीं चल सकती और इस ज़माने में जो लोग अल्लाह तआला के होने पर विश्वास नहीं रखते है और दीन के न मानने में दिन प्रतिदिन आगे बढ़ते जा रहे हैं उनको भी अल्लाह तआला ने ऐसी निशानियां और लक्षण दिखा रहे हैं जिससे वह भी अल्लाह तआला के वजूद (अस्तित्व) के क़ाइल हो रहे हैं। एक दिन अख़बार में था इस समय के सबसे बड़े साइंसदां (वैज्ञानिक) ने यह कहा है कि लक्षण और निशानियों से यह मालूम होता है कि यह कायनात (ब्रह्माण्ड) एक धमाके से पैदा हुई है। यह इस युग के सबसे बड़े वैज्ञानिक के शब्द हैं जो एक दिन अख़बारों में प्रकाशित हुए हैं। यदि अल्लाह पर ईमान है तो यह पता है कि अल्लाह ने इस कायनात (ब्रह्माण्ड) को पैदा किया है और मर्द को भी उसने पैदा किया और औरत को भी उसी ने ही पैदा किया है तो पैदाइश का उद्देश्य उसी से पूछना चाहिये कि मर्द को क्यों पैदा किया? और औरत को क्यों पैदा किया और दोनों को पैदा करने का बुन्यादी उद्देश्य क्या है।

मर्द और औरत दो विभिन्न लिंग

यह नारा तो आज बहुत ज़ोर–शोर से लगाया जाता है कि औरतों को भी मर्दों से कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करना चाहिये और पश्चिमी विचारधारा ने यह प्रोपगंडा सारे संसार में कर दिया है लेकिन यह नहीं देखा कि अगर मर्द और औरत दोनों एक ही जैसे काम के लिए पैदा हुए थे तो फिर दोनों को जिस्मानी तौर पर अलग–अलग पैदा करने की क्या ज़रुरत थी ? मर्द के शरीर की रचना और है, औरत के शरीर की रचना और है। मर्द का मिज़ाज और है, मर्द की क्षमताएं और हैं, औरत की क्षमताएं और हैं। अल्लाह तआला ने दोनों की शारीरिक रचना इस प्रकार की है कि दोनों की रचनात्मक व्यवस्था में बुन्यादी अन्तर है। अतः यह कहना कि मर्द और औरत में किसी प्रकार का कोई अन्तर नहीं है यह खुद प्रकृति के ख़िलाफ बग़ावत है। इसलिए कि यह तो आँखों से नज़र आ रहा है कि मर्द और औरत में अंतर है। दुन्या फ़ैशन में मर्द और औरत के इस अंतर को मिटाने की जितनी चाहें कोशिश कर ले और इस तरह की औरतों ने मर्दों जैसी पोशाक पहनना शुरु कर दिया और मर्दों ने औरतों जैसा वस्त्र पहनना शुरु कर दिया, औरतों ने मर्दों जैसे बाल रखने शुरू कर दिये और मर्दों ने औरतों जैसे बाल रखना शुरु कर दिये लेकिन इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि मर्द और औरत के जिस्मानी रचना भिन्न है। दोनों विभिन्न लिंग हैं। दोनों की जीवन शैली अलग–अलग है और दोनों की क्षमताएं भिन्न हैं।

अल्लाह तआला से पूछने का ज़रिया पैग़म्बर (अ़लै०)

लेकिन यह किस से मालूम किया जाए कि मर्द को क्यों पैदा किया और औरत को क्यों पैदा किया गया। ज़ाहिर है इसका जवाब यही होगा कि जिसने पैदा किया है उससे पूछो कि उसने मर्द को किस उद्देश्य के लिए पैदा किया है ? और औरत को किस उद्देश्य के लिए पैदा किया है ? और उससे पूछने का ढंग यह है कि उसने संसार में जो पैग़म्बर और संदेशवाहक भेजे हैं जिन के द्वारा अपने संदेश दुन्या तक पहुंचाए हैं वह हज़राते अम्बिया (माननीय ईश्दूतों) और अल्लाह के अन्तिम संदेशवाहक मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं।

इंसानी जीवन के दो विभाग

कुर्आ़ने करीम की शिक्षा और रसूले करीम (सल्ल०) की तालीम से निःसंदेह

यह बात सिद्ध होती है कि वास्तव में इंसानी जीवन दो विभागों में बंटा हुआ है। एक घर के अन्दर का घर के बाहर का, दूसरा यह दोनों विभाग ऐसे हैं कि इन दोनों को साथ लिए बिना एक संतुलित जीवन नहीं बिताया जा सकता। घर का प्रबन्धक भी ज़रुरी है और घर के बाहर का प्रबन्ध भी अर्थात रोज़ी कमाने का प्रबन्ध भी ज़रुरी है। जब दोनों काम एक साथ अपनी–अपनी जगह पर ठीक–ठाक चलेंगे तब इंसान की ज़िन्दगी सुदृढ़ होगी और यदि इसमें एक समाप्त हो गया या त्रुटिपूर्ण हो गया तो इससे इंसान के जीवन में संतुलन समाप्त हो जाएगा।

मर्द व औरत के बीच कार्य का बंटवारा

इन दोनों विभागों में अल्लाह तआला ने यह बंटवारा किया कि मर्द के ज़िम्मे बाहर के काम लगाए मसलन रोज़ी कमाने का काम, सामाजिक और राजनीतिक कार्य आदि यह सब काम मर्द के ज़िम्मे लगाए हैं और घर के भीतर का काम अल्लाह और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने औरतों के हवाले किया है। लेकिन यदि अक़्ल के ज़रिये इंसान के स्वाभाविक रचना की समीक्षा करें तो फिर इसके सिवा और कोई इंतिज़ाम नहीं हो सकता। इसलिए मर्द और औरत के बीच अगर मुक़ाबला करके देखा जाए तो ज़ाहिर होगा कि जिस्मानी कूवत जितनी मर्द में है, उतनी ग़ालिबन औरत में नहीं होती और कोई भी इससे इन्कार नहीं कर सकता कि अल्लाह तआला ने मर्द में औरत की तुलना में जिस्मानी ताक़त अधिक रखी है और घर के बाहर के लिए कूवत की अधिक आवश्यकता पड़ती है। वह काम कूवत और मेहनत के बिना नहीं किये जा सकते हैं। अतः इस प्राकृतिक रचना का भी तक़ाज़ा यही है कि घर के बाहर का काम मर्द पूर करे और घर के भीतर का काम औरत को सुपुर्द हो।

औरत घर का प्रबन्ध संभाले

अल्लाह तआला ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम की पवित्र बीवियों को सीधे संबोधित किया, उनके माध्यम से सारी मुसलमान महिलाओं से फ़रमाया वह यह है कि "तुम अपने घरों में चैन से रहो" इसमें केवल इतनी बात नहीं कि औरत को ज़रूरत के बिना घर से बाहर नहीं जाना चाहिए बल्कि इस आयत में एक मूल सच्चाई की तरफ इशारा किया गया है, वह यह कि वह घर में चैन से रहकर घर के प्रबन्धक को संभाले।

हज़रत अली (रज़ि०) और हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) के बीच काम का बटवारा

यही कारण है कि हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) आँहज़रत (सल्ल०) की चहीती बेटी का निकाह जब आपके चचाज़ाद भाई हज़रत अली (रज़ि०) से हुआ तो निकाह के बाद आँहज़रत (सल्ल०) ने दोनों को बैठाकर यह कार्य विभाजन कर दिया फ़रमाया कि ऐ फ़ातिमा घर के अन्दर के काम तुम्हारे ज़िम्मे और ऐ अली (रज़ि०)! घर के बाहर के जितने काम हैं वह तुम्हारे ज़िम्मे हैं। चुनानचः हज़रत फ़ातिमा (रज़ि०) घर के कामों की देखभाल फ़रमातीं और हज़रत अली (रज़ि०) घर के बाहर के कामों की देखभाल फ़रमाते और यहीं हुजूर (सल्ल०) की हिदायत (निर्देश) थी।

औरत को किस लालच पर घर से बाहर निकाला गया

अल्लाह और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने यह बंटवारा फ़रमा दिया कि घर के अन्दर का काम औरत और घर के बाहर का काम मर्द करे और यही स्वाभाविक कार्य विभाजन था और इसी पर ज़माने तक अमल चला आ रहा था और यह कार्य विभाजन केवल इस्लाम में ही नहीं बल्कि दूसरे धर्मों में भी यही तरीक़ा था परन्तु जब से पश्चिमी देशों में उद्योगिक क्रान्ति प्रारम्भ हुई, उस समय से उल्टी गंगा बहनी शुरू हुई। इसमें औरत को यह कह कर बेवकूफ़ बनाया गया कि बाहर के सारे काम और सारे पद मर्द ने हासिल कर लिए हैं और तुम्हें घर की चारदीवारी में घूंट दिया गया है। वास्तविकता यह है कि जिस ज़माने में उद्योगिक क्रांति शुरू हुई तो पश्चिमी मर्दों के सामने दो कठिनाईयां थीं। एक यह कि उसको अपनी तिजारत और अर्थव्यवस्था को चलाने के लिए अधिक मेहनत और अधिक पैसा कमाने की ज़रूरत थी, अब उसको अपना पेट पालना और अपने लिए कमाना भी कठिन हो रहा था। इसके अलावा उसको अपनी बीवी का खर्च भी उठाना पड़ रहा था। अतः उसको यह बात नागवार होती थी कि मैं अपने सिवा अपनी बीवी का खर्च भी उठाऊं। दूसरी तरफ तिजारत के लिए कई–कई महीनों के लिए यात्रा करनी पड़ती थी और इन यात्राओं में औरत की निकटता भी प्राप्त नहीं होती थी। अब मर्द ने इन दोनों कठिनाईयों का यह हल निकाला कि औरत को जाकर यही पढ़ाया कि तुम्हें घर की चारदीवारी में बन्द कर दिया गया है। तुम यह आवाज़ बुलन्द करो कि हमें मर्दों के कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करना चाहिए और घर से बाहर निकलना चाहिए। यह क्या वजह है कि केवल मर्द ही अफ़सर बनता है लेकिन औरत अफ़सर नहीं बनती। केवल मर्द क्यों शासक बनता है औरत क्यों नहीं? इस प्रकार औरत को "औरतों की आज़ादी" का पाठ पढ़ाया गया और इस नाम से इस आन्दोलन को सारी दुन्या में परिचित कराया गया। इस आन्दोलन के फलस्वरूप औरत धोखे में आ गई और उसने "स्त्री स्वतंत्रता आन्दोलन" शुरू किया और उसके नतीजे में वह घर से बाहर निकली।

घर से बाहर निकलते समय उसको

यह लालच दिया गया कि जब तुम घर से बाहर निकलोगी तो तुम्हारी हुकूमत होगी, तुम हुकूमत की शासक भी बनोगी, तुम पार्लियामेंट की मेम्बर भी बनोगी और सारे संसार के उच्च पदों तक पहुंच सकती हो परन्तु आप इतिहास का अध्ययन करके देख लें कि अब तक कितनी औरतें शासक बनी हैं और कितनी औरतें उच्च पदों पर पहुंचीं? चन्द गिनी–चुनी औरतों के सिवा वह पद और सम्मान किसी को प्राप्त न हो सका लेकिन इसके धोखे में हज़ारों औरतों को सड़कों पर घसीट लिया गया आज संसार का बुरे से बुरे काम औरतों के सुपुर्द हैं। आज होटलों में दूसरों का नाज़ औरत उठाती है। वेटर अगर बनती है तो औरत, सेल्स गर्ल्स अगर बनती है तो औरत बनती है। सड़कों पर झाड़ू दे रही है तो वह औरत दे रही है और अगर उसको अधिक इज़्ज़त का पद मिलता है तो वह किसी दफ़्तर में सिक्रेट्री बन गई है, टाइपिस्ट या स्टेनोग्राफ़र बन गयी है जहां वह अपने अफ़सरों की नाज़बरदारी कर रही है।

नई तहज़ीब का अनोखा फ़लसफ़ा

नई तहज़ीब का अनोखा फ़लसफ़ा यह है कि अगर औरत घर में अपने लिए अपने शौहर के लिए अपने बच्चों के लिए खाना तैयार करती है या खाने का प्रबन्ध करती है तो यह प्रतिक्रियावाद और पिछड़ापन है और अगर वही औरत जहाज़ के अन्दर एयर होस्टेस बन कर सैकड़ों इंसानों की ज़ालिम निगाहों का निशाना बन कर उनकी सेवा करती है तो उसका नाम आज़ादी और नवीनता है। और अगर वही औरत अपने घर में रहकर अपने परिवार के लिए काम करती है तो उसे पिछड़ापन क़रार दिया गया है और होटल में वेटर बनकर काम कर रही है तो उसको आज़ादी और नवीनता कहा जा रहा है।

उसके बारे में कहा जा रहा है कि हमने औरत को बाहर निकाल कर आज़ादी दे दी है। आज नीच से नीच काम ज़लील से ज़लील काम औरत को सपुर्द कर दिया गया है और इस लालच में लाखों औरतों को ढकेल दिया गया कि मर्दों के कंधे से कंधा मिला कर काम करें।

आज फ़ैमिलि सिस्टिम तबाह हो चुका है

अल्लाह तआला ने औरत को घर का ज़िम्मेदार बनाया था, घर का प्रबन्धक बनाया था ताकि वह फ़ैमि्लि सिस्टिम सुदृढ़ कर सके लेकिन जब वह घर से बाहर आ गई तो नतीजा यह हुआ कि बाप भी बाहर और मां भी बाहर और बच्चे स्कूल में या नर्सरी में और घर पर ताला पड़ गया अब वह फ़ैमि्लि सिस्टिम तबाह और बरबाद होकर रहा गया। औरत को तो इसलिए बनाया गया था कि जब वह घर में रहेगी तो घर का इंतिज़ाम भी वही करेगी और बच्चे उसकी गोद में तरबियत पाएंगे। मां की गोद बच्चे के लिए सबसे पहली तरबियतगाह (प्रशिक्षण स्थल) होती है। वहीं से वह अख़लाक़ (सदाचरण) सीखते हैं। वहीं से वह अच्छे स्वभाव सीखते हैं। वहीं से ज़िन्दगी गुज़ारने के तरीक़े सीखते हैं लेकिल आज पश्चिमी समाज में बच्चों को मां–बाप का सनेह प्राप्त नहीं और कुटुम्ब दरहमबरहम होकर रह गया है और जब औरत दूसरी जगह काम कर रही है और मर्द दूसरी जगह काम कर रहा है और दानों के बीच दिन भर में कोई सम्पर्क नहीं है तो कभी–कभी इन दोनों के बीच आपसी सम्बन्ध कमज़ोर पड़ जाता है और टूटने लगता है और उसकी जगह नाजाइज़ रिश्ते पैदा होने शुरु हो जाते हैं और उसकी वजह से तिलाक़ तक नौबत पहुंचती है, घर बरबाद हो जाता है।

औरतों के बारे में गोरवाचोफ़ का नज़रिया (दृष्टिकोण) : अगर यह बात केवल मै कहता, तो कोई कह सकता था कि यह बातें आप पक्षपात की वजह से कह रहे हैं लेकिन अबसे कुछ साल पहले स्वेट यूनियन के अन्तिम अध्यक्ष मिरवाईल गोरवाचोफ़ ने एक किताब लिखी है "प्रोस्टाइका" आज यह पुस्तक सारे संसार में मशहूर है, अब प्रकाशित हो चुकी है। इस पुस्तक में उन्होने "औरतों का मर्तबा" (स्त्रियों की प्रतिष्ठा) के नाम से एक अध्याय क़ाइम किया है उसमें उन्होने साफ़ साफ़ और स्पष्ट रूप से यह बात लिखा है– "हमारे पश्चिमी समाज में औरत को घर से बाहर निकाला गया और उसको घर से बाह निकालने के नतीजे में बेशक हमने कुछ आर्थिक लाभ प्राप्त किया और पैदावार में कुछ बढ़ोत्तरी हुई इसलिए कि मर्द भी काम कर रहे हैं और औरतें भी काम कर रही हैं लेकिन पैदावार के अधिक होने के बावजूद हमारा फ़ैमि्लि सिस्टिम तबाह हो गया जिसके नतीजे में हमें जो नुक़सान उठाने पड़े हैं वह नुक़सान उन फ़ाइदों से अधिक हैं जो पैदावार की बढ़ोतरी के नतीजे में प्राप्त हुए हैं। अतः मै अपने देश में " प्रोस्ट्राइका" के नाम से एक अन्दोलन शुरु कर रहा हूं। इसमें मेरा एक बहुत बुन्यादी उद्देश्य यह है कि वह औरत, जो घर से बाहर निकल चुकी है, उसको वापस घर में कैसे लाया जाए? इसके तरीक़े सोचने पड़ेंगे अन्यथा जिस तरह हमारा फ़ैमि्लि सिस्टिम तबाह हो चुका है उसी तरह हमारी पूरी क़ौम तबाह हो जाएगी।

यह शब्द मिख़ाइल गोरवाचोफ़ ने अपनी किताब में लिखे हैं। वह किताब आज भी बाज़ार में उपलब्ध है जिस का जी चाहे देख ले।

रूपया पैसा स्वयं कोई चीज़ नहीं : इस खान्दानी ढांचे की तबाही की बुन्यादी वजह यह है कि हमने औरतों के पैदाइश के उद्देश्य को नहीं जाना कि औरत को

क्यों पैदा किया गया है? अल्लाह तआ़ला ने औरत को इसलिए पैदा किया था कि वह घर के प्रबन्ध और फ़ैमिलि सिस्टिम को सुदृढ़ करें। आज के आर्थिक युग में सारी कोशिशों का हासिल यह है कि अधिक हो जाए लेकिन यह तो बताओ कि रुपया पैसा स्वतः कुछ लाभ पहुंचा सकता है? अगर आप को भूख लग रही है और आपके पास पैसा मौजूद हो तो आप उस को खाकर भूख मिटा लेंगे? अगर आपको प्यास लग रही हो तो रुपये को पानी की तरह पीकर प्यास बुझा लेंगे? पैसा स्वतः कोई चीज़ नहीं जब तक कि उसके द्वारा ज़रूरत की चीज हासिल करके आदमी सकून हासिल न करे उस समय तक रुपया पैसा खुद कोई चीज़ नहीं है।

एक यहूदी की इबरतनाक (शिक्षा प्रद) घटना : एक महापुर्ष ने एक घटना लिखी है कि पहले ज़माने में एक यहूदी बहुत बड़ा मालदार और पूंजीपति था। उस ज़माने में लोग अपना धन ज़मीन के नीचे ख़ज़ाना बनाकर रखा करते थे। उस यहूदी ने ख़ज़ाने में सोना चान्दी का ढेर जमा किया था। एक बार वह अपने ख़ज़ाने को गुप्त रूप से मुआइना करने गया और जब अन्दर गया तो उस चौकीदार को भी ख़बर नहीं दी जिसको उसने वहां नियुक्ति किया था ताकि यह देखे कि कहीं चौकीदार तो ख़्यानत (विश्वासघात) नहीं कर रहा है और इस ख़जाने के दर्वाज़े का सिस्टिम ऐसा था कि वह अन्दर से बन्द तो होता था लेकिन खुल नहीं सकता था। केवल बाहर से ही खुल सकता था। अब उसने बेख़्याली में दर्वाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया अब खोलने का कोई रास्ता न था। बाहर चौकीदार यह समझता रहा कि ख़ज़ाना बन्द है ओर उसको यह ख़्याल भी नही था कि ख़ज़ाने का मालिक अन्दर है। मालिक अन्दर जाकर ख़ज़ाने की जांच करता रहा और जब देख भाल से खाली होकर वापस बाहर निकलना चाहा तो बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। अब वहां क़ैद है, भूख लग रही है और प्यास लग रही है, ख़जाना सब मौजूद है लेकिन प्यास नहीं बुझा सकता। रात को नींद आ रही है ख़जाना सब मौजूद है लेकिन बिस्तर का प्रबन्ध नहीं कर सकता। यहां तक कि जितने दिन बिना खाना पानी ज़िन्दा रह सकता था जिन्दा रहा और फिर उसी ख़ज़ाने में उसका देहान्त हो गया तो यह रुपया पैसा खुद इंसान को लाभ पहुंचाने वाली चीज़ नहीं है जब तक कि प्रबन्ध ठीक न हो और जब तक रास्ता ठीक न हो ।

गिन्ती में दौलत की अधिकता : आज संसार यह कहता है कि औरत को घर से बाहर निकाल लेंगे तो हमें काम करने वाले अधिक मिल जाएंगे और उसके नतीजे में पैदावार अधिक होगी और धन अधिक हो जाएगा लेकिन जब तुम्हारी ख़ान्दानी व्यवस्था तबाह हो गयी और फलस्वरूप तुम्हारी क़ौम की उन्नति का रास्ता बन्द हो गया तो यह कितना बड़ा नुक़सान है।

धन कमाने का उद्देश्य : इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में फ़रमाया कि हमने औरत को इसलिए पैदा किया कि वह जीवन की यह महत्वपूर्ण सेवा पूरी करके अपनी कुटुम्ब व्यवस्था को सुदृढ़ करे और अपने घर को संभालो। इसका तो कोई अर्थ नहीं कि घर उजड़ा पड़ा है और बाहर के कामों को वरीयता दी जा रही है। बाहर रहकर इंसान जो भी कमाता है वह तो इसलिए कमाता है कि घर के अन्दर आकर इंसान सुखशान्ति हासिल करे लेकिन यदि घर की शान्ति तबाह है तो उसने जितनी कुछ कमाई की वह कमाई बेकार है।

बच्चे को मां की मम्ता की जरूरत : घर की व्यवस्था को ठीक रखने के लिए और बच्चों के सही पालन पोषण के लिए और बच्चों में सही विचार पैदा करने के लिए अल्लाह तआ़ला ने ये कर्तव्य औरतों को सुपुर्द किये हैं। यही वजह है कि एक बच्चा मां और बाप दोनों का होता है लेकिन जितना प्यार और जितनी मम्ता अल्लाह तआ़ला ने मां के दिल में रखी है बाप के दिल में उतनी नहीं रखी और बच्चे को जितना प्यार अपनी मां से होता है उतना अपने बाप से नहीं होता और जब बच्चे को कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो वह जहां भी हो तुरन्त मां को पुकारेगा, बाप को नहीं पुकारेगा। इसलिए की वह जानता है कि मां मेरी मुसीबत का उपचार कर सकती है और इसी प्रेम के रिश्ते से बच्चे का पालन पोषण होता है ओर जो काम मां कर सकती है वह बाप नही कर सकता अगर कोई बाप चाहे कि मैं मां की मदद के बिना बच्चे का पालन पोषण कर लूं, तो यह उसके लिए सम्भव नहीं। आज कल लोग बच्चों को नर्सरियों के अन्दर पालते हैं। याद रखो कोई भी नर्सरि बच्चे को मां की मम्ता नहीं दे सकती। बच्चे को कोई पोलट्रीफ़ारमिंग जैसी संस्था की ज़रूरत नहीं है बल्कि बच्चे को मां की मम्ता की आवश्यकता है और इसके लिए ज़रूरी है कि औरत घर का प्रबन्ध संभाले। अगर कोई मां घर का प्रबन्ध नहीं संभाल रही है तो वह प्रकृति से बग़ावत कर रही है और प्रकृति से बग़ावत का नतीजा वही होता है जो इस समय आंखें देख रही हैं।

आज़ादाना मेल जोल के नताइज :– औरत के घर से निकलने से एक ख़राबी तो यह हुई कि अल्लाह तआ़ला ने मर्द के दिल में औरत का आकर्षण (कशिश) रखी है और औरत के दिल में मर्द का आकर्षण रखा है यह एक स्वाभाविक बात है। आप इस पर कितना भी पर्दा डालें लेकिन यह एक सच्चाई है कि जिस को झुठलाया नहीं जा सकता कि जब दोनों के बीच

आज़ादाना मेल जोल होगा और आज़ादाना उठना बैठना होगा तो वह आकर्षण जो स्वाभाविक रूप से इंसान के अन्दर मौजूद है किसी न किसी समय रंग लाकर गुनाह पर आमादा करेगा। और जब मर्द और औरत का आज़ादाना मेल जोल होगा और हर समय मेल मिलाप होगा और हर समय एक दूसरे को देखेंगे तो उसके नतीजे में वह अवश्य गुनाह की तरफ़ बढ़ेगें। आप अपनी आंखों से देख रहे हैं कि पश्चिमी समाज का रंग क्या है वहां मर्द और औरत के आज़ादाना मेल जोल के नतीजे में क्या हो रहा है।

अमरीका मे हर 46 सेकेन्ड पर एक बलातकार की घटना होती है। अब बताइये कि जिस देश में रज़ामन्दी के साथ शारीरिक इच्छा पूर्ति का रास्ता खुला हुआ है उसके बावजूद ज़बर्दस्ती बलात्कार इतनी अधिकता से हो रहा है उसका क्या कारण है ?

इसलिए मर्द औरत का आज़ादाना मेल जोल का वही नतीजा होगा जो आप देख रहे हैं और यह सब कुछ उस हुक्म से बग़ावत का ही नतीजा है जो अल्लाह–तआला ने इस आयत मे दिया कि "अपने घरो में क़रार (चैन) से रहो" आज हम यह हुक्म छोड़ कर दूसरे रास्ते पर चल पड़े हैं।

ज़रूरत के समय घर से बाहर जाने की इजाज़त :– अलबत्ता एक सवाल यह पैदा होता है कि अगर औरत भी एक इंसान है, उसको भी घर से बाहर जाने की ज़रूरत पेश आ सकती है। उसके दिल में घर से बाहर निकलने की इच्छा होती है ताकि वह अपने सगे संबन्धियों से मिले और बाज़ को अपनी ज़ाती जरूरत पूरी करने के लिए भी बाहर निकलने की ज़रूरत होती है और कभी कभी उसको जाइज़ मनोरंजन की आवश्यकता होती है। इसलिए उसको इन कामों के लिए घर से बाहर जाने की इजाज़त होनी चाहिये। खूब समझलो यह जो हुक्म है कि घर में क़रार से रहो इसका यह अर्थ नही कि घर मे ताला लगा कर उसको अन्दर बन्द कर दिया जाए बल्कि अर्थ यह है कि ज़रूरत के समय वह घर से बाहर भी जा सकती है। वैसे तो अल्लाह तआला ने औरत पर किसी ज़माने में भी रोज़ी कमाने की ज़िम्मेदारी नहीं डाली, शादी से पहले उसके ख़र्च और पालन पोषण की ज़िम्मेदारी बाप के ज़िम्मे है और शादी के बाद तमाम ख़र्च की ज़िम्मेदारी पति की है लेकिन जिस औरत का न बाप हो ने शौहर हो, और न आर्थिक ज़रूरत के लिए कोई साधन हो तो ज़ाहिर है उसको अपनी आर्थिक ज़रूरत को पूरा करने के लिए घर से बाहर जाना पड़ेगा। इस सूरत में घर से बाहर जाने की इजाज़त है बल्कि जाइज़ मनोरंजन के लिए घर से बाहर जाने की अनुमत है। आंहज़रत सल्ललाहू अलैहिवसल्लम कभी कभी हज़रत आइश (रजि०) को अपने साथ भी लेकर गए।

हदीस में आता है कि एक बार एक सहाबी आँ–हज़रत सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और निवेदन किया–या रसूलल्लाह ! मै आपकी दावत करना चाहता हूं। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया–क्या आइशा (रजि०) की भी मेरे साथ दावत है या नहीं? चूंकि वह ज़माना सादगी और बेतकल्लुफ़ी का था और उस समय उनके ज़ेहन में हज़रत आइशा (रजि०) की दावत का इरादा नहीं था इसलिए उन्होने साफ़ कह दिया कि या रसूलल्लाह ! (सल्ल०) मै केवल आपकी दावत करना चाहता हूं। आंहज़रत (सल्ल०) ने भी साफ़ जवाब दे दिया "अगर आइशा की दावत नही तो मैं भी नहीं आता। कुछ दिनों के बाद वह सहाबी फिर सेवा में उपस्थित हुए और कहा या रसूलल्लाह ! (सल्ल०)! मै आपकी दावत करना चाहता हूं। आपने फिर वही सवाल किया कि "क्या आइशा की भी मेरे साथ दावत है या नही?" उन्होंने फिर वही जवाब दिया कि रसूलल्लाह (सल्ल०) केवल आपकी दावत है। आपने फिर इन्कार फ़रमा दिया। कुछ समय के बाद तीसरी बार आकर फिर दावत दी और अनुरोध किया कि या रसूलल्लाह (सल्ल०)! मेरा दिल चाहता है कि आपे मेरी दावत क़ुबूल फ़रमा लें। आपने फिर पूछा कि " क्या आइशा (रज़ि०) की भी मेरे साथ दावत है? अब की बार उन्होने कहा कि, जी हां रसूलल्लाह! हज़रत आइशा की भी आपके साथ दावत है। आपने फ़रमाया अब मैं दावत क़ुबूल करता हूं।

जाइज़ तफ़रीह (मनोरंजन) की ज़रूरतः– यह दावत मदीनातय्यबा में नहीं थी बल्कि मदीनातय्यबा से बाहर कुछ दूर की एक बस्ती में थी। अब आप (सल्ल०) हज़रत आइशा (रज़ि०) को लेकर चले ओर रास्ते में एक खुला मैदान आया जिसमें कोई दूसरा आदमी मौजूद नहीं था। उस समय आंहज़रत (सल्ल०)ने हज़रत आइशा (रजि०) से फ़रमाया अगर तुम दौड़ लगाना चाहो तो दौड़ लगाओ और उनके साथ स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहिसल्लम ने भी दौड़ लगाई और ज़ाहिर है दौड़ लगाना एक जाइज़ मनोरंजन था तो इस जाइज़ तफ़रीह की भी आंहज़रत (सल्ल०)ने व्यवस्था फ़रमाई। इसलिए एक महिला को इसकी भी आवश्यकता होती है तो उसको इस प्रकार की तफ़रीह की इजाज़त है शर्त यह है कि उचित सीमा में हो।

सजधज कर निकलना जाइज़ नहीः– बाहर निकलने की यह शर्त लगा दी गई है कि परदे की पाबन्दी होनी चाहिए और हुक्म है कि एलानिया अपने शरीर की नुमाइश करते हुए न निकलो।

इसीलिए कुर्आन शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला ने अगला वाक्य यूं फ़रमाया– "अगर कभी निकलने की ज़रूरत हो तो इस तरह बनाव श्रंगार के साथ नुमाईश करती हुई न निकलो जैसा कि जाहिलियत की औरतें निकलती थीं और ऐसा श्रंगार और सजधज के साथ न निकालो जिससे लोगो का आकर्षण उसकी तरफ़ हो बल्कि पर्दे की पाबन्दी के साथ निकलो और शरीर ढीले ढाले लिबास में छुपा हुआ हो। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहिब सल्लम के ज़माने में पर्दो के लिए चादरें प्रयोग में आती थीं और वह सिर से पूरे शरीर को छुपा लेती थी। संक्षेप में ज़रूरत के समय औरत को घर से बाहर निकलने की अनुमति तो दी गई है लेकिन इसके बाहर निकलने से फ़ितने (उपद्रव) का जो ख़तरा है उसको पर्दे के द्वारा रोकने का उपाय किया गया है। इसीलिए पर्दे का आदेश दिया गया है।

परदे का हुक्म तमाम महिलाओं के लिए :– बाज़ लोग कहते हैं कि पर्दे का हुक्म केवल रसूल (सल्ल०) की पवित्र बीवियों के लिए था। दलील यह दी जाती है कि ऊपर दी हुई आयत में रसूल (सल्ल०) की पवित्र बीवियों को संबोधित किया गया है लेकिन यह सही नहीं है। उनके संबोधन से अर्थ सभी औरतों से है। इस बात को दूसरी उस आयत में साफ़ कर दिया गया है जिस में पूरी उम्मत (सम्प्रदाय) को संबोधित किया गया है– "ऐ नबी! अपनी बीवियों से भी कह दो और अपीन बेटियों से भी कह दो और तमाम मोमिन औरतों से कह दो– अपने चेहरों पर अपनी चादरें लटका लिया करें (सूरःएहज़ाब) इससे अधिक साफ़ और स्पष्ट हुक्म कोई और नहीं हो सकता।

एहराम की हालत में पर्दे का तरीका : आप को मालूम है कि हज के अवसर पर एहराम की हालत में औरत के लिए कपड़े को चेहरे पर लगाना जाइज़ नहीं, मर्द सिर नहीं ढक सकते और औरतें चेहरा नहीं ढक सकतीं। जब हज का मौसम आया और आंहज़रत (सल्ल०) अपनी पवित्र बीवियों को हज के लिए ले गए उस समय यह सुवाल पैदा हुआ कि एक तरफ तो पर्दे का हुक्म है दूसरी तरफ़ यह हुक्म है कि एहराम की हालत में कपड़ा मुंह पर न लगना चाहिये। हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि जब हम हज के सफ़र पर ऊँट पर बैठ कर जा रही थीं, जब सामने कोई अजनबी न होता तो अपना नक़ाब उल्टे रहने देतीं और हम अपने माथे पर एक लकड़ी लगाए हुए थे और जब कोई क़ाफ़िला या अजनबी आदमी दिखाई देता तो हम अपना नक़ाब उस लकड़ी पर डाल लेते ताकि वह नक़ाब चेहरे पर भी न लगे और जो मर्द सामने आएं उनका सामना भी न हो और यह बयान शायद सही बुख़ारी में मौजूद है। इससे मालूम हुआ कि एहराम की हालत में भी रसूल (सल्ल०) की पवित्र बीवियों ने पर्दे को नहीं छोड़ा।

फिर भी तुम तीसरे दर्जे के शहरी होगे : पश्चिमी देशों ने यह प्रोपगंडा करना शुरू कर दिया है कि मुसलमानों ने औरतों के साथ बड़ा ज़ालिमाना व्यवहार किया है कि उनको घरों में बन्द कर दिया। उनके चेहरों पर नकाब डलवाए और उनको एक कारटून बना दिया तो क्या पश्चिम के इस प्रोपगंडे के नतीजे में हम अल्लाह और अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के आदेशों को छोड़ देंगे? अगर उनके तानों के नतीजे में उनके कहने पर अमल कर लिया और औरतों को घर से बाहर निकाल लिया, उनका पर्दा भी उतार दिया, उनका दुपट्टा भी उतार दिया तो भी वह लोग तुम्हें वह सम्मान नहीं देंगे जो अपने लोगों को देते हैं। तुमने सिर पर पैर तक उनकी सब बात मान ली फिर भी तुम तीसरे दर्जे के शहरी रहोगे।

इज़्ज़त इस्लाम को इख़्तियार करने में है : याद रखों जो आदमी इसके लिए हिम्मत करके अपनी कमर कस लेता है वही आदमी दुन्या में अपनी इज़्ज़त भी कराता है। इज़्ज़त वास्तव में इस्लाम छोड़ने में नहीं बल्कि इस्लाम इख़्तियार करने में है। हज़रत उमरफ़ारूक (रजि०) ने फरमाया था।

"अल्लाह ने हमको जो कुछ इज़्ज़त दी है वह इस्लाम की बदौलत दी है, अगर हम इस्लाम छोड़ देंगे तो अल्लाह तआ़ला हमें इज़्ज़त के बजाए ज़िल्लत (अपमान) से हम किनार कर देंगे।

❐❐❐

अपने लेखकों से

- अपना लेख सरल, स्पष्ट तथा सुन्दर लिखिये।
- पन्ने के एक ही ओर लिखिये।
- आपका लेख सामाजिक, इतिहासिक या इस्लामिक हो।
- जो लेख कहीं छपवा चुके हों कृपया उसे न भेजें।
- कविजनों से अनुरोध है कि वह हमारी पत्रिका के लायक़ कविताएं तथा गीत आदि भेजें।

प्रश्न भेजने वालों से

- ऐसे विषय वाले प्रश्न न भेजें जिनमें उलमा में लम्बे समय से बड़ा मतभेद चला आ रहा है जिसे साधारण जन भी जानते हैं।
- हमारे उत्तरों को अपनी समस्याओं का हल समझें फ़तवा न समझें।

(सम्पादक)

इस्लामी इतिहास के आदर्श कारनामे

– डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

इस्लामी इतिहास चरित्र व आचरण के ऐसे उच्च नमूनों, विनम्रता और समाज सेवा के ऐसे–ऐसे उज्जवल कारनामों का एक अनमोल खज़ाना है जिसका कोई दूसरा उदाहरण मानव इतिहास में मिलना कठिन है। छुट–पुट घटनाओं से इतिहास नहीं बनता, परन्तु हमारा इतिहास उन आदर्श नमूनों से भरा पड़ा है और उन नमूनों से इतिहास की और जीवनियों की पुस्तकें भरी पड़ी हैं। हम इसी भंडार से कुछ बहुमूल्य मोती और कुछ हीरे–जवाहरात चुनकर प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं, जिसका विषय है "इस्लामी इतिहास के ताबिन्दा नकुकूश अर्थात आदर्श कारनामे"। हम अपने इन लेखों में न तो सारी उपलब्ध विषय सामग्री को समेट सकते हैं न उसका पूरा–पूरा हक़ अदा कर सकते हैं। लेकिन गर्व करने योग्य और प्रेरणा देने वाली कुछ घटनाओं से अपने ईमान को ताज़ा और अपने इस्लामी जीवन के सफर को गतिमान रखने के लिए शक्ति और साहस अवश्य प्राप्त कर सकेंगे।

तो फिर आइए, नबी (सल्ल०) की पाठशाला के वफादार और होनहार पहले छात्र, नबी की संगत के उच्च आदर्श, निष्ठा की मूर्ति, ग़ार के साथी, इस्लाम के प्रचार–प्रसार के लिए पग–पग में आप (सल्ल०) के सहयोगी और दीन के लिए अपना सब कुछ निछावर कर देने वाली महान आत्मा, नुबुव्वत के स्वभाव को पहचानने वाले, शरीअ़त के आदर्शों की रक्षा करने वाले और उनको जीवन में उतारने के लिए सर धड़ की बाज़ी लगा देने वाले और अपने लहू की अन्तिम बूंद तक निछावर कर देने को हर क्षण तत्पर, नबी की धरोहर के रक्षक और सरकारे दो आ़लम (सल्ल०) के बाद मुसलमानों का सहारा और उनकी डगमगाती किश्ती का खेवनहार, जिसने अपने ज्ञान एवं सूच–बूझ व प्रशासनिक योग्यता से केवल दो साल की अल्प अवधि में अविश्वसनीय सफलताएं प्राप्त करके, एक विशाल शक्तिशाली, स्थिर आदर्श व ऐतिहासिक युग का प्रारम्भ किया, जिससे मानवता को एक लम्बे समय तक सुख–चैन, आराम व संतोष व समृद्धि मिली। उस व्यक्तित्व का वर्णन करें। वह हैं इस्लाम के पहले ख़लीफा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) जिनके बारे में हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया था –

"मैंने जिस किसी को इस्लाम की दावत दी उसने सोच–विचार किया अबू बक्र के अतिरिक्त कि उन्होंने बिना किसी झिझक मेरी दावत को स्वीकार कर लिया" फिर फरमाया– "कोई ऐसा नहीं कि जिसने हम पर उपकार किया हो और हमने उसका प्रतिकार न चुका दिया हो, सिवाए अबू बक्र के, कि उनका हम पर बड़ा उपकार है, जिस का बदला अल्लाह ही देगा।"

हज़रत सिद्दीक अकबर जनाब अबू बक्र (रज़ि०) को बचपन से जवानी तक और बुढ़ापे में जिन लोगों ने देखा था, वे जानते थे कि पहले ख़लीफा हज़रत सिद्दीक अकबर (रज़ि०) नम्र दिल, दुसरों के दुख–दर्द को देखकर रो पड़ने वाले थे, किसी भी साधारण घटना पर उनकी पलकें भीग जाती थीं, मगर आइए उनके व्यक्तित्व का दूसरा रूप भी देखिए, जिसने हमारे इतिहास को चार चांद लगा दिए।

आप मदीना–ए–मुनव्वरा के अपने घर में हैं, अचानक आपको सूचना मिलती है कि उनके जीवन की सबसे प्रिय व बहुमूल्य हस्ती आक़ा पेशवा सरकारे दोजहां हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) इस संसार से विदा हो कर अपने वास्तविक स्वामी से जा मिले हैं। यह सूचना बिजली बन कर गिरी। तुरंत मस्जिदे नबवी में पहुंचे और वहां उपस्थित शौकाकुल भीड़ा की ओर ध्यान दिए बिना हज़रत आएशा (रज़ि०) के हुजरे में दाख़िल हो जाते हैं। चादर उठाकर अपने प्रिय मित्र और मार्गदर्शक सरकारे दो आलम (सल्ल०) की मुबारक पेशानी को चूमते हैं, जुबान से दो मूल्यवान शब्द निकलते हैं– "मेरे माँ–बाप आप पर कुर्बान हों, आप जीवित रहें तब भी उच्चतम और महानतम रहे और दुन्या से कूच कर गए तब भी बेहतर और शानदार हैं।"

(नोट : उम्मुल–मोमिनीन हज़रत आयशा (रज़ि०) आप (सल्ल०) की पवित्र पत्नी का नाम है आप (रज़ि०) हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की पुत्री थीं।)

फिर मस्जिदे नबवी की ओर रुख़ करते हैं। वहां का हाल ही कुछ कुछ दूसरा था। घटना ही ऐसी थी, न किसी को किसी को किसी का होश था, न किसी को किसी की ख़बर। हज़रत उमर फारुक़ (रज़ि०) की आवाज़ गूंजती है :

"ख़बरदार ! अगर किसी ने कहा कि

हुज़ूर (रज़ि०) दुन्या से चले गए तो उसकी गर्दन उड़ा दूंगा।"

हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) ठहरने या बहस करने के बजाए एक ओर खड़े हो जाते हैं और उनकी ज़बान से यह शब्द निकलते हैं :

"जो व्यक्ति मुहम्मद (सल्ल०) की उपासना करता था, वह सुन ले कि वे तो अल्लाह को प्यारे हो गए और जो अल्लाह की उपासना करता था तो वह अल्लाह जीवित है और कभी नहीं मरेगा।"

इसके बाद आपने कुर्आने पाक की आयत पढ़ी जिसका अनुवाद (तर्जुमा) यह है :

"और मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं तो क्या यदि वे मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं तो तुम उलटे पैर फिर जाओगे? और जो फिरेगा अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह शुक्र अदा करने वालों को जल्द बदला देगा।"

(सूरः आल–ए–इमरान–144)

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) के यह शब्द सुनते ही सहाबा की भीड़ सिद्दीक अकबर की ओर टूट पड़ती है। हज़रत उमर फारुक़ (रज़ि०) तलवार फेंक देते हैं और फ़रमाते हैं : "मुझे ऐसा लगता है कि यह आयत आज ही उतरी है।"

आइए ज़रा पलट कर बनी साद की चौपाल पर जारी पंचायत पर निगाहें डालें। अनसार जमा हैं, क़बीला ख़ज़रज के सरदार हज़रत साद बिन उबादा (रज़ि०) तक़रीर कर रहे हैं, लोग उनको सुनने के लिए झुण्ड के झुण्ड चले जा रहे हैं। हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को सूचना मिलती है। मामले की गंभीरता को देखते नबी (सल्ल०) के कफन–दफन का काम हज़रत अली (रज़ि०) पर छोड़ कर हज़रत उमर (रज़ि०) का हाथ पकड़े सक़ीफा बनी साद की ओर दौड़ पड़ते हैं रास्ते में हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) मिलते हैं, तो उनको भी साथ ले लेते हैं। सभा में पहुंच कर अत्यंत नर्मी से और सन्तुलित बात करते हैं। मुहाजिरों की इस्लाम स्वीकार करने में पहल और कुरैश के अरब में महत्व का उल्लेख करते हैं, उसके बाद अनसार को संबोधित करते हुए कहते हैं :

"अल्लाह ने आप को अपने दीन और अपने रसूल का सहयोगी बनाया और आप के इलाक़े में हिजरत का आदेश दिया। आप ही में से आपकी अधिकांश पत्नियां और सहाबा हैं, तो सबसे पहले हिजरत करने वालों के बाद आपसे ज़ियादा उच्च स्थान पर और कोई नहीं है। हम अमीर होंगे और आप मंत्री आप के मशविरे के बिना कोई काम नहीं किया जाएगा।"

इसके बाद आपने हज़रत उमर (रज़ि०) और हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) की ओर इशारा किया कि इन दोनों में से किसी एक के हाथ पर बैअत (आज्ञाकारिता की प्रतिज्ञा) कर ली जाए, मगर हज़रत उमर (रज़ि०) ने यह कहते हुए हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की ओर हाथ बढ़ा दिया कि खुदा की क़सम उम्मत में अबू बक्र (रज़ि०) जैसा कोई दूसरा व्यक्ति मौजूद हो तो किसी और के हाथ पर बैअत नहीं की जा सकती। इसके तुरंत बाद क़बीला औस के प्रमुख हज़रत बशीर बिन सअ़द (रज़ि०) ने हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के हाथ में हाथ दे दिया और फिर तो सारे लोग बैअ़त करने के लिए टूट पड़े। दूसरे दिन मस्जिदे नबवी में ख़िलाफ़ते नबवी की ज़िम्मेदारी आम सहमति से आपके सुपुर्द कर दी गयी।

लीजिए अब देखिए महानता व कार्यशैली और सूझ–बूझ के अद्भुत नमूने :

हुज़ूरे अकरम (सल्ल०) ने अपनी वफ़ात से पूर्व अपने चहीते सेवक के बेटे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) के नेतृत्व में रूमियों से जंग के लिए एक सेना तैयार की थी और मदीना मुनव्वरा से चलकर कुछ मील की दूरी पर "जर्फ़" नामक स्थान पर पहला पड़ावा किया। अचानक नबी करीम (सल्ल०) की सख़्त बीमारी की सूचना मिली, तो हज़रत उसामा (रज़ि०) के आगे बढ़ना उचित न समझा। नबी करीम (सल्ल०) की वफात से एक हंगामा खड़ा हो गया। कमज़ोर ईमान वाले क़बीले और कपटाचारी यह समझ कर कि अब रास्ता साफ़ है, दंगा–फ़साद व विद्रोह पर उतारू हो गये। ज़क़ात न देने की घोषणा कर दी गई। धर्म परित्याग की लहर नबुव्वत के दावेदारों के सशस्त्र हमलों की सूचनाओं से मदीना में साहसी सहाब किराम तक चिन्ता व डर में पड़ गए। परन्तु नबी के उत्तराधिकारी अडिक संकल्प, साहस व शौर्य का पहाड़ बने, एक–एक समस्या को हल करने के लिए उठ खड़े हुए।

आपने निःसंकोच घोषणा की उसामा (रज़ि०) की नेतृत्व में सेना अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ेगी। मदीना में हड़कम्प मच गया डर और भय छा गया। यदि यह सेना, जिसमें बड़े–बड़े सहाबा शामिल थे, जंग के लिए चली गयी तो क्या होगा ? हज़रत उमर (रज़ि०) जैसे साहसी वीर पुरुष ने भी हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) को सेना के कूच में कुछ विलम्ब करने का सुझाव दिया। यह सुनते ही हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) जलाल में आ गए और फ़रमाया : "उमर तुम उस सेना को रोकने के लिए कह रहे हो जिसके कूच करने का आदेश नबी करीम (सल्ल०) दे चुके थे ? खुदा की क़सम उसामा की सेना अवश्य कूच करेगी चाहे मैं मदीना मुनव्वरा में अकेला रह जाऊं और भेड़िए आकर मेरे शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर दें। उमर ! तुम इस्लाम से पहले अज्ञानता के काल में तो बड़े बहादुर और साहसी थे और इस्लाम में बुज़दिली और भय का प्रदर्शन कर रहे हो।"

मेरे प्रिय पाठको ! क्या दुन्या का इतिहास इन जैसी परिस्थितियों में साहस व बाहदुरी को कोई एक भी ऐसा उदाहरण पेश कर सकता है ?

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि०) ख़लीफ़ा चुने जा चुके हैं, उनकी सेना उस समय की दो बड़ी शक्तियों, रूम और फ़ारस को इस्लाम स्वीकार कर लेने की दावत देने के लिए कूच कर चुकी है। शासन की ज़िम्मेदारियां हैं, शाही तख़्त की कल्पना है, शासकीय तेज और महानता का ध्यान है, मुहल्ले की यतीम बच्चियां और कुछ विधवा महिलाएं निराश हो कर कह देती हैं : अबूबक्र तुम ख़लीफ़ा हो गए, अब हमारी बकरियों का दूध सुबह कौन दूहेगा? दूसरी सुबह वे उस समय आश्चर्यचकित रह गईं जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) हाथों में दूध का बर्तन लिए हुए यतीम बच्चियों और विधवा महिलाओं के घर का दरवाज़ा खटखटाते हैं।

यह लीजिए एक दूसरी शिक्षाप्रद और अनोखी घटना।

मदीना मुनव्वरा के एक बहुत दूर के मुहल्ले के कोने में एक झोपड़ी के अन्दर एक बे सहारा, बूढ़ी, अंधी विधवा रहती थी। बे सहारा। हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) रोज़ाना सुबह–सवेरे आकर उसके घर का ज़रूरी काम कर जाया करते थे। किसी तरह हज़रत उमर (रज़ि०) को उस अंधी औरत की मजबूरी और अकेलापन का पता चल गया। सेवा करने और सवाब जुटाने का बड़ा अच्छा अवसर था। सुबह–सुबह पहुंच गए। मगर देखते क्या हैं कि उस औरत के सब काम हो चुके हैं। निराश व दुखी मन से वापस आए, मगर यह जानने की चिन्ता रही कि आख़िर कौन है, जो उनसे पहले वहां पहुंच गया? एक दिन छुप कर बैठे तो क्या देखते हैं कि अबूबक्र (रज़ि०) आकर उसका काम कर रहे हैं। ख़िलाफ़त और उसकी ज़िम्मेदारियां भी आप को इस सेवा से न रोक सकीं। उनको देखकर हज़रत उमर (रज़ि०) पुकार उठे :

"आप ही हैं मेरी जान की कसम आप ही हैं।"

अन्त में इस्लामी इतिहास के उन जैसे आदर्श और विचित्र पात्र की एक अनोखी घटना और भी देखिए।

प्रथम ख़लीफ़ा अपनी आजीविका के लिए कपड़े का व्यापार करते थे। ख़िलाफ़त की दूसरी सुबह हर दिन की तरह कपड़े का गट्ठर लिए हुए बाज़ार की ओर चले। रास्ते में हज़रत उमर (रज़ि०) की भेंट हुई, पूछा–अमीरुल मोमिनीन ! कहां जा रहे हैं ? फ़रमाया बाज़ार ! उन्होंने कहा: "ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारी के साथ यह संभव नहीं। वापस आए और सहाबा से मशविरा किया और ख़लीफ़ा के लिए वज़ीफ़ा निर्धारित किया गया।

एक प्रश्न के अनुसार वज़ीफ़े की रक़म केवल बीस दिरहम थी, जिसमें मुश्किल ही से गुज़ारा होता था। परन्तु उन्होंने उसे प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया। अपने मृत्यु के समय अपने बेटे को वसीयत की: मैंने ख़िलाफत के दौरान जो रकम वजीफे के रूप में बैतुलमाल (सरकारी कोष) से ली है, उसे मेरी ज़मीन बेचकर उस से मिलने वाली रक़म से वापस बैतुलमाल में जमा करा देना।

सतर्कता, ईशभय और कर्तव्य प्रायणता, इन सबका यह वह उच्च उदाहरण है मानव इतिहास उन जैसा कोई दूसरा उदाहरण प्रस्तुत करने से पूरी तरह असमर्थ है।

❑❑❑

नवीन प्रकाशन

– इदारा

पुस्तक का नाम : **प्रकाश स्तम्भ**

पृष्ठ : 223, साइज़ 18 × 22/8 मूल्य रु० : 60

लिखाई, छपाई, काग़ज़ : बढ़िया

लेखक : मौलाना, डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

उर्दू से हिन्दी अनुवादक : सादिक धामपुरी

यह सोचकर मन चकित रह जाता है कि इस संसार का बनाने वाला कितना निपुण, कितना पूर्ण तथा कितना योग्य है, केवल एक प्राणी मनुष्य की कुछ ही बातों पर ध्यान दे लें। कितने रंग, कितने रूप, कितनी भाषाएं, कितनी ध्वनें कि बुद्धि उठा नहीं पाती, इसी प्रकार मानव चरित्र पर ध्यान दें तो कोई चोर है, कोई डाकू है कोई आतंकवादी है, कोई क़ातिल है कोई अत्याचारी है तो कोई अपने भाई के लिए सहानुभूति रखता, मानव सेवा के लिए हर समय तय्यार रहता है, भूखा रहकर भूखों को खिलाता, पुराना पहन कर दूसरों को पहनाता है, शासन होते हुए भी भूखा रहता है रातों को गश्त लगाता है निःसंदेह ऐसे महापुरुषों के जीवन मानवता के जीवन के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। डॉ० मु० इज्तिबा नदवी साहिब ने इतिहास के पन्नों से ऐसे ही प्रकाशित स्तम्भ इस पुस्तक में एकत्र कर दिये है, जिनके पढ़ने से यही नहीं कि ज्ञान में वृद्धि होगी अपितु ईमान में वृद्धि तथा सदाचारी जीवन बिताने में बड़ा सहयोग मिलेगा। ❑❑❑

वह नवजवान जो अन्तिम संदेष्टा बना

— हबीबुल्लाह आज़मी

अरब के एक प्रतिष्ठित, सभ्य और उच्च परम्पराओं वाले कुटुम्ब में एक सुशील अनोखा बच्चा यतीमी की छाया में पैदा होता है। एक शरीफ़ दाई का दूध पी कर देहात के स्वस्थ माहौल में पलता है। बकरियां चराकर क़ौम को सदमार्ग पर ले जाने का प्रशिक्षण प्राप्त करता है। बचपन ही में यह अनोखा बच्चा माँ के स्नेह व छत्रछाया से वंचित हो जाता है। दादा की छत्रछाया किसी प्रकार माँ–बाप की कमी को पूरा करने वाली थी लेकिन यह सहारा भी छीन लिया जाता है। अन्त में चचा उसका पालन–पोषण करते हैं। गोया यह सांसारिक सहारे से वंचित होकर एक वास्तविक आक़ा के सहारे इंसानियत को सच्चे मार्ग पर चलाने की तैयारी हो रही है।

जवानी की चौखट पर क़दम रखने तक यह अनोखा बच्चा साधारण बच्चों की तरह खेलंडरा और शरीर बच्चा बनकर सामने नहीं आता बल्कि बूढ़ों जैसी गंभीरता से सुसज्जित नज़र पड़ता है। जवान होता है तो अतिअधिक दूषित माहौल में पलने के बावजूद अपनी जवानी को बेदाग़ रखता है। इश्क, नज़रबाज़ी और दुष्कर्म जहां नवजवानों के लिए गर्व का लक्षण बना हो वहां अपनी नज़र को एक क्षण भी मैला नहीं होने देता। जहां गली–गली शराब बनाने की भट्टियां लगी हों और घर–घर में मधुशाला (मयख़ाना) चल रहा हो और जहां हर महफ़िल में मदिरा (शराब) के क़दमों पर दीन–ईमान निछावर किया जा रहा हो और जहां अपने मदिरा पान के चर्चे गर्व के साथ शेर–ओ–शाएरी में बयान किये जा रहे हों वहां यह पृथक स्वभाव का नवजवान क़सम खाने को भी एक बून्द शराब ज़बान पर नहीं रखता। जहाँ जुआ राष्ट्रीय मनोरंजन था, वहाँ इस नवजवान ने पांसे की मुद्रा को हाथ तक नहीं लगाया। जहां के कलचर में कहानी और संगीत रची–बसी थी वहां यह अनोखे स्वभाव का नवजवान आमोद–प्रमोद से बिल्कुल अलग–थलग रहा और दो बार ऐसे अवसर पैदा हुए भी कि यह नवजवान ऐसी साज़ व संगीत की महफ़िल में जा पहुंचा लेकिन जाते ही ऐसी नींद आई कि उसके सुनने और देखने से दामन पवित्र रहा। जहां बुतों के सामने माथा टेकना धर्म था वहां ईब्राहीमी वंश के इस पवित्र नवजवान ने अल्लाह (परमेश्वर) के सिवा किसी और के सामने सिर नहीं झुकाया। जहां ईब्राहीम की औलाद ने इब्राहिमी पंथ को बिगाड़ कर दूसरी ख़राबियों के साथ काबा की परिकर्मा नंगे करने की एक गंदी प्रथा चला ली थी, वहां उस लज्जवान नवजवान ने कभी इस नंगी प्रथा का अनुसरण नहीं किया। जहां युद्ध एक खेल था और इंसानी ख़ून बहाना एक तमाशा था, वहां इंसानियत की पताका फहराने वाला नवजवान ऐसा था जिसके दामन पर ख़ून की एक छींट न पड़ी थी। नवजवानी में इस नवजवान को फ़िजार नामी महायुद्ध में भाग लेने का अवसर पेश आया लेकिन फिर भी किसी इंसानी जान पर खुद हाथ नहीं उठाया।

इस पवित्राचारी नवजवान की अभिरुचि (दिलचस्पियाँ) देखिये कि ठीक बहक जाने वाली उम्र में अपनी सेवाएं अपने सहविचार वाले नवजवानों के सुधारवादी संगठन को अर्पित करता जो "हलफुलफुजूल" के नाम से निर्धनों और उत्पीड़ितों की सहायता करने के लिए बनाया गया था। इसके सदस्यों ने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रतिज्ञा की थी।

आप (सल्ल०) नबूवतकाल में इसकी याद ताज़ा करते हुए फ़रमाया करते थे कि –

"इस प्रतिज्ञा के मुकाबले में यदि मुझको सुर्ख़ रंग के ऊँट (अरब में जिसे बहुत मूल्यवान समझा जाता है) दिये जाते तो मैं इससे न फिरता और आज भी ऐसे अनुबन्ध के लिए मुझे बुलाएं तो मैं हाज़िर हूँ।"

फिर इस नवजवान की विशेषता और योग्यता का अन्दाज़ा इससे कीजिए कि क़ाबा के निर्माण के अवसर पर हज़रे अस्वद (काला पत्थर जो क़ाबा की दीवार पर लगा है) को लगाने के मुआमले में मतभेद होते ही तलवारें मियानों से निकल आईं लेकिन भाग्य के इशारे से इस समस्या को सुलझाने का श्रेय इसी नवजवान को प्राप्त होता है। इन्तहाई तनाव और भावनात्मक वातावरण में यह शान्ति व सुलह का दूत एक चादर बिछाता है और उस पर वह पत्थर उठा कर रख देता है और फिर दावत देता है कि तमाम क़बीलों के सदस्य मिल कर इस चादर को उठाएं। चादर जब उस स्थान पर पहुंच जाती है जहां पत्थर लगाना है तो वह नवजवान उस पत्थर को उठाकर उसकी जगह पर लगा देता है। फ़साद का महौल ख़त्म हो जाता है और चेहरे खुशी और संतोष से चमक उठते हैं।

यह नवजवान रोज़गार के मैदान में क़दम रखता है तो व्यापार जैसा पवित्र

और सम्मानजनक पेशा अपने लिए पसंद करता है। कोई बात तो इस नवजवा में थी कि अच्छे-अच्छे पूंजीपतियों ने यह पंसद किया कि यह नवजवान उनकी पूंजी हाथ में ले और कारोबार करे। फिर साइब, क़ैस बिन साइब मख़ज़ूमी, हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) और जिन दूसरे लोगों को इस नवजवान के शुद्ध लेन-देन का तजुर्बा हुआ उन सब ने उसे "ताजिरे अमीन" (विश्वसनीय व्यापारी) की पदवी प्रदान की।

फिर देखिये कि यह नवजवान जीवन साथी का चुनाव करता है तो मक्का की चंचल व चपला नवयुवतियों के स्थान पर एक ऐसी महिला से रिश्ते को पसंद करता है जिसका ख़ानदान, आचरण और स्वभाव उच्च कोटि का है। उसकी यह पसंद उसकी सोच उसकी आत्मा उसके स्वभाव और आचरण की गहराइयों को पूरी तरह प्रकट कर देती है। पैग़ाम (विवाह का प्रस्ताव) स्वयं वही महिला- हज़रत ख़दीजा- भेजती हैं जो ज़माने के अतुल्य नवजवान के आचरण से प्रभावित होती हैं और यह नवजवान उस पैग़ाम को सहर्ष स्वीकार करता है हालांकि हज़रत ख़दीजा की उम्र उस समय चालिस वर्ष की थी आप (सल्ल०) की उम्र केवल 25 थी।

कहावत है कि एक व्यक्ति की पहचान उसके दोस्तों से होती है। (A man is known by the company he keeps) आइये देखें इस अरबी नवजवान के दोस्त लोग कैसे थे। आप (सल्ल०) की सबसे गहरी दोस्ती हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) से थी जो उम्र में उनके बराबर और उन्हीं जैसा स्वभाव भी रखते थे। अन्य दोस्तों में हकीम बिन हज़्ज़ाम जो हज़रत ख़दीजा के चचेरे भाई थे और हरम (काबा) के रिफ़ादा (हाजियों के सेवक) के पद पर कार्यरत थे। दोस्तों में एक दोस्त ज़माद बिन सअ़लबा थे जो चिकित्सा और जर्राही (आपरेशन) करते थे। उनके मित्र मण्डली में कोई भी दुर्आचारी, दुष्टस्वभाव, नापसंदीदा और कमीने स्वभाव का आदमी दिखाई नहीं देता है।

फिर देखिये कि यह यक़्ता-ए-ज़माना नवजवान घर बार की देखरेख, व्यापार और सांसारिक व्यवस्था से तनिक भी फ़ुर्सत का समय मिलता है तो उसे मनोरंजन और खेल तमाशे में व्यतीत नहीं करता, उस सैर-सपाटे और महफ़िल जमाने और गप लड़ाने में नहीं खपाता, उसे सो-सो कर व्यर्थ व्यतीत नहीं करता बल्कि सारे अमोद-प्रमोद को तज कर "हिरा" की गुफ़ाओं में एक खुदा की उपासना अपने पवित्र स्वभाव के निर्देशन में करता है और मानव जीवन के भेदों को पालेने, सृष्टि रचना के उद्देश्यों को समझने के लिए मननचिंतन करता है और अपनी क़ौम और पूरे मानव समाज को निम्नता (पस्ती) से निकाल कर फ़िरिश्तों के मर्तबे पर लाने के उपाय सोचता है।

होने वाला अन्तिम संदेष्टा (आख़िरी नबी) इस जीवन चित्र के साथ कुरैश की आँखों के सामने और उनके मक्की समाज की गोद में पलता है जवान होता है और पुख़्तगी के मर्तबे को पंहुचता है। क्या यह जीवन चित्र पुकार-पुकार कर नहीं बता रहा है कि यह एक निहायत असाधारण महिमा रखने वाला व्यक्ति है ?

यही परमेश्वर (खुदा) का अन्तिम संदेशवाहक (नबी) है। वह उन तमाम नबियों संदेशवाहकों को जिसे अल्लाह (ईश्वर) ने संसार के हर क्षेत्र में इससे पहले भेजा था उनकी पुष्टि करता है और समय के अन्धकार में उनकी लाई हुई शिक्षा और सत्य जो धूमिल और भ्रमात्मक हो गया था उसको असली रूप में अल्लाह के कलाम कुर्आन पाक के माध्यम से पेश करता है। यदि हमें सत्य की तलाश है, मोक्ष (निजात) प्राप्त करना है, परलोक में सफलता हासिल करनी है, संसार और मृत्यु के उपरान्त सुख-शान्ति प्राप्त करनी है तो उन पर उतरे हुए अल्लाह के संदेश (ईशवाणी) और उनकी जीवनी का अध्ययन करना चाहिए और उस के अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए।

(उर्दू से अनुवाद)

□□□

हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु के कुछ कथन

1. *फ़रमाते थे कि बन्दे को चाहिये कि अपने रब के सिवा किसी से उम्मीद न रखे, और अपने गुनाहों के सिवा किसी चीज़ का ख़ौफ़ न करे।*
2. *फ़रमाते थे कि जो किसी बात को न जानता हो उस को सीखने में शर्म न करे। और जब किसी से ऐसी बात पूछी जाए जिसे वह न जानता हो तो निःसंकोच कहे : अल्लाह बेहतर जानता है।*
3. *फ़रमाते थे जिसने अपने आप को पहचान लिया उसने अपने रब को पहचान लिया।*
4. *फ़रमाते थे उस शख़्स को न देखो जिस का कलाम (कथन) है, बल्कि खुद कलाम को देखो।*
5. *फ़रमाते थे कि लोग सो रहे हैं जब मरेंगे तब जागेंगे।*
6. *फ़रमाते थे हर मनुष्य अपनी ज़बान के नीचे छिपा हुआ है।*

□□□

स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका

(दूसरी किस्त)

– प्रो. शान्तिमय राय (कोलकता)

संघर्ष की यह उफान सैनिक क्रान्ति की उमड़ी लहर के साथ धूमिल हो गई और इसने भारत में अंग्रेजी शासन को हिला कर रख दिया। सन् 1872 में अण्डमान में लार्ड म्यो की हत्या के साथ यह संघर्ष अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। हत्यारा शेर अली जोकि एक वहाबी था, हँसते–हँसते फाँसी के तख़्ते पर झूल गया कुछ ही महीने पहले 1871 में एक वहाबी क्रान्तिकारी अब्दुल्ला को न्यायमूर्ति नारमन की हत्या के आरोप में फाँसी दी गयी थी। सन 1831 में एक बंगाली देशभक्त रफ़ीक़ मण्डल जो नील की खेती करने वालों के विरुद्ध छेड़ी जाने वाली पहली क्रान्ति का अगुवाकार था, का उल्लेख कई जगहों पर मिलता है।

पश्चिमी बंगाल में बारासाल के निकट (24 परगना) टीटू मियां उर्फ टीटू मीर ने 1832 में ज़मींदारों के उत्पीड़न के विरुद्ध एक सफल लड़ाई लड़ी और अंग्रेजी सेना के विरुद्ध युद्ध का एक शानदार रिकार्ड कायम किया। बंगाली लोक गीतों में उन्हें आज भी भारत की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और अमर शहीद के रूप में याद किया जाता है।

सैनिक क्रान्ति के दमन के साथ अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध संघर्ष का एक अध्याय समाप्त हुआ। पश्चिमी शिक्षा से प्रभावित तथा आधुनिक राजनीतिक विचारधारा से ओत–प्रोत मध्य युग के हिन्दू 1857 तक ब्रिटिश शासकों का साथ दे रहे थे। भारतीय राष्ट्रवादिता, जो 1860 तक जन्म ले चुकी थी, में हिन्दू संस्कृति का रंग व रूप दोनों शामिल था। हिन्दूयुक्त राष्ट्रवादिता की नई नीति से मुस्लिम समुदाय ने अपने को अलग रखा। उनका अब भी विचार था कि ये नये राष्ट्रवादी ब्रिटिश साम्राज्य के सहयोगी हैं। सन् 1870 से 1905 तक की इस अवधि में सामन्तशाही विरोधी संघर्ष के पुराने जागीरदाराना स्वरूप से राष्ट्रव्यापी संघर्ष में बदलने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इस अवधि में दो महत्वपूर्ण घटनाओं ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन पर अपनी ऐतिहासिक छाप डाली। प्रथम यह कि हिन्दू राष्ट्रवादिता की चेतना ने शिक्षित हिन्दू समुदाय के विचारों पर गहरा प्रभाव डाला। यह राष्ट्रवादिता राजाराम मोहन राय अथवा बुद्धिजीवियों द्वारा प्रतिपादित राष्ट्रवादिता से बिल्कुल भिन्न है।

राजाराम मोहन राय की राष्ट्रवादिता पूरब और पश्चिम के दर्शनशास्त्र के श्रेष्ठतम अंशों का मिश्रण थी। यह राष्ट्रवादिता जो फ्रांसिसी क्रांति के परिप्रेक्ष्य में प्रस्फुदित हुई निश्चय ही अपने विकास की प्रक्रिया में सामाजिक क्रांति और सार्वभौमिक दृष्टिकोण वाले विचारों को समोये रही होगी। भारत के भावी आन्दोलन ने अपने को पूर्णतयः पुराने दिनों की आदर्शवादिता के सिपुर्द कर दिया और इसका झुकाव भारतीय जीवन के पुराने चक्र की ओर रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी के छठे दशक में राजनारायन बोस के नेतृत्व में युवा बुद्धिजीवियों ने हिन्दू मेले का शुभारम्भ किया। आन्दोलन शुरू करने में अंग्रेज ओरियन्टलिस्ट्स ने पहल की क्योंकि उनकी धारणा थी कि भविष्य प्राचीन भारत की कीर्तियों में निहित है। वहाबियों का सामन्तशाही विरोधी संघर्ष ब्रिटिश साम्राज्य के प्रारम्भिक काल की उल्लेखनीय घटना है। इस काल में हिन्दू बाबुओं और बिगड़े नवाबों में अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रसार हुआ और उनके सामन्तशाही विरोधी संघर्ष के विरोध का अन्धकारमय काल भी यही था। सैनिक क्रान्ति के बाद और मुसलमानों के सामन्तशाही विरोधी संघर्ष के पतन के साथ हिन्दू सांस्कृतिक पुनरोत्थान के राष्ट्रवादी आदर्शों को आगे बढ़ने का मौका मिला। स्वाभाविक था कि नये पराजित सामन्तशाही विरोधी मुस्लिम योद्धा तत्काल राष्ट्रीयता की इस नई क़िस्म को पसंद नहीं कर पाये। दूसरी ओर ब्रिटिश राज्य इस नवजात राष्ट्रीयता के झुकाव से भयभीत और सचेत हो गया। बंगाल के युवा शिक्षित और महत्वाकांक्षा बुद्धिजीवियों ने असन्तुष्ट भारतीयों में पूर्वी व दक्षिणणी भारत के किसानों में व्याप्त असंतोष से उठी आवाज़ के साथ सांठगांठ कर ली और उन्होंने 1876 में आनन्द मोहन बोस सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के नेतृत्व में एक राजनीतिक पार्टी बनाई जिसका नाम इंडियन एसोसिएशन रखा। ब्रिटिश सरकार ने 'एलन आक्टेवियन ह्यूम' की पहल पर इस बढ़ते हुए भारी असन्तोष को कम करने के लिए कदम उठाये और इसी में सन 1885 में इंडियन नेशनल कांग्रेस के जन्म का ऐतिहासिक महत्व निहित है।

ब्रिटिश सरकार ने मुस्लिम रईसों को अंग्रेजी सीखने की और खींचने में, जिसकी

शुरूआत सर सैय्यद अहमद ने की थी, मदद दी और इस प्रकार 1860 से 1905 के बीच शिक्षित मुस्लिम बुद्धिजीवियों का एक वर्ग अंग्रेज़ अधिकारियों के सीधे प्रभाव में उभर कर सामने आया। वे कांग्रेस द्वारा रखी गयी मांगों तथा उभरती हुई राष्ट्रीयता के विरुद्ध ब्रिटिश सरकार के मददगार बन गये। उन्नीसवीं शताब्दी के शुरू में जो पहले ब्रिटिश साम्राज्य के विरोधी थे उसके सहयोगी बन गये और जो उसके समर्थक थे वे विरोधी बन गये।

मुस्लिम पुनर्जागरण केवल अंग्रेजी सीखने तक ही सीमित था, इस्लाम की अचूक परिधि को पार करने के लिए उन्होंने सामान्यतः कोई सैद्धांतिक लड़ाई नहीं लड़ी किन्तु यह सच नहीं है कि इस बारे में सिरे से कोई आन्तरिक खैंचतान थी ही नहीं। मुस्लिम समुदाय के जियाले सपूत, जो अपने ही समुदाय की भ्रांति तथा अवरोध की परवाह किये बिना मैदान में आगे आये और जिन्हें तुरंत मिलने वाले साम्प्रदायिक लाभ की अपेक्षा भारत की आज़ादी की लड़ाई को ऐतिहासिक बढ़ावा देने की अधिक चिन्ता थी, निश्चय ही इतिहास में अपना एक अलग ही मुकाम रखते हैं। सामान्तशाही विरोधी राष्ट्रीय आज़ादी की लड़ाई की पहली लहर उस गंभीर अशान्ति के रूप में सामने आई जो 1905 में बंगाल के विभाजन के प्रश्न को लेकर फूट पड़ी थी।

बारीसाल राजनीतिक अधिवेशन की जिस व्यक्ति ने अध्यक्षता की थी और जिसके विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन का नारा दिया गया था, वह एक मुस्लिम था, कलकत्ता के विख्यात वकील अब्दुल्ला रसूल। उन्होंने किसी भी बलिदान के लिए तैयार होकर इस आंदोलन में भाग लिया। बंगाल के विभाजन के विरोध में आन्दोलन जिसे लोग 'स्वदेशी आन्दोलन' के नाम से जानते है, से सम्बन्धित सरकारी पुरातत्व विभाग के दस्तावेज़ साबित करते हैं कि सारे पूर्वी बंगाल के विभिन्न जिलों में मुस्लिम बुद्धिजीवियों की अच्छी–खासी संख्या ने हिन्दुओं के साथ बंगाल के विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन में हिस्सा लिया। जिलेवार जो संख्या दी गयी है उसके अनुसार इस संबंध में की गयी जनसमस्याओं की संख्या मेमनसिंह में 110, ढाका में 75, कोमिल्ला में 65, बारीसाल में 80, चिटागांग में 30, नोवाखाली में 70, कलकत्ता में 200 और फरीदपुर में 50 थी। इन सभाओं में बड़ी संख्या में मुसलमान जमा होते और मुस्लिम लीडर्स भाषण देते। इन वक्ताओं में वकीलों, मुख़्तारों, अध्यापकों और तालुक़ेदारों की बड़ी संख्या होती थी।

मुस्लिम मध्ययम वर्ग के इस दृढ़ संकल्प में भयभीत होकर अंग्रेजी सरकार ने साम्प्रदायिक इनाम के रूप में बढ़ी हुई हिन्दू–मुस्लिम एकता को कम करने के लिए, संवैधानिक सुधार एक्ट 1909 (मिन्टो मार्ले सुधार) में एक अनुच्छेद और जोड़ा। इस एक्ट ने संघर्ष के विरोधी मुसलमान रईसों को मतवाला बना दिया।

किन्तु उभरते हुए मुसलमान बुद्धिजीवी इससे सन्तुष्ट नहीं थे। उदार पंथियों के नेता मोहम्मद अली जिन्ना को अब भी कांग्रेस में सम्मानित नेताओं में से एक समझा जाता था। जिस समय प्रिन्स आग़ा ख़ाँ और लार्ड सिन्हा अंग्रेजों के प्रति वफादारी दिखाने में एक–दूसरे का मुकाबला कर रहे थे, अट्ठारह साल के एक नवजवान खुदीराम बोस को मुज़फ़्फ़र नगर कोर्ट ट्रायल में 1909 में फाँसी दी गयी थी। उनकी गिरफ़्तारी से पहले उन्हें एक मुसलमान औरत ने शरण दी थी, यह औरत प्रख्यात क्रान्तिकारी नेता डॉ० भूपेन दत्ता के साथी मौलवी अब्दुल वहीद की बहन थी। युद्ध के दौरान चर्चित दीदी यही मुसलमान औरत थी। इस बहादुर औरत ने बहुत बड़ा खतरा मोल लिया और फांसी से पहले तक बराबर खुदीराम की ख़ैरियत मालूम करते रहने में तनिक भी नहीं हिचकिचाई।

आने वाले वर्ष योरप में लड़ाई के दिन थे। भारत की क्रान्तिकारी पार्टियां जटिन मुखर्जी और डॉ० राम बिहारी के नतृत्व में पूरे भारत में सशस्त्र विद्रोह के लिए अपना संगठन मज़बूत कर रही थीं। उत्तरी भारत तथा अन्य स्थानों पर अनेक युवा मुसलमानों ने सामाजिक तथा राजनीतिक कठिनाइयों के बावजूद संघर्ष की तैयारी में इस क्रांतिकारी आन्दोलन के उद्देश्य निर्धारित करने में तनमन से अपना सहयोग दिया। उनमें से कुछ ने मुस्लिम खुफिया सोसाइटियों का गठन किया। मध्य पूर्व में अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध कायम अनेक क्रान्तिकारी खुफिया सोसाइटियों से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद का सम्बन्ध था। बंगाल में जुगान्तर के क्रान्तिकारियों से उनका सबसे पहले सम्पर्क श्याम सुन्दर चकवर्ती के माध्यम से हुआ।

मध्य–पूर्व, अफगानिस्तान, पेशावर और उत्तरी भारत का भ्रमण करने के बाद आज़ाद ने कलकत्ता में "हबीबुल्ला" नाम की एक क्रान्तिकारी सोसाइटी का गठन किया। बाद में बंगाल और उसके बाहर के मुसलमान देशभक्तों और बुद्धिजीवियों की एक बड़ी संख्या को उन्होंने इसी संगठन द्वारा प्रभावित किया। 1918 के बाद भी वह एक–साथ "असहयोग आन्दोलन" तथा "हिज्रत आन्दोलन" में शामिल हुए और अनेक क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े रहे। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें जुगान्तर क्रान्तिकारी पार्टी से मिले होने के कारण "ख़तरनाक तत्व" के रूप में चिन्हित कर रखा था।

सरकारी दस्तावेज़ों में प्रथम विश्व युद्ध के समय एक अन्य मुस्लिम क्रान्तिकारी सैय्यद उबैदुल्ला का नाम मिला है।

उबैदुल्ला सूबा–ए–सिन्ध के रहने वाले थे। जिन्होंने दिल्ली, पंजाब और नार्थ वेस्ट फ्रन्टियर के सूबों में क्रान्तिकारी पार्टियों का गठन किया और अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष में अफ़ग़ान सरकार की मदद की अपील की। कई कारणों से अफ़ग़ान सरकार के लिए इसका जवाब देना सम्भव न था; तब उबैदुल्ला ने सरकार से अपील की वह ब्रिटिश सरकार से अपने समर्थन को समाप्त कर दें और ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध भारतीय देश भक्तों के संघर्ष में उनकी मदद करे। इस बीच उन्होंने जर्मन तथा तुर्की सरकार से सम्पर्क स्थापित कर पहली "अस्थायी आज़ाद हिन्द सरकार" की स्थापना की। राजा महेन्द्र प्रताप इस सरकार के अध्यक्ष और प्रोफेसर बरकतुल्ला प्रधानमंत्री बने। इस क्रांतिकारी पार्टी ने काबुल, अंकारा, दमिश्क और काहिरा में कुछ खुफिया मरकज़ (सेन्टर) क़ायम किये और बर्लिन कमेटी के सहयोग से एक विद्रोह छेड़ने का प्रयास किया। बसरा और सुदूरपूर्व में सशस्त्र विद्रोह के पीछे भी इनका हाथ था और हम्माद अली उन मुसलमान क्रान्तिकारियों में से थे जिनके नाम 1916 की मशहूर "रेशमी रूमाल की साजिश" से सम्बन्धित दस्तावेज़ों में आये हैं। इस बगावत में मौलाना महमूद हसन आगे–आगे रहने वाले लीडरों में से एक थे। उन्होंने मौलवी अन्सारी और उबैदुल्ला के साथ उस समय के तुर्की गवर्नर ग़ालिब पाशा के सक्रिय सहयोग से मध्य पूर्व के मुस्लिम सिपाहियों में एक भरपूर अभियान शुरू किया। हैदराबाद के मियां अंसारी और शेख़ अब्दुर्रहमान उनसे मिल गये। लगभग सभी पत्र जो रेशम पर खुफिया कोड में हिजाज़ में महमूद हसन को लिखे गये थे ब्रिटिश सरकार द्वारा पकड़ लिये गये।

मक्का के एक शरीफ़ के विश्वासघात के कारण ग़ालिब पाशा और दूसरे मुस्लिम क्रान्तिकारी गिरफ्तार कर लिये गये जिस की वजह से यह साज़िश नाकाम हो गयी। सेना के बहुत से लोग और भारत के क्रान्तिकारी मुस्लिम विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या गिरफ़्तार कर ली गयी और उन्हें लम्बी अवधि की कठोर सज़ायें दी गयीं।

(क्रमशः....)

अनुवाद : मो० हसन अंसारी

□□□

पृष्ठ 38 का शेष

क्यों बीमार है आपका कम्प्यूटर?

लिए नये साफ़्टवेअर आए हैं ?

लेकिन इन्टरनेट की बढ़ती हुई तेज़ रफ़्तारी के कारण डर है कि अधिक से अधिक कम्प्यूटर प्रयोग करने वाले वाइरसों और केचुओं से प्रभावित होंगे, मुख्यकर वह जो इन्टरनेट हर समय खुला रखते हैं। हैंकरों की अधिकांश संख्या हमेशा खुले कनक्शन वाले कम्प्यूटरों पर हमला करती हैं क्योंकि वह देखना चाहती हैं कि उनकी ईजाद (आविष्कार) मशीन पर क्यों कर प्रभाव डालती हैं ? सफलता पर वह अपनी दुष्ट रचना कम्प्यूटर की दुन्या में बेलगाम छोड़ देती हैं।

यद्यपि वाइरसों और केचुओं से बचाव के लिए एक दिन ऐसा भी आएगा जब कम्प्यूटर में मौजूद साफ़्टवेअर पैचेज़ (Patches) स्वतः अपने आपको अपडेट कर लेंगे जैसे आजकल कई ऐंटी वाइरस प्रोग्राम स्वतः अपडेट हो जाते हैं।

केचुओं और वाइरस का संक्षिप्त इतिहास

वर्ष 1949–स्वतः नक़ली प्रोग्रामों का सिद्धान्त पहली बार सामने आया 1984-घरेलू कम्प्यूटरों के पहले वाइरस अर्थात ऐपुल वाइरस 1,2,3 सामने आए। यह वाइरस ऐपुल 11 आपरेटिंग सिस्टम में मिले और जाली कम्प्यूटर गेम्स के द्वारा टेक्सास ए ऐण्ड एम के मध्यम से फैले। 1988-सबसे अधिक सामान्य वाइरस युरोसलम से रचा गया। यह वाइरस हर महीने की तेरह तारीख़ को सक्रिय होता है। 1990-अमरीकी कम्पनी सम्टेक्स ने नार्टन ऐंटी वाइरस बाज़ार में बिकरी के लिए पेश किया यह एक बड़ी कम्पनी की ओर से पेश किया गया पहला ऐन्टी वाइरस प्रोग्राम था। 1991-सामान्य कम्प्यूटरों में पहला बाहुल रूपी वाइरस टेकोलासा (TECHOLASA) सामने आया। बाहुल रूपी वाइरस को स्कैनर साधारणतः पहचान नहीं पाता क्योंकि यह हर समय अपनी ज़ाहिरी शक्ल तब्दील कर लेते हैं। 1992-तहक़ीक़ (अनुसंधान) से पता चला कि कम्प्यूटर की दुन्या में 1300 वाइरस मौजूद हैं। यूं दिसम्बर 1990 से 420 गुना वृद्धि होई। माइकिल एंजिलों (MICHELL-ANGEELO) वाइरस सामने आया। ख़्याल था कि छः मार्च को पचास लाख कम्प्यूटर इससे प्रभावित होंगे तथापि केवल पांच से दस हज़ार प्रभावित हुए। □□□

ख़ुदा को पा नहीं सकता ख़ुदा की ज़ात का मुन्किर न जब तक दिल से नक्शे ना तमामी दूर हो जाए ।।
ख़ुदा वह है कि जिसकी अज़मतो जबरूत के आगे हर इन्साँ सज्दा करने के लिये मज्बूर हो जाए ।।

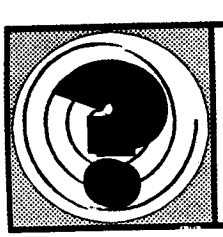

आपकी समस्याएँ और उनका हल

- मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

प्रश्न– किसी के ज़िम्मे मस्जिद की रक़म आदि बाक़ी हो तो क्या मस्जिद का मुतवल्ली (ज़िम्मेदार) उसे माफ़ कर सकता है।

उत्तर–मुतवल्ली को माफ़ करने का अधिकार नहीं है।

प्रश्न–सैलाब (बाढ़) की वजह से मस्जिद या मदरसा को नुकसान पहुंच जाए तो मस्जिद व मदरसा के लिए सरकार से ऋण अर्थात कर्ज़ लेना कैसा है ?

उत्तर–सरकारी ऋण (कर्ज़) जिसमें सूद देना पड़ता है उसका लेना जाइज़ नहीं।

प्रश्न– मस्जिद के सिलसिले में एक शख़्स कह रहा है कि मस्जिद के लिए उस पर इमारत का होना शर्त है बिना इमारत के खुली जगह सिहन (आँगन) आदि मस्जिद नहीं है क्या यह सही है ?

उत्तर–मस्जिद ऐसी जगह, ऐसी ज़मीन और ऐसे मकान का नाम है जिसको किसी मुसलमान ने अल्लाह तआला की ख़ास इबादत, फर्ज़ नमाज़ अदा करने के लिए वक़्फ कर दिया हो उस पर इमारत या छत छप्पर आदि होने की कोई शर्त नहीं है। (हनफ़ी मस्लक की किताब "तहतावी शरह दुर्रे मुख़्तार) में है कि "जान लो कि मस्जिद के लिए तामीर का होना शर्त नहीं।

(तहतावी भाग–2 पृष्ठ संख्या 536)

जगह ज़ियादा हो तो मस्जिद के दो हिस्से होते हैं। एक इमारत वाली दूसरा खाली इमारत वाली जगहें यह दोनों ही मस्जिद में शामिल होती है।

प्रश्न– मेरे घर के करीब एक मस्जिद है जिसमें पांचों वक़्त की नमाज़ें होती हैं कुछ हिस्से को नगर निगम वाले रास्ता चौड़ा करने के लिए तोड़ना चाहते हैं तो क्या मस्जिद की कोई जगह दूसरे किसी काम में ला सकते हैं ? कुछ लोग कहते हैं कि सिर्फ़ जहां जमाअत होती है वह मस्जिद के हुक़्म में है बाक़ी नहीं क्या यह सही है।

उत्तर–जो जगह एक बार मस्जिद के हुक़्म में आ जाए फिर उस जगह इमारत रहे या न रहे उसमें नमाज़ पढ़ी जाए या न पढ़ी जाए वह क़ियामत तक मस्जिद के हुक़्म में ही रहेगी उसको इबादत के अलावा किसी काम में इस्तेमाल नहीं कर सकते और न उसके किसी भाग को बेचना, किराये पर देना, रहन रखना या उस वाकिफ़ वारिसों को देना जाइज़ नहीं अतः मस्जिद के किसी हिस्सा को रास्ता में नहीं लिया जा सकता जैसा कि "शामी भाग 3 के पृष्ठ संख्या 530 पर है कि मस्जिद के किसी भाग को रास्ता बनाना जाइज़ नहीं है।"

प्रश्न– कम आमदनी वाले बीमा इस लिए कराते हैं कि कुछ रक़म बचा लें इसलिए कि अगर बची हुई रक़म खुद के पास रहे तो खर्च हो जाने का अन्देशा रहता है और बीमा की फ़ीस अदा करने के बाद वह रक़म बीमा की स्कीम की तारीख़ से पहले मिलना मुश्किल होती है इसलिए अपने पास रखने से बचते हैं और बीमा करा लेते हैं कि यह रक़म ज़िन्दगी के आख़िरी दौर में काम आ सके और बहुत से लोग जिन्दगी का बीमा इसलिए कराते हैं कि उनको अपनी सालाना आमदनी पर ज़ियादा टैक्स देना पड़ता है अगर ज़िन्दगी का बीमा करा लें तो बीमा की फ़ीस जो साल भर में दी गयी है उसको देकर बाक़ी रक़म पर इन्कम टैक्स अदा करना होता है जिनकी आमदनी सालाना पच्चीस हज़ार या उससे ज़ियादा की है उनको इसमें बहुत नफ़ा होता है। उसके अलावा कुछ लोग अपनी ज़िन्दगी का बीमा इसलिए कराते हैं कि अपनी नागहानी मौत पर वरसा को मदद मिल सके।

उत्तर–ज़िन्दगी के बीमा का मामला किसी भी इरादे से जाइज़ नहीं है इसमें जुवा (किमार) और सूद दोनों तरह के गुनाह हैं और गुनाह भी बड़े संगीन हैं। जिसे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फरमाया– "सूदी मामला करने वाले को सत्तर तरह के गुनाह होते हैं जिनमें सबसे कम दर्जे का गुनाह अपनी माँ के साथ ज़िना (सम्भोग) करने के बराबर है।"

(मिश्कात)

दूसरी जगह फ़रमाया–सूद के एक दिरहम का खाना अल्लाह तआला के यहां छत्तीस बार ज़िना (सम्भोग) करने से ज़ियादा सख़्त है।

(मिश्कात)

जिस मुसलमान के दिल में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के फ़रमान की अज़मत होगी वह कभी भी सूदी मामला करने की हिम्मत न करेगा इसीलिए "हज़रत उमर फ़ारुक़ (रज़ि०) फ़रमाते हैं कि दस हलाल

चीज़ों में से केवल वह चीज़ लो जो सूद के शक से पाक हो और बाक़ी को छोड़ दो। (मिश्क़ात)

एक जगह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की पेशीनगोई है कि लोगों पर एक ज़माना आने वाला है कि कोई आदमी भी सूद से न बचेगा खुले तौर पर न लेगा तो उसका धुआँ ज़रूर उसको लगेगा।

(मिश्कात)

अगर अस्ल रकम जो अदा कर चुके हैं उसको लेने की और सूद छोड़ देने की नियत से बीमा किया तब भी इजाज़त नहीं क्योंकि उसमें हराम कारोबार में शिरकत होती है और उसको तरक्क़ी देने के लिए मदद होती है। जबकि अल्लाह तआला फ़रमाता है– "गुनाह और ज़ियादती के कामों में एक–दूसरे की मदद मत करो और अल्लाह से डरते रहो बेशक अल्लाह पाक सख़्त अज़ाब देने वाला है।"

(सूर–ए–माइदः)

प्रश्न–गैर मुस्लिमों से तौहीद के ख़िलाफ़ मन्त्र पढ़ा कर इलाज करवाना कैसा है? जैसे आँख में तकलीफ़ हो, चेचक हो या हाथ–पैर में कोई तकलीफ़ हो या जिन्न की शिकायत हो और इन सबको उसके मन्त्र से फ़ाइदा भी पहुंच जाता हो?

उत्तर–जब यह यक़ीन हो कि मन्त्र के मज़मून तौहीद के ख़िलाफ़ और शिरकिया हैं तो उस व्यक्ति से दम करवाना जाइज़ नहीं रहा फ़ाइदा हो जाना तो हक़ होने की दलील नहीं है।

हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि०) की अहलिया का एक क़िस्सा है उनकी आँख में तकलीफ़ हो जाया करती थी तो वह एक यहूदी के पास जा कर दम करवा लिया करती थीं वह यहूदी जैसे ही पढ़कर दम करता आँख में सुकून हो जाता था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) के सामने जब इस बात का ज़िक्र किया गया तो आपने फ़रमाया कि वह शैतान का अमल था शैतान अपने हाथ से आँख को कुरेदता था जब वह यहूदी मंत्र पढ़ता था तो शैतान रुक जाता था (यह शैतान और उस अमल करने वाली की मिली–भगत थी सिफली अमल में ऐसा ही होता है।)

□□□

✆ 0522-627487

HOTEL AVADH

Hostel Facility also available

(For Boys only)

6, N.K. Halwasiya Road,
Opp. Bhopal House,
Lalbagh, Lucknow-226001

With best compliments from :

Phone : Office : 229902, 217416, 272995
Resi. : 789887, 788188,324410
Fax : 0522-217416
E-mail : lkopaper@sancharnet.in

Lucknow Paper Distributors

(A HOUSE OF QUALITY PAPER)

WHOLESALE PAPER & BOARD MERCHANTS

10-A, CAPPER ROAD, LALBAGH, LUCKNOW-226001

J.K. PAPER & BOARDS

Wholesaler :

- J.K. PAPER LTD., NEW DELHI
- ROHIT PULP & PAPER MILLS LTD.
- HINDUSTAN PAPER CORPN. LTD.
- SURYA COATS (P) LTD.

जिन्न क्या है?

— अबू मर्गूब

जिन्न अरबी शब्द है, इस का अंतिम अक्षर नून तशदीद वाला है अतः जिन्न लिखना–बोलना शुद्ध है जबकि लोग जिन लिखते और बोलते हैं, हम भी जिन लिखते–बोलते हैं, परन्तु इस लेख में हम शुद्ध शब्द जिन्न ही लिखेंगे। जिन्न का अर्थ छुपी हुई वस्तु परन्तु यह एक प्राणी का नाम भी है, चूंकि वह प्राणी हमारी आँखों से ओझल रहती है अतः हो सकती है इसी कारण इस प्राणी का नाम जिन्न पड़ा हो।

हिन्दू धर्म में जिन्न से संबंधित कोई वर्णन नहीं मिलता है परन्तु सुर तथा असुर के गुण जिन्न तथा शैतान के गुणों के अनुकूल लगते हैं। तौरात में एक शब्द जाइँट (Giant) आता है वह भी जिन्न के अर्थ के निकट है। इस्लाम में इस मख़्लूक़ (प्राणी) का विस्तार से वर्णन है। मैं इस लेख में जिन्नों के विषय में कुर्आन और हदीस की सूचनानुसार ही लिखने का प्रयास करूंगा। पवित्र कुर्आन में बताया गया है कि : "और" जान्न को हमने उससे पहले समूम की आग से रचा है " (15:27) शब्द कोष वाले लिखते हैं कि जान्न जिन्न की समूह संज्ञा (इस्मि जम्अ़) है, तफ़्सीर वाले जान्न को अबुलजिन्न जिन्नों का पुरखा अथवा उस प्रथम जिन्न को बताते हैं जिसकी सन्तान समस्त जिन्न हैं, जिस प्रकार आदम की संतान समस्त इन्सान (आदमी) हैं।

समूम गर्म हवा को कहते हैं जिसमें एक प्रकार की आग होती है। यह आग घास–फूस को जलाती तो नहीं है परन्तु शरीर को छूती है तो उसे झुलसने लगती है, उसी गर्म हवा की आग से जिन्न की पैदाइश हुई है।

आयत में जो बताया गया है उससे पहले इन्सानों (मानव जाति) के पुरखा आदम (अ०) से पहले। (यहाँ यह बात भी स्मरणीय है कि हिन्दू धर्म में सुरों तथा असुरों की पैदाइश का उल्लेख भी मानव जाति से पूर्व है।)

दूसरी जगह बताया गया :–

और जान्न को आग की लपट से पैदा किया। (55:15)

दोनों आयतों का अर्थ एक ही निकला कि जिन्नों को विशेष आग से पैदा किया गया, परन्तु जिस प्रकार इन्सान मिट्टी से बनाया गया फिर भी मिट्टी से पूर्णतया पृथक है, आप मिट्टी को छूएं तथा उसको देखें क्या इन्सान के कोमल तथा सुन्दर शरीर से उसका कोई जोड़ है ? गुलाब के फूल को उस मिट्टी से मिलाइये जिस से वह उगा है। क्या आँखें दोनों में कोई सम्बन्ध देख रही हैं। पस इसी प्रकार आग और उस से उत्पन्न प्राणी में कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं ढूंढना चाहिये कि जब वह आग से बने हैं तो जिधर निकलेंगे आग लगाते चले जाएंगे।

जिन्न ऐसे तत्व से बने हैं जिनका ज्ञान इन्द्रियों द्वारा सम्भव नहीं, अतः हम नहीं बता सकते कि उनका रूप किस प्रकार का है। हम को यह नहीं बताया गया अल्बत्ता हमको यह बताया गया कि जिस प्रकार इन्सान के लिए शुद्ध विश्वास तथा सदाचरण आवश्यक हैं और इस पर वह पुरस्कारित होंगे उसी प्रकार जिन्न भी अपनी शुद्ध विश्वास तथा सदाचारों पर पुरस्कारित होंगे और जिस प्रकार मनुष्य अपने अशुद्ध विश्वास तथा कुकर्मों पर दण्डित होंगे, उसी प्रकार जिन्न भी। पवित्र कुर्आन में अल्लाह तआ़ला ने बताया कि : "मैं ने जिन्नों तथा इन्सानों को केवल अपनी उपासना के लिए पैदा किया।" (51:56)

एक दूसरे स्थान पर इन्सानों के साथ जिनों को भी इस प्रकार सम्बोधित किया गया है।

"ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोह! क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आए, और उन्होंने तुमको मेरी आयतें नहीं सुनाईं और इस दिन (क़ियामत) से तुम को नहीं डराया ? वह अपने पाप स्वीकार करेंगे, उन को सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल दिया और वह अपने अवज्ञाकारी होने को मान लेंगे।" (6:130)

पवित्र कुर्आन की इन बातों से सिद्ध हुआ कि इन्सानों की भांति जिन्नों को भी अच्छे बुरे विश्वास तथा कर्मों पर पुरस्कार अथवा दण्ड मिलेगा जो भी रसूल (सन्देष्टा) आया वह जहाँ मनुष्यों के लिए इलाही सन्देश लाया जिन्नों के लिए भी लाया, पवित्र कुर्आन में पूरी एक सूरत ही सूरतूल जिन्न के नाम से है जिस के अरंभ ही मे अल्लाह ने अपने रसूल द्वारा अपने बन्दों को इस प्रकार सूचना दी :–

"(ऐ नबी!) आप कह दीजिये कि मुझको इस बात की वह्य (वही) की गई कि जिन्नात में से एक जमाअ़त (गुट) ने कुर्आन सुना फिर अपनी क़ौम में जाकर कहा हम ने एक अजीब (आश्चर्यजनक) कुर्आन सुना है जो सत्य मार्ग बताता है सो हम उस पर ईमान लाए, और हम अपने रब के साथ कदापि किसी को साझी न ठहराएंगे।" (72:1,2)

एक और स्थान पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया :–

मैं इन नाफ़रमान जिन्नों और इन्सानों से जहन्नम को भर दूँगा। (32:15)

(क्रमशः) ❐❐❐

एक सत्य घटना से प्रेरित

पूरा पूरा इन्साफ़

– शकील अहमद

शाम के 7 बजे हैं, पांचवे घर के चौका–बरतन करके शशि अपने घर की ओर थकी लेकिन तेज़ क़दमों से चली जा रही हैं। उम्र 37 साल पुरानी और मैली साड़ी, चमड़े की पैबन्द लगी हवाई चप्पल, उलझे बाल, उड़ा हुआ चेहरा, कलाइयाँ बग़ैर चूड़ियों के, मांग सिन्दूर से खाली, आँखें वीरान, हाथ में पुराने अख़बार मे लिपटी हुई कुछ बासी रोटियाँ। जैसे–तैसे करके वह गंदी और बदबूदार झोपड़ पट्टी में पहुंची, जहाँ उसका एक छोटा सा झोपड़ा था। गली में नाली के किनारे उसे अपने दो बच्चे 8 वर्षीय विनोद और 6 वर्षीय मिताली खेलते हुए मिल गये। "भैया कहाँ है ?" शशि ने बच्चों से पूछा, तभी सामने से 10 वर्षीय अशोक आता हुआ दिखाई दिया। चेहरे, हाथ–पैरों और कपड़ों पर कालिख़ लगी हुई है, देखने में अजीब सा नज़र आ रहा है। वह एक मोटर मिस्त्री के यहाँ काम करता है। "बड़ी देर कर दी बेटा चलो तुम तीनों हाथ मुँह धो लो मैं ख़ाना दे रहीं हूँ।" प्लेट में दाल चावल निकाल कर बच्चों के साथ खुद भी ख़ाने के लिए बैठ गयी।" मम्मी अख़बार में क्या है?" मिताली बोली। रोटियाँ हैं जो मालकिन ने दी हैं" तो लाओं ना, हम लोग सिर्फ़ दाल चावल खा रहें है।" विनोद बोला। शशि ने प्यार से बच्चों के सिर पर हाथ फेरा और समझाया कि "बेटा रोटी इस वक़्त रहने दो सुबह नाश्ते में चाय के साथ खा लेना।" बच्चे मान गये और चुपचाप खाना ख़ाने लगे। ख़ाना ख़ाकर शशि की नज़र अख़बार में छपी एक फ़ोटो और उसके साथ लिखी एक ख़बर पर पड़ी। ख़बर ये थी कि एक आदमी की दिन–दहाड़े बीच बाज़ार में गोली मारकर हत्या कर दी गयी थी और फ़ोटो में मृतक का रोता बिलखता परिवार दिखाया गया था। इस ख़बर को देखकर उसका शरीर कांपने लगा, सर बहुत ज़ोर से चकराया वो दीवार के सहारे ज़मीन पर बैठ गयी। उसे अपने जीवन में घटी कई वर्ष पुरानी वह घटना याद आने लगी जिसने उसे मालकिन से कई घरों में चूल्हा–चौका करने वाली नौकरानी बना दिया था।

उसे याद आ रहा था कि इसी तरह एक दिन उसके पति नरेन्द्र को बीच बाज़ार में गोली मारकर रुपयों से भरा बैग छीन लिया गया था जो वो बैंक से लेकर आ रहा था। बाज़ार में भगदड़ मच गयी, लोग दुकाने बन्द करके भाग गये। भागने वालों से नरेन्द्र कह रहा था कि "कोई मुझे अस्पताल पहुँचा दो" और लोग डर से उसके क़रीब नहीं आ रहे थे कि हमरा नाम गवाहों में न आ जाए, जिससे बैठे बिठाए एक मुफ़्त की पेरशानी हमे घेर लेगी। नरेन्द्र पुकारते–पुकारते बेहोश हो गया, तब तक पुलिस आ पहुंची। उसने उसे अस्पताल ले जाने की व्यवस्था की लेकिन रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

शशि पर जैसे आसमान टूट पड़ा, उसकी दुन्या वीरान हो गयी। तीन छोटे–छोटे बच्चों के साथ वो संसार के थपेड़े खाने के लिए अकेली खड़ी थी और फिर अकेली बेसहारा देखकर दुन्या ने उसे अपनी ठोकरों में रख लिया।

नरेन्द्र की मृत्यु के बाद जिस समय शशि की चूड़िया तोड़ी जा रही थीं छोटे से अशोक ने उस महिला का हाथ पकड़ लिया जो उन्हें तोड़ रही थी। "कल ही तो पापा मम्मी को ये चूड़ियां पहना कर लाए थे, आप इनको क्यों तोड़ रही है। मम्मी आप इनको मना क्यों नहीं करती।" मासूम बच्चे के सवाल पर उसका दिल बैठने लगा, धैर्य का वो बांध जिसने बड़ी मुश्किल से उसकी आँखों के धारे रोके थे टूट गया। उसने बेटे को कसकर चिमटा लिया और आँखों के धारे को बहने के लिए छोड़ दिया ।

धीरे–धीरे दुन्या ने अपना रंग दिखाना शरु किया। नरेन्द्र को आफ़िस की तरफ़ से मिला हुआ मकान शशि को कुछ दिन में छोड़ना पड़ा। पैतृक मकान में जिस पर रिश्तेदार कब्ज़ा किए हुए थे, उन्हें सामान रखने तक की जगह नहीं दी। मजबूरन एक किराए का मकान लेना पड़ा। बच्चों के स्कूल की फ़ीस, मकान का किराया, घर का खर्चा, धीरे–धीरे शशि खाली हाथ होती चली गयी। रिश्तेदारों ने पहले से ही आँखें फेर ली थी। खर्च चलाने के लिए उसे नौकरी करनी पड़ी। कभी आफ़िस क्लर्क बनी, कभी दुकान में सेल्स गर्ल तो कभी बच्चों को ट्यूशन पढ़ाया। अबला जान कर लोगों ने जब–जब उसके सतीत्व पर ठोकर लगानी चाही तब–तब उसने नौकरी छोड़ दी और दूसरी नौकरी कर ली। अब शशि थक चुकी थी, एक–एक

कर उसने दस जगह नौकरी बदली। नौकरी छोड़कर घर बैठ रही। घर का क़ीमती सामान भी एक–एक कर बिकता चला गया। कुछ दिन उधार लेकर काम चलाया, लेकिन कब तक ? तीन दिन से बच्चे उबले आलू में नमक डाल कर खा रहे थे, आज तो आलू भी नहीं थे। आज फ़ाके ने उनके दरवाज़े पर दस्तक दी थी। आज घर में खाने को कुछ नहीं था।

इन सब हालात में उसे एक इन्क़िलाबी फ़ैसला करने पर मजबूर किया, उसने सोचा कि अब नौंकरी ऐसी जगह करेंगे जहाँ पुरुषों का सामना न हो या कम हो, औरतो के बीच काम करने पर कम से कम इज़्ज़त तो महफ़ूज़ रहेगी। बहुत सोचने पर उसे ऐसी नौकरी रसोई–घर में नजर आयी। फिर एक–एक कर उसने पाँच घरों मे चूल्हा–चौका करने की नौकरी कर ली। इन घरों को छाँट कर उसने नौकरी के लिए चुना था क्योंकि हर घर में कई–कई औरतें थीं जिनके बीच में उसकी इज़्ज़त ज़ियादा महफ़ूज़ थी। सुब्ह से शाम तक कपड़े धोना, झाडू–पोछा करना, खाना पकाना बरतन मांजना उसकी दिनचर्या हो गई। हर घर में उसके जाने और वापस आने का समय बंधा हुआ था। इस तरह वह एक मालकिन से घरों में काम करने वाली नौकरानी बन गई।

अशोक पढ़ाई छोड़कर काम सीखने लगा, शशि ने मकान छोड़कर इस झोपड़े में रहना शुरु कर दिया, छोटे दोनों बच्चों को एक ख़ैराती स्कूल भेजने लगी। इस प्रकार वो अपनी उम्र के दिन पूरे करने लगी। "मम्मी मुझे नींद आ रही है।" मिताली उसका कंधा पकड़ कर हिला रही थी। शशि यादों की दुन्या से बाहर निकली और आँसू पोछती हुई बच्चों का बिस्तर बिछाने लगी।

एक शाम जब शशि काम से वापस लौटी तो उसे अपने दरवाज़े पर एक अजनबी महिला नज़र आयी। उसने अपना नाम उम्मे हानी बताया और एक दैनिक अख़बार की पत्रकार के रूप में अपना परिचय कराया और उससे बात करने का कुछ समय मांगा। शशि उसे अन्दर ले गई और उसे एक ख़स्ताहाल कुर्सी पर बैठा कर बच्चों को खाना खिलाने लगी। जब बच्चे खाना खा चुके तो वो उम्मे हानी के पास आकर बैठ गई और पूछा कि कैसे आने का कष्ट किया उम्मे हानी बोली, मै उच्चतम न्यायालय के उस फैसले में आपकी प्रतिक्रिया जानने के लिए आई हूँ, जिसमें आपके पति के हत्यारे को फाँसी की सज़ा बहाल रखी गयी है और उसे कुछ दिन में फाँसी दे दी जाएगी। "शशि ने एक ठंडी सांस ली और एक फीकी मुस्कमान उसके ओठों पर आ गई। उम्मे हानी एक मंझी हुई पत्रकार थी फ़ौरन उसने पूछा लगता है आप इस फ़ैसले से संतुष्ट नहीं है। "इस प्रश्न पर सोई हुई वो शशि जाग उठी जो कालेज के दिनों में होने वाले हर डिबेट में सब पर छाई रहती थी।" हाँ मैं इस फ़ैसले से संतुष्ट नहीं हूँ, हत्यारे को बड़े सस्ते में निपटाया जा रहा है। अभी तो मेरा उससे बहुत सा हिसाब बाक़ी है। "शशि ने बड़े जोशीले अंदाज़ में कहा।" क्या मतलब ? कैसा हिसाब? हत्यारे को दुन्या की सबसे बड़ी सज़ा दी जा रही है फिर भी आप कहती हैं कि उसे सस्ते में निपटाया जा रहा है।" उम्मे हानी ने ताज्जुब से पूछा। शशि बोली, "जान के बदले में जान ली जा रही है लेकिन अभी हत्यारे से एक हंसता–खेलता परिवार उजाड़ देने का बदला कहाँ लिया जा रहा है। न जाने कितनी पीढ़ियों तक कितनी सदियों तक इस हत्या का असर पहुंचे और ये परिवार दुन्या की ठोकर खाए। दुन्या द्वारा इस उजड़े परिवार पर लगाई गई हर ठोकर का हिसाब और बदला चाहिए मुझे क्योंकि इन लगने वाली ठोकरों का असल कारण वो हत्यारा है।

मेरे सास–ससुर नरेन्द्र की हत्या के छह महीने के भीतर स्वर्ग सिधार गये। उन्हें नरेन्द्र का ग़म ले गया। रातों में टहलना, हर वक़्त रोते रहना, अजीब से दर्द और ग़म में रात दिन का गुज़रना मैंने खुद देखा है। इसका कारण भी यही हत्यारा है, अभी उनके एक–एक क़तरे आँसू का हिसाब बाक़ी है।

मेरे बच्चे अनाथ हो गये, ये अच्छे से अच्छा अपनी पसन्द का पहनते थे, आज मालकिनों द्वारा तरस खाकर दिये हुए कपड़े पहन रहे हैं। पैबन्द लगे और गले हुए कपड़ों की हालत आप देख रही हैं। शहर में एक अच्छे स्कूल में ये पढ़ते थे अब ख़ैराती स्कूल जाते है। बड़े बेटे की पढ़ाई छूट गयी, कुछ हुनर सीखने के लिए काम पर लगना पड़ा। उसका बचपन छिन गया, वक़्त से पहले जवानों की ज़िम्मेदारी उठा ली। अपनी पसंद का खाते थे, आज सिर्फ़ पेट भरते हैं, कभी तो वो भी नहीं होता, कई–कई वक़्त भूखे रहना पड़ता है। जब इनके पापा घर आते थे तो ये तीनों उनकी गोद में चढ़कर बारी–बारी से उन्हें प्यार करते थे, वो इन्हें प्यार करते थे। एक दूसरे को गुदगुदाते थे और खूब हंसते थे। आज वर्षों हो गये बच्चे दिल खोलकर हंसे नहीं है जब मैं इन्हें हंसाने की कोशिश करती हूँ और ये थोड़ा सा हंस लेते हैं तो फ़ौरन इस तरह संजीदा हो जाते है जैसे बहुत बड़ा जुर्म किया हो। ये अक्सर तकिया में मुंह छिपाकर आँसू बहाते हैं। मेरी गोद में लेटकर अक्सर इनकी आँखे नम हो जाती हैं। बच्चों को पापा का प्यार चाहिए, मैं कहाँ से लाऊं पापा का प्यार।

बच्चों के आँसू, छिना हुआ बचपन और मुस्कान, वो तमन्ना जिसका गला घोंट दिया गया, हर महरूमी का असल

कारण वह हत्यारा है। अभी उससे इसका हिसाब बाक़ी है। मैं विधवा हो गयी, मेरा संसार उजड़ गया, मेरा भविष्य अंधकारमय हो गया। पति का संग और सास–ससुर का सहारा मेरे ऊपर से उठ गया। पहले मेरे पति परिवार का बोझ उठाए हुए थे अब मुझे उठाना पड़ रहा है। मैं घरेलू नौकरानी बन गई, अब मुझे घर और बाहर दोनों ज़िम्मेदारी उठानी पड़ रही है। बच्चों की पापा–मम्मी दोनों बनी हूँ। इस दोहरी ज़िम्मेदारी ने मेरी कमर तोड़ दी है। इसका ज़िम्मेदार कौन है? मैं दर दर भटकी, जगह–जगह नौकरियां की, बेइज़्ज़ती सही। मुझ पर पड़ने वाली रात–दिन की परेशानियों का असल कारण क्या वह हत्यारा नहीं है? मुझे अपनी बेबसी और तन्हाई का हिसाब चाहिए।

परिवार पर अब तक पड़ने वाली आप बीती मैंने आपको बताई है। अभी तो मुझ पर और मेरे परिवार पर पूरे जीवन में आने वाली वो कठिनाईयाँ जो मुंह खोले हम सबका इन्तिज़ार कर रही है। उनका हिसाब बाक़ी है। मेरे बच्चों की अशिक्षा, गरीबी और व्यक्तित्व का सही विकास न होने का जो असर इनकी संतानों पर पड़ेगा और पीढ़ी दर पीढ़ी न जाने कहाँ तक जाएगा। क्या इन सबका असल ज़िम्मेदार यह हत्यारा नहीं है? क्या इंसाफ़ का तक़ाज़ा ये नहीं है कि इस परिवार को पूरा–पूरा इंसाफ मिले।"

उम्मे हानी बहुत गौर से शशि के तर्क सुन रही थी। उसके चुप होने पर उम्मे हानी बोली, "शशि मैं तुम्हारा दुख समझती हूँ, तुम पूरे–पूरे हिसाब और बदले की अधिकारी हो, लेकिन एक न्यायधीश इससे बड़ी सज़ा नहीं दे सकता, अगर तुम्हें न्यायाधीश बना दिया जाए तो क्या तुम हत्यारे से पूरे हिसाब के अनुसार बदला ले सकोगी?" इस सवाल पर शशि कुछ देर तक सोचती रही और फिर "नहीं" में गरदन हिला दी। उम्मे हानी ने फिर सवाल किया, "कल्पना करो कि हत्यारा तुम्हारे हवाले कर दिया जाए और तुम्हें एक ऐसी जादू की छड़ी मिल जाए जिससे उसे जो चाहो बना दो और जितनी बार चाहों मार कर ज़िन्दा कर दो, उस समय तुम क्या करोगी ? दांत भींचकर शशि ने कहा, "मैं उसे नाली में रेंगने वाला कीड़ा बना दूँगी या गंदगी को खाने वाला और उसमें रहने वाला सुअर बना दूँगी। मैं उसे बेदर्दी से मार कर ज़िंदा करूंगी फिर मारूंगी। जब तक मेरे हाथ में छड़ी रहेगी मैं उसे मारती और जिलाती रहूँगी।" जोश में शशि ने मुट्ठियां भींच ली और खड़ी हो गयी। उसकी ये हालत देख कर उम्मे हानी हौले से मुस्कुराई और बोली, "शशि इस तरह तुम अपने दिल की भड़ास निकाल सकती हो न्याय नहीं कर सकतीं, हिसाब और बदला नहीं ले सकतीं।" शशि बैठ गयी और धीमी आवाज़ में बोली "किसी ऐसे हत्यारे को जिसने एक से अधिक हत्याएं की हो एक से अधिक परिवार उजाड़े हों उसे दुन्या की अदालत बड़ी से बड़ी सज़ा दे सकती है।" "मृत्युदण्ड" शशि बोली। इस पर उम्मे हानी ने गम्भीरता से कहा, "एक आदमी की हत्या करने वाले को जो बड़ी से बड़ी सज़ा दी जा सकती है वही सज़ा कई हत्याएं करने वाले को दी जाती है। इसे तो उससे कई गुना बड़ी सज़ा दी जानी चाहिए।" शशि के पास इसका कोई जवाब नहीं था। अब उम्मे हानी ने कहा, "असल में दुन्या के अन्दर किसी भी इंसान को उसके कर्मों का फल पूरा–पूरा नहीं मिल सकता। न ईनाम के रूप में न सज़ा के रूप में। इसीलिए ईश्वर ने परलोक बनाया है। जहाँ इस जीवन के बाद हमें दो बार उठाकर अपने सामने खड़ा करेगा और कर्मो का हिसाब लेगा। वहाँ अधूरा न्याय नहीं होगा, उस दिन किसी के साथ अन्याय नहीं होगा, वहाँ न्याय होगा क्योंकि ईश्वर (ख़ुदा) स्वयं न्यायाधीश के आसन पर विराजमान होगा। इस समय मुझे संसार के रचने वाले के अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की एक बात याद आ रही है जिसका भावार्थ ये है "हज़रत आइशा (रज़ि०) से (रिवायत) उल्लिखित है कि एक व्यक्ति हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) की सेवा में उपस्थित हुआ और सामने बैठ गया। उसने कहा "हे ईश्वर के दूत, मेरे पास कुछ दास (गुलाम) हैं। उनका स्वभाव ये है कि (कभी–कभी) वह मुझसे झूठ बोलते है, मेरी चीज़ों में ख़यानत (हेरा–फेरी) भी करते हैं, मेरी अवज्ञा भी करते हैं उनकी इन हरकतों पर कभी उन्हें गालियां देता हूँ और कभी मारता भी हूँ। अपने इस व्यवहार की वजह से प्रलय के दिन मेरी क्या दशा होगी (अर्थात परमेश्वर मेरा और उनका फ़ैसला किस तरह करेगा) महा ईशदूत हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम्हारे उन दासों ने जो तुम्हारी ख़यानत और अवज्ञा की होगी तुमसे जो, जो झूठ बोले होंगे (इसके नतीजे में) तुमने उनकों जो सज़ाएं दी होंगी, प्रलय के दिन इन सबका पूरा–पूरा हिसाब किया जाएगा। बस तुम्हारी सज़ा अगर उनके दोषों के बराबर होगी, तो ये मामला बराबर पर निपट जाएगा। न तुमकों कुछ मिलेगा नं तुमको कुछ देना पड़ेगा। अगर तुम्हारी सज़ा उनके दोषों से कम साबित हुई तो तुम्हें वहाँ पूरा हक़ मिलेगा और अगर तुम्हारी सज़ा उनके दोषों से अधिक साबित हुई तो तुमसे इसका बदला उनको दिलवाया जाएगा। (जब उस व्यक्ति ने हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) का ये उत्तर सुना) तो आपके पास से एक ओर हटकर रोने और चिल्लाने लगा। (उसे परलोक के न्याय के भय से

शेष पृष्ठ 32 पर

स्वास्थ्य रक्षा

रोग निदान एवं चिकित्सा

डायबिटीज़ एवं हृदय रोग "एन्जाइना" (Angina) का सफल सिद्ध आयुर्वेदिक इलाज

डायबिटीज़ के रोगियों में हृदय रोग "एन्जाइना" हृदय की रक्त धमनियों में चर्बी एकत्र होने के कारण होती है जो कोलेस्ट्राल के कारण ही होती है। कोलेस्ट्राल के कारण ही "एन्जाइना" होता है जो हार्ट अटैक का कारण होता है। जिन कारणों की वजह से किसी व्यक्ति को कोरोनरी हृदय रोग होता है उनमें डायबिटीज़ का महत्वपूर्ण स्थान है। सबसे बड़ी बात यह है कि हृदय रोगियों के इलाज में उतनी जटिलताएं नहीं हैं जितनी कि डायबिटीज़ और हृदय रोगियों में है।

डायबिटीज़ के मरीज़ों में हृदय रोग "एन्जाइना" के होने पर यदि समय से इलाज हो गया तो पूरी तरह रोगमुक्त हुआ जा सकता है। हार्ट अटैक से पीड़ित 25 प्रतिशत लोगों में डायबिटीज़ की समस्या होती है।

डायबिटीज़ के मरीज़ों में हृदय रोग "एन्जाइना" की शिकायत अधिक होती है। डायबिटीज़ से पीड़ित पुरुषों में इस बीमारी का ख़तरा दो से तीन गुना ज़ियादा होता है जबकि डायबिटीज़ महिलाओं में इसका ख़तरा तीन से पाँच गुना अधिक होता है।

डायबिटीज़ के मरीज़ों में कोलेस्ट्राल जमने की गंभीरता अधिक पायी जाती है तथा एक से अधिक धमनियों में बीमारी पाई जाने की संभावना होती है। डायबिटीज़ से पीड़ित हृदय रोग "एन्जाइना" के मरीज़ों में हृदय से संबंधित खतरा अधिक होता है। इसके अतिरिक्त यदि डायबिटीज़ का रोगी "एन्जाइना" के मरीज़ों में हृदय से संबधित खतरा, हार्ट अटैक का खतरा तथा पक्षाघात का खतरा अधिक होता है। इसके अतिरिक्त यदि डायबिटीज़ का रोगी "एन्जाइना" का रोगी है तो दोबारा हार्ट–अटैक का ख़तरा 1.4 से 3.1 गुना ज़ियादा होता है। इसी प्रकार महिलाओं में इसका खतरा पुरुषों की अपेक्षा दो गुना अधिक होता है।

डायबिटीज़ से पीड़ित हृदय रोग "एन्जाइना" के रोगियों के सीने में दर्द नहीं होता है जिसके कारण ऐसे रोगियों में साइसेंट इशकीमियां की संभावनाएं ज़ियादा होती है। ऐसे रोगियों में सांस फूलने की बीमारी होती है। ऐसे रोगियों की बाईपास सर्जरी सम्भव नहीं है क्योंकि एन्ज्योप्लास्टी तथा सैपेनस गेन ग्राफ़्ट के परिणाम निराशाजनक रहे हैं।

डायबिटीज़ और हृदय रोग "एन्जाइना" के रोगियों में एन्ज्योप्लास्टी के बाद पुनः दुबारा सिकुड़न होने का ख़तरा 100 प्रतिशत होता है।

डायबिटीज़ एवं हृदय रोग "एन्जाइना" के रोगियों में यदि कई रक्त धमनियों में कोलेस्ट्राल के कारण सिकुड़न है तो बाई–पास सर्जरी पहली बात तो सफल नहीं होती है यदि किसी प्रकार बाई–पास सर्जरी हुई तो पुनः सिकुड़न हो जाती है और मरीज़ गंभीर स्थिति से गुज़रता है। इसलिए जब भी मरीज़ को डायबिटीज़ हो तो उसे ई.सी.सी.जी. (E.C.G.) या टी.एम.टी. (T.M.T.) अवश्य ही करा लेना चाहिए कि "एन्जाइना" की शिकायत है या नहीं।

डायबिटीज़ और उच्च रक्तचाप

अगर किसी डायबिटीज़ के मरीज़ में उच्च रक्तचाप (High Blood Pressure) की भी समस्या हो तो उस व्यक्ति में उच्च रक्तचाप से बढ़ने वाले ख़तरे और बढ़ जाते हैं। अभी हाल ही में प्रकाशित ज्वाइंट नेशनल कमेटी की रिपोर्ट में पहली बार उच्च रक्तचाप के मरीज़ों में हृदय एवं धमनी से सम्बन्धित ख़तरों का निर्धारण तीन ग्रूप में किया जाता है। इसमें डायबिटीज को सबसे अधिक ख़तरे के ग्रूप में रखा गया है। यह बात इलाज करते समय चिकित्सक को सदैव याद रखनी चाहिए। यदि उच्च रक्तचाप से पीड़ित कोई भी व्यक्ति इस बीमारी के प्रथम स्टेज पर है अर्थात उसका सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर 140-159 मि.मी. के बीच में है या डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर 90-100 मि.ली. के बीच में है तो इस व्यक्ति में अगर वह खतरे वाले ग्रूप में हैं तो हम आयुर्वेदिक दवाईयों के प्रयोग से एक दो महीने में उच्च रक्तचाप को नियंत्रिक कर लेते हैं परन्तु वह व्यक्ति यदि डायबिटीज़ से भी पीड़ित है तो रक्तचाप के साथ–साथ उसे डायबिटीज़ कंट्रोल करने की आयुर्वेदिक दवाईयां देते हैं जिससे कोलेस्ट्राल के साथ–साथ डायबिटीज़ भी समाप्त हो जाती है क्योंकि वह खतरे वाले ग्रूप में हैं। इसलिए हमें ऐसे रोगियों की चिकित्सा में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

कुछ चिकित्सकों का मानना है कि अगर व्यक्ति रक्तचाप उच्च सामान्य श्रेणी में हो अर्थात सिस्टोलिक ब्लड प्रेशर 130-139 मि.मी. हो तथा डायस्टोलिक ब्लड प्रेशर 85-90 के बीच हो और साथ ही डायबिटीज़ की भी समस्या हो तो इस वर्ग के मरीज़ में भी उच्च रक्तचाप की दवा शुरू करनी चाहिए और सिस्टोलिक रक्तचाप 120 मि.मी. और डायस्टोलिक 80 मि.मी. निर्धारित करना चाहिए।

"एन्जाइना" का कारण

जैसा कि ऊपर हम यह बता चुके हैं कि "एन्जाइना" का मुख्य कारण कोलेस्ट्राल होता है और वह एक प्रकार की ग्लिसरीन होती है जो सीमेंट की तरह रक्तधमनियों में जम जाती है जिसके कारण "एन्जाइना" की शिकायत होती है। कोलेस्ट्राल की जानकारी लिपिड प्रोपाइल की जांच कराने पर ही पता लग पाती है और इसके कारण रक्तचाप की शिकायत होती है। डायबिटीज़ के साथ-साथ यदि "एन्जाइना" भी होता है तो ड्राइग्लिसराइड बढ़ जाता है और एच.डी.एल. कम हो जाता है। एच.डी.एल. कोलेस्ट्राल की मात्रा 35 मि.ग्रा. प्रतिशत से ज़्यादा होनी चाहिए तथा ड्राईग्लिसराइड की मात्रा डायबिटीज़ के मरीज़ में 200 मि.ग्रा. प्रतिशत से कम होनी चाहिए तथा जो एन्जाइना का भी रोगी है उसमें 150 मि.ग्रा. प्रतिशत से कम होनी चाहिए।

यदि कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक हो जाती है तो परहेज़ करना चाहिए तथा चिकनाई या चर्बी वाली चीज़ें कम लेनी चाहिए मोटापा कम करना चाहिए। जब तक कोलेस्ट्राल कम नहीं होता तब तक रक्तचाप भी नियंत्रित नहीं होता है इसलिए परहेज़ अवश्य करना चाहिए। ऐसी स्थिति में पानी में उबली हुई सब्ज़ियों का प्रयोग करना चाहिए या फलों पर अधिक निर्भर रहना चाहिए। शराब का प्रयोग भी बिल्कुल नहीं करना चाहिए।

डायबिटीज़ एवं हृदय रोग एन्जाइना का सफल सिद्ध आयुर्वेदिक इलाज

जैसा कि आप सभी लोग यह जानते हैं कि एन्जाइना का इलाज एलोपैथी में सिर्फ़ बाई-पास सर्जरी है जो बहुत ही महंगी के साथ जोखिमपूर्ण भी है और यह भी ज़रुरी नहीं है कि बाई-पास कराने के बाद वह ठीक हो जाये। परन्तु साथ में डायबिटीज़ भी है तब तो बाई-पास सर्जरी बहुत ही मुश्किल है। क्योंकि बाई-पास में जो बाई-पास ग्राफ़्ट होता है यानी जो धमनी रुकावट पास करने के लिए लगायी जाती है उसकी भी आयु होती है। यह अच्छे ग्राफ़्ट के लिए जैसे आरटीरियल (अच्छे) ग्राफ़्ट के लिए 7-8 वर्ष भी होता है और बोनस ग्राफ़्ट के लिए इससे कहीं कम 3-4 वर्ष होता है। यह आरटीरियल ग्राफ़्ट हर विशेषज्ञ व संस्था में उपलब्ध सुविधाओं एवं अनुभवों के आधार पर भिन्न होता है। यह बात मरीज़ के रोग पर भी निर्भर करती है। डायबिटीज़ एवं हृदय रोग के इलाज के लिए किसी अच्छे वैद्य से सम्पर्क करें।

(वैद्य वी.एस. पाण्डेय)

❑❑❑

पृष्ठ 33 का शेष

पूरा पूरा इन्साफ़

रुला दिया) हज़रत मुहम्मद साहब (सल्ल०) ने फिर उससे फ़रमाया, क्या तुम कुरआन में अल्लाह का ये कथन नहीं पढ़ते– "और हम क़ाइम करेगें प्रलय के दिन इंसाफ की तराजू, बस नहीं जुल्म होगा। किसी नफ़्स पर कुछ भी और अगर होगा। किसी का अमल (कर्म) या हक़ (अधिकार) राई के एक दाने के बराबर, हाज़िर करेंगे हम उसको भी। और काफ़ी हैं हम हिसाब करने वाले।"

उस व्यक्ति ने पूछा, "हे परमेश्वर के महादूत (यह सब कुछ सुनने के बाद) मैं अपने लिए और उनके लिए इससे बेहतर कुछ नहीं समझता कि उनको (दासों को) अपने से अलग कर दूं। मैं आपको साक्षी बनाता हूँ कि मैंने उनको आज़ाद किया और अब वे आज़ाद हैं।"

एक ज्ञानी ने इसकी व्याख्या की– "ईमान (आस्था) की यही शान है और सच्चे ईमान वाले का यही व्यवहार होना चाहिए कि जिस चीज़ में परलोक का भय नज़र आए उससे बचा जाए चाहे सांसारिक नज़रिये (दृष्टिकोण) से उसके अपना कितना ही नुक़सान हो।

(तिर्मिज़ी)

(मुहम्मद साहब (सल्ल०) के पवित्र कथन और कुरआन के मंत्र का भावार्थ)

ये सुनकर एक आत्म संतोष शशि के चेहरे पर उभर आया। उसने सोचा मेरी भी कोई है, मुझ अबला को भी इंसाफ मिल सकता है। इंसाफ जो पूरा-पूरा हो। इस उम्मीद की किरण ने उसके दिल के उस बोझ को कम कर दिया जो शायद पूरे जीवन उसके साथ रहता। डुबडुबाई आँखों से शशि ने उम्मे हानी को देखा तो उसे भरी आँखों और मुस्कुराते चेहरे के साथ अपनी ओर देखते पाया। नज़र मिलते ही दोनों की आंखों के झरने बह पड़े। ❑❑❑

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने फ़रमाया :

जो व्यक्ति अल्लाह के प्रेम का स्वाद पा लेता है फिर उसको दुन्या प्राप्त करने का समय नहीं मिलता और इन्सानों से उसको वहशत होती है।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) की रवादारी

— अबू अब्दुल्लाह

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) अपनी परहेज़गारी, संयम, दयालुता, सच्चाई ईमानदारी, मामिले की समझ, आदर व सत्कार के कारण रसूल के दर्बार में प्रिय और नबी के राज़दार बन गये थे। उन्होंने अपना जीवन अपने रसूल के जीवन शैली के अनुसार व्यतीत किया। इसलिए इनके यहाँ भी, क्षमा, और रवादारी की उच्च मिसालें मिलती हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में हर प्रकार की तकलीफ़ें पहुँचती रहीं। इन परीक्षा की घड़ियों में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने आपका जिस तरह साथ दिया वह भी आपके आचरण का एक मिसाली नमूना है। वह अपने धन दौलत के लिहाज़ से मक्का में बहुत बड़े आदमी थे। उन्हों ने अपना सारा धन इस्लाम पर निछावर कर दिया। उन्हीं की प्रेम भरी दावत पर हज़रत उस्मान बिन अफ़फ़ान (रज़ि०), हज़रत तलहा बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०), हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन (रज़ि०) और अन्य बहुत से सहाबा ईमान लाए। एक बार रसूलुल्लाह सल्लाल्लाहुअलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ रहे थे कि अक़बा इब्नेमुईत ने अपनी चादर से आप (सल्ल०) के गले में फ़न्दा डाल दिया। उस समय हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) पहुंच गए। उन्होने उनसे फ़रमाया– "तुम उनको क़त्ल कर दोगे जो तुम्हारे पास अल्लाह की निशानियां लाए हैं और कहते हैं कि मेरा रब अल्लाह है।" यह सुन कर उन लोगों ने हज़रत अबूबक्र को इतना मारा कि आप बेहोश हो गये।

इंसानी अधिकारों की हिमायत : अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने जब ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियां संभालीं तो उन्होंने लोगों से फ़रमाया अगर मैं ग़लत मार्ग अपनाऊं तो मुझे सीधा कर दो। यदि मैं अल्लाह की अवज्ञा करूं तो मेरे आदेशों का पालन न करो। तुम्हारा कमज़ोर व्यक्ति मेरे नज़्दीक़ शक्तिमान है यहां तक कि दुसरों से उसका हक़ न दिला दूँ और तुम्हारा शक्तिशाली व्यक्ति मेरे नज़्दीक़ कमज़ोर है यहाँ तक कि मैं उससे दूसरों का हक़ न दिला दूँ।

क्षमादान की मिसालें : भटके हुए को सीधी राह पर लाने, कमज़ोरों को हक़ दिलाने और ज़बरदस्तों से हक़ हासिल करने मे उनकी सारी सरगर्मियां रहीं। अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में आप मुजरिमों के साथ बड़ी नर्मी और दयालुता से पेश आते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहान्त के बाद अशअश बिन क़ैस ने भी अपने नबी होने का दावा किया। वह जब गिरिफ़्तार करके हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के पास लाया गया, तो उन्होंने तौबा की। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने न केवल उनको क्षमादान दिया बल्कि अपनी बहन उम्मेफ़र्दा से उनका निक़ाह भी कर दिया। इसी तरह तलीहा ने भी नबी होने का एलान किया लेकिन जब हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के पास क्षमा याचना लिख कर भेजी तो उनका दिल आइने की तरह साफ़ हो गया और उनको मदीना आने की अनुमति दे दी।

उन्होंने हज़रत मुहाजिरबिनउम्मिया (रज़ि०) को यमामा का अमीर नियुक्ति किया तो उनके शासनकाल में दो गाने वाली औरतों में से एक ने रसूलुल्लल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की निन्दा में गाना गाया और दूसरी ने मुसलमानों को बुरा कहा। हज़रत मुहाजिरी उम्मिया ने सज़ा में उनके हाथ काट डाले और दान्त उखड़वा डाले। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) को यह मालूम हुआ तो बहुत नाराज़ हुए। उनको लिख भेजा कि यदि रसूलुल्लाह (सल्ल०) की निन्दा करने वाली औरत इस्लाम की मानने वाली है तो वह मुर्तद (धर्मभ्रष्ट) हो गई उसको मुर्तद होने की सज़ा मिलनी चाहिये और यदि ज़िम्मिया (ग़ैर मुस्लिम प्रजा) थी तो उसने प्रतिज्ञा का पालन नहीं किया परन्तु जिस औरत ने मुसलमानों को बुरा–भला कहा उसको कोई सज़ा न देनी चाहिये थी क्योंकि यदि वह मुसलमान औरत है तो उसे चेतावनी और नसीहत करने की आवश्यकता थी और यदि वह ज़िम्मिया (ग़ैर मस्लिम प्रजा) है तो जब उसके मुशरिक़ा (ईश्वर की सत्ता में साझीदारी की मान्यता) होने को स्वीकार कर लिया गया तो मुसलमानों को बुरा कहने की क्या सज़ा हो सकती है। यह तुम्हारी पहली ग़लती थी इसलिए माफ़ कर दिया जाता है। शरीर के अंग को काटना बहुत ही नफ़रत करने वाला गुनाह है, केवल क़िसास (ख़ून के बदले) की दशा में मजबूरन उचित है।

जंग में इंसानी रहमदिली : वह अपनी फ़ौज को भी बराबर आदेश देते रहते थे कि वह जहाँ दाख़िल हो वहां जंगी कार्यवाही के अतिरिक्त वह आम आदमी पर कोई

अत्याचार न करे। यही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निर्देश रहा। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने जब शाम की जंग पर लशकर भेजा तो लशकर के सरदार को सम्बोधित करके कहा : –

"यदि तुम ऐसी क़ौम को पाओ जिन्होंने अपने आपको खुदा की उपासना के लिए अर्पित कर दिया है, उनको छोड़ देना। मैं तुमको दस नसीहतें करता हूँ। किसी औरत, बच्चे और बूढ़ों को क़त्ल न करना, फलदार पेड़ को न काटना, किसी आबाद जगह को न उजाड़ना, बकरी और ऊँट ख़ाने के सिवाए ज़ब्ह (बध) न करना, नख़लिस्तान (मरुभूमि) न जलाना, माले ग़नीमत में ग़बन न करना और क़ायर न हो जाना।"

ग़ैर मुस्लिमों के अधिकारों की निगहबानी : उनके ज़माने में जो देश फ़तह हुए वहाँ की ग़ैर मुस्लिम आबादी को अपनी सुरक्षा में लेकर उनके अधिकारों के सुरक्षा की पूरी ज़िम्मेदारी ली। ज़िम्मियों (इस्लामी राज्य में ग़ैर मुस्लिम प्रजा) को जो अधिकार रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दिये थे, वही उन्होंने भी दिये। जब हीरा पर विजय प्राप्त हुई तो उन्होंने वहां के ईसाइयों से यह समझौता किया कि उनके धर्मस्थल, गिरजाघर नष्ट न किये जाएंगे। उनका वह महल न गिराया जाएगा जिसमें वह ज़रुरत के समय दुश्मनों के मुकाबले में क़िलाबन्द होते हैं। उनको संख और घंटा बजाने की मनाही न होगी। तेहवारों के मौक़े पर सलीब निकालने से रोके न जाएंगे। कोई बूढ़ा आदमी जो काम करने से मजबूर हो जाए या कोई गम्भीर रोगी हो जाए या जो पहले मालदार रहा हो और अब ऐसा निर्धन हो गया हो कि ख़ैरात खाने लगे तो ऐसे लोगों से जिज़्या नहीं लिया जाएगा और जब तक वह जीवित रहें उनके बाल–बच्चों के ख़र्चे मुसलमानों के बैतुलमाल (ख़ज़ाने) से पूरे किये जाएंगे। यदि वह किसी दूसरे देश में चले जाएं तो उनके बाल–बच्चों का पालन–पोषण मुसलमानों के ज़िम्मे न होगा।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) के युग में ईसाई धर्म का सम्मान : हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) के ही शासन काल में हज़रत ख़ालिद (रज़ि०) ने आनात के पादरियों से भी इसी प्रकार का समझौता किया कि उनके गिरजे नष्ट नहीं किए जाएंगे और नमाज़ के समय के अतिरिक्त रात–दिन जिस समय चाहें बाजा बजाएं, अपने सभी तेहवारों में सलीब निकालें। हज़रत ख़ालिद (रज़ि०) ने जिन क्षेत्रों को फ़तह किया वहां के ग़ैर मुस्लिम बाशिन्दों से समझौते में यह साफ़–साफ़ लिखा रहता था कि जिज़्या करके बदले में उनके जान व माल की सुरक्षा की जाएगी और जब यह सुरक्षा न हो पाएगी तो उनसे जिज़्या कर नहीं लिया जाएगा।

(इस्लाम में मज़हबी रवादारी –
सय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान)

□□□

संविधान के दायरे में रहकर क़ौम व देश की तरक़्क़ी के लिए कार्य करें नदवी

मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड के अध्यक्ष, नदवत–उल–उलमा के सचिव (नाज़िम) व पयाम–ए–इंसानियत फ़ोरम के अध्यक्ष मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी ने कहा कि हमारा संविधान पूरी तरह धर्म निरपेक्ष हैं, इसलिए हमें संविधान के अनुसार ही क़ौम और देश की तरक़्क़ी के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मज़हब हमें दुन्या से दूर रहकर 'पहाड़ों' पर पूजा–पाठ के लिए नहीं, बल्कि दुन्या के बीच में रहकर लोगों की भलाई के लिए काम करने को कहता है।

मौलाना नदवी ने बिहट के मदरसा इदारतुस्सिद्दीक़ के वार्षिक निरीक्षण के बाद मुस्लिम समुदाय के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि हिन्तुस्तान का संविधान धर्म निरपेक्ष है और हम अल्पसंख्यक हैं और हमें संविधान के दायरे में रहकर अपनी क़ौम और देश की तरक़्क़ी के लिए काम करना चाहिए उन्होंने देश तथा समाज के विकास के लिए शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण ज़रुरत बताते हुए आगे आने वाली नस्ल से क़ौम की तरक़्क़ी के लिए आगे आने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि अदब व अख़लाक़ ही दीन–दुन्या का सबसे बड़ा खज़ाना है। उन्होंने कहा कि हमारा मज़हब दुन्यादारी से दूर पहाड़ों में पूजा–पाठ के लिए नहीं कहता, बल्कि दुन्या के बीच रहकर दुन्या के दुर्ख–दर्द तथा तरक़्क़ी के लिए काम करने को कहता है।

इस अवसर पर मदरसे के प्रबंधक तथा शिक्षकों के अलावा नगर पंचायत अध्यक्ष शाह महमूद हसन, मुहम्मद अहमद काज़मी, अज़ीज़ुल्लाह नदवी, मौलाना असलम मुख्य सचिव छुटमलपुर, महबूब सचिव उमूमी इदारतुस्सिद्दीक़ बिहट के साथ कस्बे एवं क्षेत्र के सैकड़ों गण्मान्य लोग व स्कूली छात्राओं की उपस्थिति रही।

□□□

बच्चों का पृष्ठ

अरबी से अनुवाद

मूसा अलैहिस्सलाम

अपनी माँ की गोद में

— सय्यिद अहमद अली नदवी

मूसा की माँ ने मूसा की बहन से कहा कि ऐ बेटी जा और भाई की ख़बर ले। मुझे यक़ीन है कि वह ज़िन्दा होगा। अल्लाह ने उसको मुझे ज़िन्दा सुरक्षित लौटाने का मुझसे वादा किया है और अल्लाह का वादा सच्चा है।

मूसा की माँ के कहने पर बहन–भाई का पता लगाने घर से निकल पड़ी। उसने रास्ते में लोगों को महल में एक खूबसूरत बच्चे के पहुंचने के बारे में बातें करते सुना।

मूसा की माँ के कहने पर बहन–भाई का पता लगाने घर से निकल पड़ी। उसने रास्ते में लोगों को महल में एक खूबसूरत बच्चे के पहुंचने के बारे में बातें करते सुना।

मूसा की बहन सीधे महल पहुंची और वहां खड़े होकर उन औरतों की बातें सुनने लगीं जो इस बच्चे के बारे में आपस में बातें कर रही थीं। एक औरत दूसरी औरत से कह रही थी कि बहन–मलिका ने असवान से जिस दाई को बुलाया था वह आई ? उसने कहा कि हां आई थी लेकिन बच्चे ने उसका भी दूध नहीं पिया। हैरत है ? कमाल का बच्चा है। फिर वही औरत बोली की शायद यह सातवीं दाई थीं जिसक मलिका ने तजुर्बा किया है। लोग तो कहते थे कि उसका दूध अच्छा और दाई भी बड़ी साफ–सुथरी थी। उसका दूध हर लड़का पी लेता है। यह बातें सुनकर मूसा की बहन ने बड़े अदब से उन औरतों से कहा कि मैं इस शहर में एक ऐसी औरत को जानती हूं जिसका दूध यह बच्चा ज़रूर पी लेगा। औरत बोली–मुझे तो यकीन नहीं। हमने तो छः दाइयों का अनुभव किया है। लड़के ने किसी का भी दूध नहीं पिया। एक दूसरी औरत बोली कि सातवीं दाई का अनुभव कर लेने में हरज ही क्या है।

इन बातों की ख़बर मलिका तक पहुंची। उसने शीघ्र उस लड़की को अपने पास बुलाया और कहा कि अभी जाओ और उस दाई को लेकर आओ। मूसा की मां आई और सेविका ने बच्चे को उनको दे दिया बच्चा उनसे चिमट गया और दूध पीने लगा गोया उनको वह पहले से जानता है। वह उनका दूध कैसे नहीं पीता आख़िर वह उनकी चाहने वाली मां थीं और कई दिन के भूखे थे। उनके दूध पीने पर मलिका महल वालों और फ़िरऔन को हैरत हुई। फिरऔन कहने लगा कि इतनी दाइयों को बुलाया किसी का दूध नहीं निया, इस औरत को देख कर उससे चिपट गया और दूध पीने लगा। यह इसकी मां तो नहीं ? इस पर मूसा की मां फिरऔन से कहने लगीं कि बादशाह यह बात है कि मैं बहुत साफ–सुथरी रहती हूं और मेरे बदन में ऐसी खुशबू आती है कि हर बच्चा मेरे पास आ जाता है। दूध भी अच्छा है कि हर बच्चा पी लेता है। फिरऔन उनके जवाब से संतुष्ट हो गया और बच्चा उनके हवाले कर दिया और मूसा की मां मूसा को गोद में लिए घर लौट आईं।

"हमने उनको उनकी माँ के पास लौटा दिया ताकि उनकी आंखों को ठंडक पहुंचे और वह ग़मगीन न हों और यह जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है लेकिन इस बात को बहुत से लोग नहीं जानते।

फिरऔन के महल में

जब दूध पिलाने का समय समाप्त हुआ तो मूसा की माँ ने मूसा को महल पहुंचा दिया। अब मूसा की परवरिश शहज़ादों की तरह महल में होने लगी। इस तरह मूसा के दिल से बादशाहों और धन वालों का रोब का दबदबा निकल गया। मूसा अपनी आँखों से देख रहे थे कि वह बादशाह और उनका परिवार किस तरह आराम व राहत से रहते हैं। उनके नौकर–चाकर भी आराम से रह रहे हैं और बनी इस्राइल उनके आराम के ख़ातिर तकलीफें और कष्ट उठा रहे हैं। उनके आराम की खातिर दिन भर भूखे प्यासे गर्मी और धूप में काम करते हैं और इसके बदले उनको केवल इतनी मजदूरी मिलती थी जो दिन भर के लिए काफी होती थी। मूसा (अ०) बनी इस्राइल का कष्ट उनका परिश्रम देखकर बेचैनी और दुख महसूस करते थे। उनकी बेबसी और उनके परिश्रम को देखकर अफसोस करते और उनको गुस्सा आता था लेकिन यह सब खामोशी से बर्दाश्त करते थे।

मूसा (अ०) सोचते थे कि आख़िर बनी इस्राइल का कुसूर और पाप क्या है ? क्या उनका क़िबती न होना पाप है ? क़िबती न होना तो कोई पाप नहीं है। यह तो फ़िरऔन की धांधली और जुल्म है। वह नबियों की औलाद थे इसीलिए जुल्म व ज़ियादती और अत्याचार बर्दाश्त नहीं कर सकते थे।

एक क़िबती की मौत

जब मूसा (अ०) जवान और बलवान हुए तो अल्लाह ने उनको हिकमत और दानाई (बुद्धि और समझ) दी मूसा (अ०) जुल्म व अत्याचार को पसंद नहीं करते थे। कमज़ोर और मज़लूमों से महब्बत करते थे उनकी मदद करते थे जैसे सभी नबी करते हैं। एक दिन फ़िरऔन के शहर आये और देखा कि लोग खेल–कूद में व्यस्त हैं। वहाँ उन्होंने देखा कि दो आदमी आपस में लड़ रहे हैं। उनमें से एक इस्राइली और दूसरा उनका दुश्मन किबती है। इस्राइली ने मूसा को देखकर अपनी सहायता के लिए पुकारा और किबती की ज़ियादती की उनसे शिकायत करने लगा मूसा (अ०) को बहुत गुस्सा आया और उसको एक घूंसा मारा और वह मर गया। इस पर मूसा (अ०) को बहुत अफसोस हुआ और बड़े शर्मिन्दा हुए और कहने लगे कि वह शैतानी काम था। अल्लाह से तौबा की और कहा कि "यह शैतानी काम था। शैतान खुला और गुमराह दुश्मन है।" अल्लाह ने मूसा की तौबा कुकूल की इसलिये कि उन्होंने जानकर उसको कत्ल के इरादे से घूंसा नहीं मारा था यह अलग बात है कि उसका समय ही आ गया था और अल्लाह को यही मंजूर था। इसीलिए घूंसा उसकी मौत का कारण था।

मूसा (अ०) की दुआ अल्लाह ने कबूल की तो वह बेहद खुश हुए और अल्लाह की तारीफ और बड़ाई बयान करते हुए कहा कि मैं अब किसी पाप का साथ (सहायता) नहीं दूंगा।

शहर में रात गुज़ारी। हर समय डर था फ़िरऔन की पुलिस का जो बहुत चतुर कव्वों की तरह देखने वाली और चींटी की तरह सूंघने वाली थी। किस समय वह आ जाये और उनको पकड़ कर ज़ालिम बादशाह के सामने खड़ा कर दे।

पुलिस ने एक किबती जो फ़िरऔन के सेवकों में था मुर्दा पाया तो क़ातिल का पता लगाने की भरपूर कोशिश की लेकिन उसमें वह सफल नहीं हुए और कातिल को कोई सुराग नहीं मिला। कातिल का पता बताने वाला कोई नहीं था कातिल का पता केवल मुसा (अ०) जानते थे या वह इस्राइली जिसके कारण किबती मरा। सुबह हुई तो किबती की मौत का पूरा शहर में चर्चा था लेकिन कोई क़ातिल का नाम नहीं जानता था। कातिल के पता न चलने पर फिरऔन को बहुत गुस्सा आया और क़ातिल का पता लगाने के सख़्त आदेश दिये।

राज़ खुलता है

दूसरे दिन मूसा (अ०) बाहर निकले तो फिर किबती और इस्राइली को आपस में लड़ते देखा। इनमें एक तो वही इस्राइली था जिसकी मूसा (अ) ने मदद की थी। इस्राइली ने हज़रत मूसा को देखा तो फिर अपनी सहायता के लिए उनको पुकारा। हज़रत मूसा ने उससे कहा कि तू बड़ा फसादी है। लोगों से बराबर लड़ता–झगड़ता है और अपनी सहायता के लिए पुकारता है। क्या मैं हर बार तेरी मदद करूंगा। तेरा तो अब यही काम रह गया है।

हज़रत मूसा (अ०) आगे बढ़े कि किबती को समझायें–बुझायें और मामले को रफ़ा–दफा कर दें।

इस्राइली ने हज़रत मूसा (अ०) का गुस्सा देखा और अपनी तरफ आते देखा तो समझ बैठा कि कहीं आज मूसा मुझे मारें और मैं मर जाऊं जैसे किबती को मारा था और वह मर गया था। वह बोल पड़ा कि "ऐ मूसा तुम मुझे मार डालना चाहते हो जैसे कल तुमने एक किबती को मार डाला था। क्या तुम ज़ालिम और बलवान बनकर अपना जीवन बिताना चाहते हो। तुम मुझे माफ करो, मुझे तुम्हारी सहायता की ज़रूरत नहीं तुम न्याय नहीं कर सकते।" उस समय किबती ने समझ लिया कि कल किबती के मार डालने वाले मूसा थे। वह दौड़ता हुआ गया और पुलिस को इसकी सूचना दी कि किबती का क़ातिल मूसा है यह खबर फ़िरऔन को भी गई। फ़िरऔन यह जानकर कि मूसा क़ातिल है तो गुस्से से पागल हो गया और कहने लगा कि यह वही लड़का जिसने मेरे महल में रहकर परवरिश पाई और हमारे साथ रहा और उसी ने यह जुल्म ढाया। लेकिन अल्लाह ने हज़रत मूसा (अ०) को फिरऔन और उसकी पुलिस की पकड़ से दूर रखने का इरादा कर लिया।

हज़रत मूसा (अ०) ने किबती को जानकर नहीं मारा था। उसका समय आ गया था वह मर गया। लेकिन फ़िरऔन और उसकी पुलिस यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थी और उनको कोई सफाई कुबूल नहीं थी।

अल्लाह ने यह फ़ैसला फ़रमा दिया था कि फिरऔन और उसके मुल्क का ज़वाल मूसा के ज़रिये ही हो। बनी इस्राइल की फ़िरऔन और उसके अत्याचार का अंत मूसा के ज़रिये हो। अल्लाह ने बनी इस्राइली को बंदों की पूजा से निकाल कर अल्लाह की इबादत की तरफ जाने का कार्य मूसा को सौंपा। मूसा के क़ातिल होने की ख़बर पाकर फिरऔन और उसके मंत्रिगण व परामर्शदाता परामर्श करने लगे मूसा को पकड़ने और उनको क़त्ल करने को। उस बैठक में एक व्यक्ति जो यह सब बातें सुन रहा था और उनकी पूरी योजना का जानकार था तथा मूसा को जानता और पहचानता था। वहां से उठा और सीधे मूसा के पास आया और उनकी पूरी बातों से जानकारी कराई और कहा कि मेरा मश्वरा है कि आप अभी इस देश को छोड़ दें। इस तरह आप फिरऔन की योजना से सुरक्षित हो जाएंगे।

हज़रत मूसा (अ०) ने उसकी बात मान ली और एहतियात के साथ शहर से निकल पड़े और कहते थे "ऐ मौला मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात (छुड़ा) दे।"

(क्रमशः)

क्यों बीमार है आपका कम्प्यूटर?

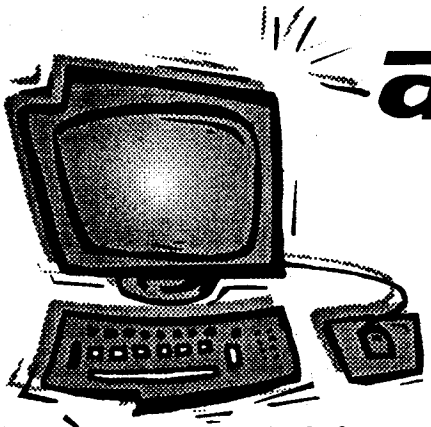

– शाहजहां अख़्तर

केचुआ और वाइरस किसी भी प्रकार के हों उन्हें गम्भीरता से लेना चाहिये क्योंकि यह कई समस्याएं खड़ी कर सकते हैं। जैसे आपके कम्प्यूटर में अहम फ़ाइलें बन्द या कम्प्यूटर के प्रबन्धन में प्रवेश करके उसे बन्द कर सकते हैं। उन्हें साधारण दुश्मन समझना नादानी है।

कम्प्यूटर की दुन्या में बसने वाले लोग वाइरस और केचुओं से परिचित हैं। परन्तु बहुत ऐसे भी हैं जो दोनों के बीच अन्तर नहीं जानते। ऐसे लोगों के लिए दोनों की परिभाषा यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

वाइरस ऐसा बदमाश प्रोग्राम है जो संयुक्त (SHARED) कम्प्यूटर डिस्क और कम्प्यूटर नेटवर्क के द्वारा विभाजन की लगातार प्रक्रिया से गुज़रते हुए फैलता चला जाता है। यह आमतौर पर गुप्त रूप से आपके कम्प्यूटर पर छापा मारता है या प्रभावित डिस्क या इस प्रभावित प्रोग्राम के द्वारा आता है जो आप इंटरनेट से डाऊन लोड करते हैं। कुछ वायरस ख़ाली खूली धमकी होते हैं लेकिन कुछ आपके बार्डर डिस्क से सारा डेटा उड़ाने की ताक़त रखते हैं।

"केचुआ" ऐसा बदमाश प्रोग्राम है जो इन्तिहाई तेज़ी से तक़सीम दर तक़सीम के अमल से गुज़रता है जिसके दौरान आपके कम्प्यूटर का सारा प्रबन्धन बैठ जाता है और वह बन्द हो जाता है। यह कम्प्यूटर के यंत्रों को भी हानि पहुंचाता है और साधारणतः लतीफों के किसी प्रोग्राम या किसी साफ़्टवेयर के रूप में कम्प्यूटर पर हमला करता है।

इसका अर्थ है कि केचुआ वाइरस की ऐसी क़िस्म है जो कम्प्यूटर डिस्क और मेमोरी के अतिरिक्त नेटवर्क और इंटरनेट के ज़रिए भी कम्प्यूटर पर हमला करता है और फैलता चला जाता है। केचुए फैलते हुए प्रायः हानि पहुंचाते हैं और उनके इनपुट्स (INPUTS) भी हानिकारक हो सकते हैं।

केचुए इंटरनेट में वर्ष 1980 के दशक से मौजूद हैं। सबसे पहला केचुआ कार्नीयल (CORNIAL) इन्टरनेट केचुआ या मोर्स (MORS) केचुआ था जिसे कालेज के एक नवजवान विद्यार्थी राबर्ट मोर्स ने मालूम किया। उस समय से वाइरस या केंचुआ बनाने वाले मुजरिम कई प्रकार के केचुए बना चुके हैं लेकिन उन्होंने वाइरस की तरह बड़े पैमाने पर तबाही नहीं फैलाई। परन्तु अब मामला मुख़्तलिफ़ है।

घरों में कम्प्यूटर प्रयोग करने वालों ने नये कोड रीड (CODEREAD) का नाम ज़रुर सुना होगा। यह वह दुष्ट प्रोग्राम या केचुआ है जिसने हाल ही में इंटरनेट पर तबाही मचाई है लेकिन दिलचस्प बात यह है कि कोडरीड घरेलू कम्प्यूटर पर हमला नहीं करता। आपके ज़ेहन में यक़ीनन यह सवाल पैदा होगा कि फिर यह क्या चीज़ है?

कोडरीड और इसकी क़िस्में वास्तव में विन्डोज़ (WINDOWS) के उन नमूनों पर हमला नहीं करतीं जो घरेलू कम्प्यूटर में प्रयोग होते हैं बल्कि उन ताक़तवर विन्डोज़ कम्प्यूटर को निशाना बनाती हैं जो कारोबारी दुन्या में वेबसाईट बनाने के काम आते हैं। पिछले साल दिसम्बर में एक और बदमाश निमडा (NIMDA) नामी कम्प्यूटर केचुए ने जन्म लिया जिसने सारे संसार के नेटवर्क में उधम मचाया। वाइरस के विशेषज्ञ लोगों पर ज़ोर दे रहे हैं कि वह इस प्रकार के केचुओं के तोड़ के लिए वाइरस और केचुए तोड़ साफ़्टवेयर अपने कम्प्यूटर में इन्सटाल करें।

निमडा (NIMDA) तिजारती और घरेलू कम्प्यूटरों को अपना निशाना बनाता है और कम्प्यूटर में ई–मेल के साथ दाख़िल होता है। उसने वेबसाईटों पर भी तबाही मचाई है।

केचुओं की अधिक संख्या 'ई' मेल के साथ कम्प्यूटर में दाख़िल होती है लेकिन इसे जगाने के लिए आवश्यक है कि प्राप्त करता उसे छेड़े। इस प्रकार के सम्मिलित केचुए और वाइरस (जीवाणु) जैसे लोबग (LOWBUG) और एनाकार नीकुवा (ANNACORNICOVA) यह संदेश देते हैं कि उन्हें खोलने से प्राप्त करता को अशलील सामग्री मिलेगी। यूं अक्सर प्राप्त करता सोचे समझे बिना बदमाश प्रोग्राम खोल लेते हैं फिर हानि होने पर सिर पीट लेते है।

कोडरीड ने अलबत्ता उन घरेलू कम्प्यूटरों को हानि पहुँचाई है जिनमें तेज़ रफ़्तार डीसी एल मोडम (DCL

MODEM) लगे होते हैं। क्योंकि कोडरीडर ग़लती से उन्हें तिजारती सर्वर (Server) समझ लेता है। अधिकांश घरेलू कम्प्यूटर इस बड़ी बीमारी से सुरक्षित ही हैं। तब भी हम विशेषज्ञों का कहना है कि जल्द ही घरेलू कम्प्यूटर भी केचुओं के प्रहार में आ जाएंगे क्योंकि भविष्य के केचुए वेब, फ़ाइल, ट्राँस्फ़र और इंसटेंट संदेश भेजने द्वारा घरेलू कम्प्यूटर पर हमला करेंगें। विशेषज्ञों को यक़ीन है कि ऐसी कई राहें हैं जिन पर कपटी हेकर (HAKER) चलकर दूसरों को हानि पहुंचा सकते हैं।

माइक्रोसाफ़्ट और ऐपुल ने जो अपने अपने सिस्टम हाल ही में जारी किये हैं। उनमें कई सुरक्षा पहलू हैं लेकिन एक बात निश्चित है कि जल्द ही हैंकरों के बीच यह दौड़ शुरु हो जाएगी कि देखते हैं कि कौन नित नये तरीक़ों से विन्डोज़ एक्सपी और एम.एस.ओ. (WINDOW XP AND MSO) का अधिक से अधिक शोषण करता है।

इन्टरनेट पर वाइरस के फैलने की रफ़्तार में तेज़ी से वृद्धि हो रही है क्योंकि दिन प्रतिदिन इन्टरनेट के प्रभाव की मान्यता बढ़ रही है। एक रिपोर्ट के अनुसार कोडरीड ने केवल बारह घंटों में तीन लाख कम्प्यूटरों को प्रभावित किया। अब एक दुष्ट साफ़्टवेअर केवल एक दिन में लगभग पाँच लाख कम्प्यूटरों पर हमला करता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि जो लोग इन्टरनेट अधिक प्रयोग करते हैं वह वाइरस के हमलों का असल निशाना हैं क्योंकि अधिकांश लोग हमला रोकने के लिए उचित उपाय नहीं करते। यदि कम्प्यूटर प्रयोग करने वाले अपने ऐन्टी वाइरस प्रोग्राम को नियमपूर्वक अपडेट करें और कम्प्यूटर की सुरक्षा से संबंधित तमाम साफ़्टवेअर को खोले रखें तो यक़ीनी है कि कम्प्यूटर की दुन्या में वाइरसों और केचुओं का जन्म सुस्त पड़ जाएगा। लेकिन अकसर लोग ऐसा नहीं करते।

कम्प्यूटर से संबद्ध वर्तमान ख़तरों में कोडरीड अकेला नहीं बल्कि सर्काम इससे अधिक ख़तरनाक है क्योंकि वह मेस बदलने की क्षमता रखता है। यही वजह है कि सर्काम विभिन्न वाइरसों जैसे लोबग (LOWBUG) एनाकरनीकोवा (ANNA-CORNICOVA) और नेकेड वाईफ़ (NECKED WIFE) से अधिक तबाहकुन है क्योंकि यह वाइरस अन्ततः पहचान लिये जाते हैं। यह वाइरस जब अपने शिकारों की ई–मेल एडरेस बुक में पहुंचते हैं तो एक ही संदेश या विषय रखते हैं।

परन्तु सर्काम की ई–मेल का पहचानना बहुत कठिन होता है। विषय की लाईनें बदल जाती हैं। क्योंकि वाइरस प्रभावित कम्प्यूटर माई डाकूमेन्ट फ़ोल्डर से रैंडम में फाइल चुनता है। फिर फ़ाइल के नाम से मिलते–जुलते विषय के शीर्षक प्रयोग करता है।

सर्काम अपने संदेश में केवल झूठ का पुलिन्दा ही बान्धता है। जैसे "क्या हाल है, कैसे हो ? मैंने तुमसे सलाह लेने के लिए एक फ़ाइल भेजवाई है। इसे देख लो। अच्छा ख़ुदा हाफ़िज़।"

कुछ वाइरस अधिक दग़ाबाज़ होते हैं। जैसे एक वाइरस W32/Allgro-A जो Allgro (a) mm या W32/Atirus(a) m ई–मेल के द्वारा आता है और ऐलान करता है कि मैं ऐन्टी वाइरस प्रोग्राम हूँ। यहाँ तक कि यदि शुरू में कम्प्यूटर में साधारण वाइरस हों तो उन्हें भी साफ़ कर देता है लेकिन बाद में अपनी कार्यवाही दिखाता है और प्रायः बार्डर डिस्क से सब कुछ साफ़ हो जाता है।

विशेषज्ञों का कहना है कि अभी सबसे बुरा समय आना बाक़ी है। उनका विचार है कि भविष्य में ऐसे वाइरस जन्म ले सकते हैं जो इस अंदाज़ में प्रोग्राम्ड होंगे कि अपने आपको स्वतः तब्दील कर लें अर्थात इन्हें गुप्त रखने के लिए इंसानी हैकरों (HACKERS) की सेवा की ज़रुरत नहीं पड़ेगी।

अगर ऐसा हुआ तो उन्हें पहचानना बहुत कठिन होगा और वह ऐन्टी वाइरस साफ़्टवेअर से मारे नहीं जा सकेंगें जो वाइरस को उसके मुख्य हस्ताक्षर के द्वारा पहचानते हैं। इस प्रकार के खुद इन्क़लाबी वाइरस बनावटी ज़िहानत पर अनुसंधान (Research) के सिलसिले में अमरीकी यूनिवर्सिटियों में पैदा किये जा चुके हैं परन्तु अभी जंगल की आग की तरह कम्प्यूटर की आम दुन्या में नहीं फैले।

एक विशिष्ट वाइरस W32/Jerryum (जो Worm Jerry MSG. A या W32 Annoying Worm भी कहलाता है) एम एस एन (MSN) मेसेंजर द्वारा फैलता है और एक इंसान का स्वांग भरते हुए संदेश देता है "क्या हाल हैं ? क्या मेरी ताज़ः तस्वीर चाहिये ? मैंने कल ही उतारी है।

यदि संदेश प्राप्त करने वाला "हाँ" या "ओ के" कहे तो वाइरस इस संदेश के साथ एक फ़ाइल भेजता है। "ठीक है यह लो, या मुझे आशा है कि तुम्हें पसन्द आएगी वह फ़ाइल जल्द ही कम्प्यूटर पर हमला कर देती है।

विशेषज्ञों का कहना है कि जिन लोगों के पास घर या अपने छोटे से दफ़्तर में कम्प्यूटर है, वह भी बड़ी कार्पोरेशनों की तरह अपने कम्प्यूटर में वाइरसों आदि से सुरक्षित रखने वाला फायर वाल (Fire Wall) और हमला करने वाले वाइरस को पहचानने वाले साफ़्टवेअर भर लें उनका यह भी कहना है कि कम्प्यूटर प्रयोग करने वाले आपरेटिंग सिस्टम बनाने वालों से भी यह मालूम करने के लिए नियमित सम्पर्क रखें कि क्या वाइरसों के तोड़ के

शेष पृष्ठ 24 पर

वह हैं नबियों के सरदार

☆ ☆

ईश्वर के संदेश को दुन्या वालों तक पहुंचाया
मार्ग से भटके हुए लोगों को सीधा मार्ग दिखाया
मूर्ति पूजक पथ भ्रष्टों को ईश्वर भक्त बनाया
सत्य पाठ अल्लाह का देकर गुमराही से छुड़ाया
महा प्रभु की महिमा से यह सुखी हुआ संसार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

फूल से भी वह हो गए कोमल, ह्रदय थे जिनके पत्थर
जो प्रसिद्ध थे पथ भ्रष्ट, वह बने विश्व के रहबर
हो गये एक ईश्वर के पुजारी, भूल मूर्ति का चक्कर
बर्बर, अत्याचारी थे जो बने दया के सागर
बना फ़िरिश्ता पापी मानव, छोड़ के कटु व्यवहार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

फैलाई सारी दुन्या में प्रेम प्यार की रीत
एक–दूजे के शत्रु थे जो वह बने परस्पर मीत
कल्मे की वीणा पर गूंजा फिर तो मनोहर गीत
दानवता की हार हुई और मानवता की जीत
हत्यारों के अस्त्र–शस्त्र की कुन्द हो गई धार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

अंत हुआ हर जुल्मो–सितम का रहे न अत्याचारी
अब न कहीं था कोई शराबी और न कोई जुआरी
भोग–विलास के रहे न रसिया और न रहे व्यभिचारी
काफ़िर, मुश्रिक रहा न कोई और न मूर्ति पुजारी
पाप से हो गई घृणा सबको पुण्य से हो गया प्यार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

चकित रह गई देख के धरती दृश्य से प्यारा–प्यारा
जो मानव था पथ भ्रष्ट वह बना गगन का तारा
सत्य कर्म का सागर उमड़ा थम गई पाप की धारा
विश्व धर्म की महा क्रान्ति से चमक उठा जग सारा
धन्य हो गई समस्त सृष्टि सब का हुआ उद्धार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

नव प्रकाश से चमक उठा मानव का घृणित जीवन
दूर हुआ पापी अंधियारा ज़ले दीप घर आंगन
ईश्वर का विश्वास जगा तो चमक उठे मन–दर्पण
पुण्य कर्म के फूल खिले तो महका धर्म का मधुबन
बीत गया पतझड़ का मौसम, चली बसन्त बयार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

☆ ☆

आज भी यदि इस्लाम की शिक्षा को हम सब अपनाएं
सबसे बड़ा ईश्वर को मानें ईश्वर के गुण गाएं
ईश्वर की आज्ञा पालन को जीवन लक्ष्य बनाएं
जितने भी हैं कर्म बुरे उनसे हम बचें बचाएं
कुरआनी संविधान हो यदि जीवन का आधार
'क़मर' फिर स्वर्ग हो यह संसार
वह है नबियों के सरदार,
जगत नौका के खेवन–हार
प्रेषक उनका सृजनहार

– कमर रामनगरी

मुईद अशरफ़ नदवी

☆ न्यूयार्क टाईम्स सर्विस के अनुसार अमरीका और इस्राइल की फ़िलिस्तीन विरोधी पालीसियां यहूदियों में फ़िलिस्तीनियों से सहानभूति प्रवृत्तियाँ बढ़ा रहीं हैं। यहाँ तक कि इस्राइली फ़ौजों के हथियार भण्डार से आधुनिक हथियार प्राप्त करके उत्पीड़ित फ़िलिस्तीनियों तक पहुंचने लगे हैं। इस संबंध में पुलिस का कहना है कि उसने पांच बसने वाले यहूदियों को गिरिफ़्तार किया है जिनमें से चार फ़ौजी सिपाही और एक रिज़र्व आर्मी का अधिकारी है। इनके बारे में शक है कि उन्होंने हज़ारों कारतूस और दूसरे फ़ौजी सामान चुरा कर बेचा है जिसे फ़िलिस्तीनियों ने यहूदियों के विरुद्व प्रयोग किया।

पुलिस के बयान के अनुसार गिरिफ़्तार किये गये लोगों ने स्वीकार कर लिया है कि उन्होंने फ़ौजी हथियार भण्डार से लगभग 40 हज़ार राइफल चोरी किये हैं जिन्हें जबरुन क्षेत्र में फ़िलिस्तीनियों को बेचा है।

☆ न्यूयार्क स्कूल आफ़ मेडिसिन के माहिर डाक्टर माईकिल ने बताया कि 11 सितम्बर के बाद अमरीका में पैदाइश में ज़बरदस्त वृद्धि की जो आशाएं की जा रही थीं वह ग़लत साबित हुई हैं। वर्ल्ड ट्रेड सेंटर की तबाही के बाद दूसरे महा युद्ध की तरह पैदाइश में ज़बर्दस्त वृद्धि की भविष्यवाणी की जा रही थी तथापि डा० माईकिल ने बताया कि 11 सितम्बर के बाद हुई पैदाइश में किसी असाधारण वृद्धि के कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुए हैं। बल्कि अमरीकियों में ज़िन्दगी के अस्थायित्व का आभास पैदा हुआ है। एक–दूसरे डाक्टर का कहना है कि 11 सितम्बर की घटना के बाद अमरीकियों में दोहरी चेतना पैदा हुई हैं। एक तरफ़ तो लोगों में बच्चों के प्राप्ति की इच्छा है तो दूसरी ओर एक प्रश्न भी पैदा हुआ कि इस असुरक्षित संसार में एक और बच्चे को क्यों डाला जाए ?

☆ सऊदी अरब में राहर रियाज़ से प्रकाशित होने वाले अरबी साप्ताहिक "दअ़वा" के अनुसार अमरीका के एक हस्पताल में एक रोज़ दो बच्चों की पैदाईश हुई। एक औरत से एक लड़का दूसरी से एक लड़की हुई। जिस रात इन दोनों बच्चों का जन्म हुआ वहाँ नियंत्रक डाक्टर मौजूद नहीं थी जिसके द्वारा बच्चों की कलाई पर बच्चों की मां के नाम की पट्टी बान्धी जाती है। नतीजा यह हुआ कि दोनों बच्चे बदल गए। अब डाक्टरों के लिए पहचान कठिन हो गई कि किस औरत का कौन सा बच्चा है? यद्यपि उनमें से एक औरत की लड़की थी और दूसरे का लड़का। इस अस्पताल के डाक्टरों में एक मुसलमान मिस्री डाक्टर भी था जिस की अपने स्टाफ़ अमरीकी डाक्टरों से गहरी मित्रता थी। सब परेशान थे कि इसका हल कैसे निकाला जाए। अमरीकी ग़ैर मुस्लिम डाक्टर ने मिस्री मुसलमान डाक्टर से कहा कि तुम तो दावा करते हो कि क़ुर्आन में हर चीज़ का हल और व्यवस्था मौजूद है अब तुम ही क़ुर्आन की रौशनी में बताओ कि कौन बच्चा किस औरत का है चुनानचः मिस्री डाक्टर ने इस समस्या के समाधान के लिए मिस्र का सफ़र किया और जामिअ़–ए–अज़हर के बाज़ उलमा से रजूअ़ (प्रत्यागमन) किया और उनको इसकी पूरी तफ़सील बताई। जामिअ़–ए–अज़हर के एक आलिम ने चिकित्सा सम्बन्धी मामिलों में अपनी अज्ञानता बताई अलबत्ता क़ुर्आन की एक आयत पढ़ी (अनुवाद) "मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है" और कहा इस पर ग़ौर करो अल्लाह तआ़ला ने चाहा तो कोई हल ज़रूर निकल आएगा। इसके बाद वह मिस्री डाक्टर अमरीका आया और अपने अमरीकी डाक्टर दोस्त से कहा अब इसका हल क़ुर्आन की रौशनी में ही निकलेगा। चुनानचः उसने दोनों औरतों के दूध टेस्ट के लिए प्रयोगशाला में भेजा और जांच और विश्लेषण के बाद मालूम हुआ कि लड़के की मां के पिस्तान में लड़की की मां के मुक़ाबले में दोगुना दूध पाया गया। विटामिन (VITAMIN) की मात्रा भी लड़की की माँ के मुक़ाबले में दोगुनी थी। फिर मिस्री डाक्टर ने अमरीकन डाक्टर के सामने क़ुर्आन शरीफ़ की आयत पढ़ी (मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है) जिस के द्वारा उसने कठिन समस्या का हल तलाश किया। इसके बाद वह अमरीकी डाक्टर तुरंत मुसलमान हो गया और अब वह क़ुर्आन के अध्यन में व्यस्त है। □□□